भोलानाथ तिवारी

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक • प्रभात प्रकाशन
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
संस्करण • १९९३
© • राजीव तिवारी
मूल्य • एक सौ रुपए
मुद्रक • गोयल ऑफसैट वर्क्स
दिल्ली

AMIR KHUSRO by Dr. Bhola Nath Tiwari Rs. 100.00
Published by Prabhat Prakashan, Chawri Bazar, Delhi-6
ISBN 81-7315-030-3

दो शब्द

व्यावहारिक भाषाविज्ञान की शाखा कोशविज्ञान के प्रसंग मे सर्वप्रथम मेरा ध्यान अमीर खुसरो और उनके नाम से प्रसिद्ध खालिकबारी की ओर गया तथा इस बात मे विश्वास रखते हुए भी कि खुसरो के नाम से जो कुछ भी मिलता है, उसमें उनका अपना कितना है, कहना कठिन है, मैं उनकी रचनाओं का संग्रह करता गया। प्रस्तुत संकलन के रूप में उसे बड़े संकोच के साथ मैं हिंदी जगत् के समक्ष रख रहा हूँ; क्योंकि मैं जो कुछ और जिस रूप में करना चाहता था, अपेक्षित सामग्री और पुरानी पांडुलिपियों के किसी भी प्रकार न मिल पाने के कारण नहीं कर सका। अंत मे यह बात मन में आई कि जो कुछ हो सका है उसे प्रकाशित कर देना ही ठीक है। पाठक और भावी लेखक इसमें शायद संशोधन-परिवर्तन-परिवर्धन कर सकें। यों उनकी हिंदी रचनाओं का अभी तक इतना बड़ा संग्रह कोई नहीं आया है।

खुसरो की भाषा पर भी मैं काफ़ी विस्तार से विचार करना चाहता था, किन्तु उनके नाम से जो कुछ भी मिला है, उसमे उनकी भाषा का रूप निश्चित रूप से अक्षुण्ण नहीं है, अतः ऐसा करना निरर्थक जान पड़ा। इसीलिए अत्यन्त संक्षेप में भूमिका में उनकी भाषा के सम्बन्ध में कुछ थोड़ी बातें कहकर ही सतोष करना पड़ा है।

खालिकबारी की हिंदी, फ़ारसी, अरबी तथा तुर्की की प्रविष्टियों पर ही अर्थ की दृष्टि से विशेष ध्यान दिया गया है, प्रविष्टियों के जोड़नेवाले फ़ारसी या हिंदी आदि के क्रिया अथवा अन्य रूपों आदि पर नहीं। वे वस्तुतः छंदपूर्ति के लिए ही हैं। हाँ कहीं-कहीं उनके भावार्थ अवश्य दे दिए गए है। काफ़ी शब्दों के व्युत्पत्ति-संकेत भी देने का यत्न किया गया है।

मित्रवर डॉ० सत्यदेव चौधरी का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के लेखन में मेरी कई प्रकार से सहायता की है। मेरे प्रिय शिष्य सुभाष रुपेला ने खुसरो के कुछ गीतों को मेरे लिए एकत्र किया है। इसके लिए उन्हें मेरा धन्यवाद।

प्रूफ की कुछ ग़लतियाँ रह गई हैं। पाठक क्षमा करेंगे।

—भोलानाथ तिवारी

क्रम

प्रथम खण्ड

द्वितीय खण्ड

(संग्रह)

संक्षेप-सूची

अं०	=	अँग्रेजी
अर०	=	अरबी
तु०	=	तुर्की
दे०	=	देखिए
फ़ा०	=	फ़ारसी
सं०	=	संस्कृत
हिं०	=	हिंदी

प्रथम खण्ड

(क) जीवन-परिचय

वंश

अमीर खुसरो के पूर्वज हज़ारा तुर्क थे, और उनके मूल क़बीले का नाम 'लाचीन' या 'हज़ारये लाचीन' था। 'हज़ारा' मूलतः कोई वंश था। तुर्की शब्द 'लाचीन' का अर्थ है 'गुलाम'। इससे अनुमान लगता है कि हज़ारा वंश की किसी गुलाम शाखा से इनका सम्बन्ध था। इनके क़बीले का मूल स्थान तुर्किस्तान का 'कश' नामक स्थान था, जो अब 'कुबत्तुल खज़रा' कहलाता है। कुछ लोग इसे मावरा 'मुर्ग़' के पास का एक दूसरा स्थान भी मानते हैं। 'कश' से इनके पूर्वज बलख़ आ गये थे। वहीं से इनके पिता भारत आए थे।

जन्म-स्थान

अमीर खुसरो का जन्म-स्थान काफी विवादास्पद है। भारत में सबसे अधिक प्रसिद्ध यह है कि वे उत्तर प्रदेश के एटा ज़िले के 'पटियाली' नाम के स्थान पर पैदा हुए थे। कुछ लोगों ने ग़लती से 'पटियाली' को 'पटियाला' भी कर दिया है, यद्यपि पटियाला से उनका कोई संबंध नहीं था, हाँ, पटियाली से अवश्य था। पटियाली के दूसरे नाम मोमिनपुर तथा मोमिनाबाद भी मिलते हैं। पटियाली में इनके जन्म की बात हुमायूँ के काल के हामिद बिन फ़ज़लुल्लाह जमाली ने अपने 'तज़किरा सैरुल आरफ़ीन' में सबसे पहले कही। उसी के आधार पर बाद में लोग उनका जन्म पटियाली होने की बात लिखते और करते रहे। हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेज़ी की प्रायः सभी किताबों में उनका जन्म पटियाली में ही माना गया है। ए० जी० आर्बेरी की प्रसिद्ध पुस्तक 'क्लासिकल पर्शियन लिटरेचर' तथा 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' जैसे प्रामाणिक ग्रंथों में भी यही मान्यता है।

कुछ लोगों ने अमीर खुसरो का जन्म भारत के बाहर भी होने की बात कही है। उदाहरण के लिए मुहम्मद शफ़ी मोअल्लिफ़ 'मयख़ाना' ने 'मख़ज़न अख़बार' के हवाले से अफ़ग़ानिस्तान में काबुल से पाँच मील दूर 'ग़ोरबंद' नाम के क़स्बे में

इनका जन्म माना है। उनका कहना है कि अमीर खुसरो के पिता अपने भाइयों से लड़कर काबुल चले गये थे, किंतु फिर जब चगेज़ खाँ उधर आया तो वे भागकर फिर भारत आ गये। ऐसे ही कुछ लोगो ने बुख़ारा में भी उनके पैदा होने की बात की है। दाग़िस्तानी ने लिखा है कि इनका जन्म भारत के बाहर हुआ और ये अपने माँ-बाप के साथ बलख़ से हिन्दुस्तान आए। एक मत यह भी है कि इनकी माँ जब बलख से आयीं तो वे गर्भवती थीं तथा इनका जन्म भारत में ही हुआ।

इस सदी के सातवें दशक में १९७६ में पाकिस्तानी लेखक मुमताज़ हुसैन की अमीर खुसरो पर एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने विस्तार से अमीर खुसरो की जन्मभूमि पर विचार करते हुए, उपर्युक्त सभी मतों का खंडन किया तथा यह सिद्ध किया कि खुसरो का जन्म दिल्ली मे हुआ। इसीलिए उन्होने अपनी पुस्तक का नाम रखा 'अमीर खुसरो देहलवी : हयात और शायरी'। छः वर्ष बाद १९८२ मे यह पुस्तक भारत मे भी छपी।

वस्तुतः लगता है कि खुसरो दिल्ली मे ही पैदा हुए थे, पटियाली या काबुल आदि मे नहीं। इसके पक्ष मे काफी बातें कही जा सकती हैं। यों उपर्युक्त मतों मे, पटियाली या दिल्ली में जन्म-स्थान ही अधिकांश विद्वानों को मान्य रहे हैं। इन दोनों के भी पक्ष-विपक्ष मे विचार करने पर संभावना यही लगती है कि वे दिल्ली में ही पैदा हुए थे। इस प्रसंग मे निम्नांकित बाते देखी जा सकती हैं—

(१) इतिहास बतलाता है कि १२५३ में जब अमीर खुसरो पैदा हुए, पटियाली मे प्रायः जंगल था। वहाँ न तो बादशाही क़िला था, और न बस्ती। आस-पास के बागी राजपूतों को दबाने के लिए क़िला बाद में बना और तभी बस्ती भी बसी। ऐसी स्थिति में वहाँ अमीर खुसरो के पैदा होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(२) उस काल की प्रसिद्ध इतिहास-पुस्तक 'तबकात-ए-नासिरी' (मेहनाज सराज-लिखित) में खुसरो के विषय में काफ़ी कुछ है, किंतु इनके पटियाली मे जनमने की बात नहीं है।

(३) खुसरो अपने काल में अपनी फ़ारसी शायरी के लिए फ़ारस (ईरान) में भी प्रसिद्ध हो गए थे। वहाँ के प्रसिद्ध साहित्यिक इतिहासों में उनका नाम आता है, जिसमें उनकी पैदाइश दिल्ली लिखी गयी है। वहाँ के प्रसिद्ध कवियों में शैख़ सादी से लेकर अब्बास इकबाल तक सभी ने उन्हें 'खुसरो देहलवी' कहा है। उनके नाम के साथ 'देहलवी' का जोड़ा जाना, स्पष्ट ही इसी मान्यता पर आधारित है कि वे देहली में पैदा हुए थे।

(४) खुसरो के नाना दिल्ली में रहते थे तथा वे एक नवमुस्लिम (नये-नये बने मुसलमान) राजपूत थे जिनका नाम रावल अमादुलमुल्क था। उन्होंने धर्म तो इस्लाम अपनाया था, किंतु उनके घर के रीति-रिवाज पूरी तरह हिन्दुओं के ही थे, जिनमें प्रायः पहला बच्चा स्त्री के मायके में ही होता है। खुसरो के पिता

लाचीन क़बीले के थे। लाचीन लोगों में भी यह परंपरा थी। इस तरह अधिक संभव यही है कि वे अपनी माँ के सबसे बड़े बेटे होने के कारण अपने नाना के घर अर्थात् दिल्ली मे ही पैदा हुए थे।

(५) यह बात कई जगह आयी है कि पैदाइश के बाद अमीर ख़ुसरो के पिता उन्हें बुर्के में लपेटकर किसी सूफ़ी सत के पास ले गये तथा उन संत ने शिशु ख़ुसरो को देखकर कहा कि यह ख़ाकानी (ईरान के अत्यंत प्रसिद्ध कवि) से भी बड़ा होगा और क़यामत तक इसका नाम रहेगा। लोगों का अनुमान है कि ये सूफ़ी संत हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया थे, जो दिल्ली मे रहते थे। इस बात से भी उनकी पैदाइश दिल्ली में ही होने की बात सिद्ध होती है।

(६) प्राय: व्यक्ति का अपने जन्म-स्थान मे विशेष लगाव होता है। ख़ुसरो का इस तरह का लगाव दिल्ली से ख़ूब था। उनके साहित्य मे स्थान-स्थान पर इस बात के संकेत हैं। वे जब भी दिल्ली छोड़कर अयोध्या, पटियाली, लखनौती, मुल्तान या कहीं और गए, जल्द-से-जल्द लौट आये तथा जब भी बाहर रहे, दिल्ली उन्हें बार-बार याद आती रही। दिल्ली से उनका लगाव इतना ज्यादा था कि उन्होंने 'मसनवी क़ुरानुस्सादैन' नाम की एक मसनवी दिल्ली की विशेषताओ से विशेष रूप से संबद्ध लिखी, जिसे इसी कारण 'मसनवी दर सिफ़त-ए-देहली' भी कहते हैं। इसमें दिल्ली के लिए 'अदन की जन्नत', 'दिल की रानी', 'आँख का नशा', 'फ़िरदौस-ए-पाक', 'बाग-ए-अरम', 'जन्नत के हरियाली' तथा 'चाँद की कमंद' जैसी अभिव्यक्तियों का प्रयोग है। अपने जीवन के परवर्ती भाग में क़िला बन जाने के बाद उन्हें पटियाली भी जाना पड़ता था, किंतु यह जगह उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं थी। इसीलिए उन्होंने एक ओर जहाँ दिल्ली की ख़ूबियों को लेकर एक मसनवी लिखी तो दूसरी मसनवी 'शिकायतनामा मोमिनपुर पटियाली' लिखी जिसमें पटियाली की शिकायतें हैं। यों इसमें अफ़ग़ानों की ज्यादतियों का वर्णन है तथा इसमें भी उन्होने बार-बार दिल्ली को बड़ी ललक से याद किया है।

(७) उनके पिता का सबंध भी कभी पटियाली से नही रहा, अत: यदि वे अपने नाना के यहाँ नहीं भी पैदा हुए हों तो पटियाली में तो पैदा नहीं ही हुए थे। उनके पिता भी बाहर से आकर ही दिल्ली में बसे थे। प्रसिद्ध इतिहासकार दौलत शाह समरकदी ने अमीर ख़ुसरो के पिता को 'दिल्लीवाला' कहा है।

(८) ख़ुसरो के जो हिंदी छंद आज मिलते हैं, उनकी भाषा या तो दिल्ली की खड़ी बोली है या अवधी। दिल्ली में वे पैदा हुए, बड़े हुए, पढ़े-लिखे तथा रहे भी। इस तरह यहाँ की भाषा उनकी मातृभाषा है, अत: काफ़ी कुछ इसीमे लिखा है। इसके अतिरिक्त अवध में भी अयोध्या तथा लखनौती आदि मे वे रहे अत अवधी में भी लिखा। मगर पटियाली वे जाते तो रहे, किंतु वह जगह उन्हें न रुची, न वहाँ की बोली ही वे अपना सके। कहना न होगा कि पटियाली में ब्रज बोली जाती है।

इसीलिए उनकी रचनाओं में से कोई भी ब्रजभाषा में नहीं है।

(६) अमीर खुसरो पर पुस्तक लिखने वाले एक लेखक[1] ने यह भी लिखा है कि स्वयं अमीर खुसरो ने यह लिखा है कि दिल्ली उनका 'वतन-ए अस्ल' है, किंतु इस बात का संदर्भ उन्होंने नहीं दिया है कि खुसरो ने किस पुस्तक में और कहाँ यह बात कही है। संभव है कही उन्होंने ऐसा कहा हो। हालाँकि यदि कहीं स्वय खुसरो ने यह बात कही होती तो उस अंत:साक्ष्य के आधार पर बहुत पहले से उनकी पैदाइश भारत में भी लोग, दिल्ली में ही मानते होते, क्योंकि उनकी रचनाओ को लोग काफ़ी पहले से पढ़ते रहे हैं। यों यदि सचमुच ही उन्होंने ऐसा लिखा है तब तो दिल्ली में पैदा होने की बात संभावना न होकर एक सच्चाई मानी जा सकती है। दिल्ली में उनका जन्म-स्थान मानने वाले यह भी कहते रहे हैं कि खुसरो का पैतृक घर दिल्ली दरवाज़े के पास 'नमक सराय' में था।

जन्म-तिथि

विभिन्न पुस्तकों में खुसरो का जन्म १२५२, १२५३, १२५४ या १२५५ ई० दिया गया है। वस्तुत: उनका जन्म ६५२ हिज्री मे हुआ था जो ईसवी सन् में १२५३-५४ पड़ता है।

नाम

खुसरो का यथार्थ नाम 'खुसरो' न था। इनके पिता ने इनका नाम 'अबुल हसन' रखा था। 'खुसरो' नाम इनका तख़ल्लुस या उपनाम था। किन्तु आगे चलकर इनका यह उपनाम ही इतना प्रसिद्ध हुआ कि लोग इनका यथार्थ नाम भूल गये।

'अमीर खुसरो' मे 'अमीर' शब्द का भी अपना अलग इतिहास है। यह भी इनके नाम का मूल अंश नही है। जलालुद्दीन ख़िलजी ने इनकी कविता से प्रसन्न हो इन्हें 'अमीर' का ख़िताब दिया और तब से ये 'मलिक्कुशोअरा अमीर खुसरो' कहे जाने लगे।

माता-पिता और भाई

खुसरो की माँ एक ऐसे परिवार की थी जो मूलत: हिन्दू था तथा जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। इनकी मातृभाषा हिंदी थी। इनके नाना का नाम रावल एमादुलमुल्क था। ये बाद में नवाब एमादुलमुल्क के नाम से प्रसिद्ध हुए तथा बलबन के युद्धमंत्री बने। ये ही मुसलमान बने थे। यों मुसलमान बनने के बावजूद

१. के० के० खुल्लर . 'अमीर ख़ुसरो और हमारा मुश्तरका कल्चर', पृ० ८८।

इनके घर में सारे रस्मो-रिवाज हिंदुओं के थे। ये दिल्ली में ही रहते थे। खुसरो के पिता सैफ़ुद्दीन महमूद तुर्किस्तान के लाचीन क़बीले के एक सरदार थे। मुग़लों के अत्याचार से तंग आकर ये १३वीं सदी में भारत आये। भारत में आकर ये कहाँ बसे, इस संबंध में मतभेद है। कुछ लोग, जो खुसरो की जन्मभूमि पटियाली में मानते हैं, यह भी मानते हैं कि खुसरो के पिता भारत मे आकर पटियाली में बसे। किंतु यह बात बहुत तर्कसंगत नहीं लगती कि बीच में लाहौर, दिल्ली जैसे स्थानों को छोडकर पटियाली जा बसे जहाँ उस समय जंगल था तथा बस्ती भी नहीं थी। ऐसी स्थिति में यही बात ठीक लगती है कि वे दिल्ली में आकर बसे। (पीछे इस बात पर कुछ विस्तार से विचार किया जा चुका है।) ये एक वीर योद्धा थे तथा अल्तुतमश ने अपने दरबार में इन्हे ऊँचे पद पर नियुक्त किया था। इनका वार्षिक वेतन बारह सौ तनका (चाँदी का एक पुराना सिक्का) था।

कुछ लोगों के अनुसार ये कुल तीन भाई थे। सबसे बडे इज़्ज़ुदीन आलीशाह जो अरबी-फ़ारसी के विद्वान थे, दूसरे हिसामुद्दीन जो अपने पिता की तरह योद्धा थे और तीसरे अबुल हसन जो कवि थे तथा आगे चलकर जो 'अमीर खुसरो' नाम से प्रसिद्ध हुए। कुछ लोग खुसरो को छोटा न मानकर बीच का भाई भी मानते हैं तथा हिसामुद्दीन को छोटा भाई। अधिक प्रामाणिक मत यह है कि ये दो भाई ही थे तथा अमीर खुसरो ही बड़े थे। इनके भाई जिन्हे कुछ लोगों ने इज़्ज़ुदीन आलीशाह तथा कुछ लोगो ने अजीज़ अलाउद्दीन शाह कहा है वस्तुतः इनके मित्र थे और उस काल के प्रसिद्ध कातिब थे। खुसरो उन्हे बड़े भाई-जैसा मानते थे। कुछ लोगो के अनुसार इनका नाम अलाउद्दीन ऐशा था। इनके छोटे भाई हिसामुद्दीन (कुछ लोगो के अनुसार क़तलग़ हिसामुद्दीन) थे।

खुसरो के पिता का नाम कुछ लोगों ने 'लाचीन' कहा है, किंतु वस्तुतः यह उनके क़बीले या वंश का नाम था, उनका नाम नही। उनके पिता का नाम जैसा कि हम पीछे देख चुके है, सैफ़ुद्दीन महमूद था। ऐसे ही उनके पिता को 'अमीर-बलख,' 'अमीर गजनी' तथा 'अमीर हजारा लाचीन' आदि भी कहा गया है।

विद्या और गुरु

'गुर्रतुल कमाल' की भूमिका मे खुसरो ने अपने पिता को 'उम्मी' अर्थात् अनपढ़ कहा है, किन्तु ऐसा अनुमान लगता है कि अनपढ बाप ने अपने बेटे के पढने-लिखने का अच्छा प्रबन्ध किया था। वे बचपन मे ही मदरसे जाने लगे थे। उन दिनो सुन्दर लेखन पर काफ़ी बल दिया जाता था। अमीर खुसरो को सुलेख का अभ्यास मौलाना सादुद्दीन ने कराया था। यों सुलेख आदि मे उनका मन लगता नही था, और बहुत कम उम्र मे ही वे काव्य मे रुचि लेने लगे थे। १० वर्ष की उम्र मे उन्होंने काव्य-रचना प्रारम्भ कर दी थी।

खुसरो ने सच्चे अर्थों में किसी को अपना काव्य-गुरु कदाचित् नहीं बनाया दीबाचतुलिग्र में उन्होंने स्वयं संकेत किया है कि किसी अच्छे कवि को वे अपन उस्ताद न बना सके जो ठीक से उन्हें शायरी का रास्ता बताए तथा काव्य-दोषं के प्रति सावधान करे। किन्तु किसी स्तर पर किसी शहाबुद्दीन नामक व्यक्ति रे जो कदाचित् कवि तो बड़े न थे, किन्तु विद्वान् थे, उन्होने अपनी 'हश्त बिहिश्त नामक कृति का संशोधन कराया था। उस पुस्तक के अन्त में इस बात का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा है कि शहाबुद्दीन ने एक दुश्मन की तरह उनकी ग़लतियों को देखा और एक दोस्त की भाँति खुसरो की सराहना की। 'ग़ुर्रतुल कमाल' में भी उनका उल्लेख है। ये शहाबुद्दीन कौन थे, इस सम्बन्ध में विवाद है और सनिश्चय कुछ कहना कठिन है। एक शहाबुद्दीन का पता तत्कालीन साहित्य से चलता है किन्तु वे कदचित् खुसरो के समकालीन न होकर उनके कुछ पहले हुए थे।

खुसरो ने काव्य के क्षेत्र में शिक्षा किसी व्यक्ति से न लेकर सादी, सनाई, ख़ाकानी, अनवरी तथा कमाल आदि के काव्य-ग्रन्थों से ली। विशेषतः ख़ाकानी, सनाई और अनवरी का तो उनकी कई रचनाओं एवं कृतियों पर स्पष्ट प्रभाव है।

धर्म के क्षेत्र में, जैसा कि प्रसिद्ध है, उनके गुरु हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया थे। आठ वर्ष की उम्र में ही अपने पिता के साथ खुसरो उनके पास गये थे तथा उनके शिष्य हो गए थे।

ज्ञान

खुसरो की हिन्दी, फ़ारसी, तुर्की, अरबी तथा संस्कृत आदि कई भाषाओं में गति थी, साथ ही दर्शन, धर्मशास्त्र, इतिहास, युद्ध-विद्या, व्याकरण, ज्योतिष, संगीत आदि का भी उन्होंने अध्ययन किया था। इतने अधिक विषयों में ज्ञानार्जन का श्रेय खुसरो की विद्या-व्यसनी प्रकृति एवं प्रवृत्ति को तो है ही, साथ ही पिता की मृत्यु के बाद नाना एमादुलमुल्क के संरक्षण को भी है, जिनकी सभा मे कवि, विद्वान् एवं संगीतज्ञ आदि प्रायः आया करते थे, जिनसे खुसरो को सहज ही सत्सग-लाभ का अवसर मिला करता था।

विवाह तथा सन्तान

खुसरो के विवाह के सम्बन्ध मे कहीं कोई उल्लेख नही मिलता, किन्तु यह निश्चित है कि उनका विवाह हुआ था। उनकी पुस्तक 'लैला मजनूं' से पता चलता है कि उनके एक पुत्री थी, जिसका तत्कालीन सामाजिक प्रवृत्ति के अनुसार उन्हें दुःख था। उन्होंने उक्त ग्रन्थ में अपनी पुत्री को सम्बोधित करके कहा है कि या तो तुम पैदा न होतीं या पैदा होतीं भी तो पुत्र रूप में। एक पुत्री के अतिरिक्त, उनके

तीन पुत्र भी थे, जिनमें एक का नाम मलिक अहमद था। यह कवि था और सुल्तान फ़ीरोज़शाह के दरबार से इसका सम्बन्ध था।

मृत्यु

खुसरो को अपने गुरु हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के प्रति बहुत ही श्रद्धा-भाव और स्नेह था। जिन दिनों वे अपने अन्तिम आश्रयदाता ग़यासुद्दीन तुग़लक के साथ बंगाल-आक्रमण पर गये हुए थे, हज़रत निज़ामुद्दीन का देहान्त हो गया। खुसरो को जब समाचार मिला तो वे बहुत दुखी हुए और तुरन्त दिल्ली लौटे। कहा जाता है आते ही काले कपड़े पहन वे अपने गुरु की समाधि पर गए और यह छन्द—

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।

कहकर बेहोश हो गए। गुरु की मृत्यु का खुसरो को इतना दुःख हुआ कि वे इस सदमे को बर्दाश्त न कर सके और छः महीने के भीतर ही उनकी इहलीला समाप्त हो गयी। उनका मृत्यु-सन् ७२५ हिजरी माना जाता है, जो ईसवी सन् में १३२४-२५ है।

देश-प्रेम

खुसरो में देश-प्रेम कूट कूटकर भरा था। उन्हें अपनी मातृभूमि भारत पर गर्व था। 'नुह सिपहर' में भारतीय पक्षियों का वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि यहाँ की मैना के समान अरब और ईरान में कोई पक्षी नहीं है। इसी प्रकार भारतीय मोर की भी उन्होंने बहुत प्रशंसा की है। उनकी रचनाओं में कई स्थानों पर भारतीय ज्ञान, दर्शन, अतिथि-सत्कार, फूलों-वृक्षों, रीति-रिवाजों तथा सौन्दर्य की मुक्तकंठ से प्रशंसा मिलती है। वे अपने को बड़े गर्व के साथ हिन्दुस्तानी तुर्क कहा करते थे। एक स्थान पर उन्होने लिखा है—

तुर्क हिन्दुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जवाब
(अर्थात् मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ, हिन्दवी मे जवाब देता हूँ।)

एक अन्य स्थान पर वे कहते है, 'मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ। अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो, तो हिंदवी मे पूछो, मै तुम्हें अनुपम बातें बता सकूँगा।' इससे स्पष्ट संकेत मिलता है कि फ़ारसी के इतने बड़े कवि होते हुए भी अपनी मातृभाषा 'हिन्दवी' का उन्हें कम गर्व न था। 'नुह सिपहर' मे एक स्थल पर खुसरो ने संस्कृत को फारसी से बढ़कर कहा है :

1045. F

बीस्त जवानी व सिफ़ते बरबरी
कमतरज़ अरबी व बेहतरज़ दरी

जीविका और आश्रय

साहित्यकार प्राय: बहुत व्यावहारिक या सांसारिक दृष्टि से बहुत सफल नहीं होते, किन्तु खुसरो अपवाद थे। जन्मजात कवि होते हुए भी व्यावहारिकता की उनमें कमी नहीं थी। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उनके आश्रयदाता की हत्या कर राजसत्ता हथियाने वाले ने भी उन्हें उसी स्नेह से अपना कृपापात्र बनाया। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक के मन में खुसरो के प्रति एक शंका रही है और अब भी है। वे बहुत बड़े सूफ़ी माने जाते है और कदाचित् थे भी, किन्तु इस बात का क्या समाधान हो सकता है कि कोई सूफ़ी किसी आश्रयदाता की जी खोलकर प्रशंसा करता हो, उसके प्रति स्नेह रखता हो, किन्तु उस आश्रयदाता की हत्या कर राजसत्ता हथियाने वाले के गद्दी पर बैठते ही उसी स्वर में उस हत्यारे की भी वह प्रशंसा करने लगे। ऐसा कोई तभी कर सकता है, जब उसे अपने सूफ़ीत्व से अधिक अपनी जीविका और आश्रय की चिन्ता हो।

खुसरो नासिरुद्दीन के ज़माने में पैदा हुए थे। लगभग २० वर्ष की उम्र तक आते-आते कवि रूप में उनकी काफ़ी प्रसिद्धि हो गयी। उस समय के पूर्व इन्हें किसी आश्रय की आवश्यकता नहीं थी। वे अपने नाना के साथ रहते थे। किन्तु उसी समय इनके नाना का देहान्त हो गया, अत. इनके सामने जीविका का प्रश्न आया। उस समय बादशाह गयासुद्दीन बलबन था। वह खुसरो तथा उनकी काव्य-प्रतिभा से अपरिचित तो नहीं था—खुसरो ने बलबन की प्रशंसा में लिखा भी—किन्तु साहित्यानुरागी न होने के कारण, खुसरो की ओर उसने ध्यान नहीं दिया।

खुसरो को पहला आश्रय बादशाह गयासुद्दीन के भतीजे अलाउद्दीन किशलू खाँ बारबक ने दिया। यह मलिक छज्जू नाम से प्रसिद्ध था तथा कड़ा (इलाहाबाद) का हाकिम था। यों मलिक छज्जू के अतिरिक्त बलबन के चचेरे भाई अमीर अली सरजानदार तथा दिल्ली के कोतवाल फखरुद्दीन से भी उन्हें सहायता मिली थी।

मलिक छज्जू के यहाँ खुसरो दो वर्ष तक ही रुके थे, कि एक घटना ने उनको दूसरा आश्रय ढूंढने को मजबूर कर दिया। हुआ यह कि एक दिन मलिक छज्जू के दरबार में बलबन के दूसरे पुत्र नासिरुद्दीन बुग़रा खाँ तथा कई अन्य लोग आये हुए थे। खुसरो की कविता से प्रसन्न हो बुग़रा खाँ ने उन्हें चाँदी के थाल में रुपये भरकर पुरस्कार रूप में दिया। खुसरो ने बुग़रा खाँ की प्रशंसा में क़सीदा कहा। मलिक छज्जू इसपर नाराज़ हो गया। खुसरो ने उसे खुश करने की बहुत कोशिश की किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। बल्कि वह खुसरो को सज़ा भी देना चाहता था, किन्तु खुसरो स्थिति को भाँपकर भाग निकले और अन्त में बुग़रा खाँ को

अपना आश्रयदाता बनाया। बुग़रा खाँ 'सामाना' मे बलबन की छावनी के शासक थे। उन्होने खुसरो का उचित आदर-सत्कार किया तथा अपना 'नदीम ख़ास' (मुख्य साथी या मित्र) बनाकर रखा।

वहाँ खुसरो कुछ ही दिन तक रुक पाये थे कि लखनौती के शासक तुग़रल ने विद्रोह कर दिया। दो बार बलबन की सेना उससे हारकर लौट आयी तो वह स्वयं बुग़रा खाँ को साथ ले चल पडा। खुसरो भी साथ गए। बरसात के दिन थे। बड़ा कष्ट हुआ। अन्त मे तुग़रल मारा गया और बुग़रा खाँ लखनौती और बगाल का शासक बना दिया गया। किन्तु खुसरो का दिल उधर नही लगा और वे बलबन के साथ दिल्ली लौट आए।

दिल्ली लौटने पर बलबन ने अपनी जीत के उपलक्ष मे उत्सव मनाया। उसका बड़ा लडका सुल्तान मुहम्मद—जो मुल्तान का हाकिम था—भी उत्सव मे सम्मिलित हुआ। खुसरो को अब दूसरे आश्रयदाता की आवश्यकता थी। उन्होंने सुल्तान मुहम्मद को अपनी कविताएँ सुनायी। उसने इनकी कविताएं बहुत पसन्द की और इन्हें अपने साथ मुल्तान ले गया। वहाँ सूफ़ी साधुओं एव कवियो का अच्छा जमघट था। खुसरो के नीचे एक प्रसिद्ध कवि सैयद हसन सिजजी थे जो खुसरो के अच्छे मित्र बन गए थे। कुछ लोग गजल में इन्हे खुसरो से भी अच्छा मानते हैं। खुसरो के आश्रयदाताओ मे सुल्तान मुहम्मद सर्वाधिक साहित्य-व्यसनी एव कलानुरागी थे, किन्तु खुसरो का जी वहाँ कभी नही लगा। वे वहा पाँच वर्षों तक रहे, किन्तु प्रति वर्ष दिल्ली आते रहे। अन्तिम वर्ष मुगलो ने मुल्तान पर हमला कर दिया। बादशाह के साथ खुसरो भी लड़ाई मे सम्मिलित हुए। बादशाह तो मारे गए और खुसरो बन्दी बना लिये गए तथा हिरात और बलख ले जाए गए। दो वर्ष बाद किसी प्रकार अपने कौशल और साहस के बल वे शत्रुओं के पंजो से छूटकर लौट सके। कहा जाता है कि लौटने पर वे गयासुद्दीन बलबन के दरबार मे गये और सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु पर बड़ा करुण मर्सिया पढ़ा, जिसे सुन बादशाह इतना रोये कि उन्हें बुखार आ गया, और तीसरे दिन उनका देहान्त हो गया।

इसके बाद खुसरो दो वर्षों तक अवध के सूबेदार अमीर अली सरजांदार के यहाँ रहे और १२८८ ई० मे दिल्ली लौट आए। कहा जाता है कि 'असपनामा' पुस्तक इन्ही अमीर के लिए खुसरो ने लिखी थी। बुगरा खाँ के पुत्र मुइजुद्दीन कैकूबाद जब गद्दी पर बैठे तो बाप-बेटे मे एक बात पर अनबन हो गयी और अन्त मे दोनों में युद्ध की नौबत आ गयी। किन्तु अमीर अली सरजांदार तथा कुछ लोगों के अनुसार खुसरो— जो वहाँ उपस्थित थे —के बीच-बचाव के कारण सघर्ष टल गया और समझौता हो गया। बाप-बेटा मिल गए। कैकूबाद ने खुसरो को राज्यसम्मान दिया और उसने बाप-बेटे के मिलन पर एक मसनवी लिखने को

कहा। खुसरो ने मसनवी किरानुस्सादैन (=बाप-बेटे का मिलन) इन्हीं के कहने पर लिखनी शुरू की, जो छः महीनों मे पूरी हुई।

१२९० ई० में कैकूबाद मारे गए और गुलाम वंश का अंत हो गया। बीच में कुछ समय के लिए शमसुद्दीन कैमूरस बादशाह बने थे, किन्तु अन्ततः सत्तर वर्षीय जलालुद्दीन खिलजी ने दिल्ली के तख़्त पर अधिकार कर लिया। खुसरो से इनका सम्बन्ध पहले से ही था। इन्होने भी अपने दरबार में खुसरो को सम्मान दिया और इन्हें 'अमीर' की पदवी दी। खुसरो 'मलिक्कुशोअरा अमीर खुसरो' कहे जाने लगे। इनका वज़ीफ़ा १२,००० तनका सालाना तय हुआ और बादशाह के ये खास मुसाहिब हो गए। जलालुद्दीन विद्या एवं कला-प्रेमी थे। फ़ारसी कवि ख़्वाजा हसन, संगीतज्ञ मुहम्मदशाह, इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बरनी, संगीतज्ञाएँ फ़ुतूहा और नुसरत ख़ातून आदि का उनके दरबार से सम्बन्ध था। जलालुद्दीन की तारीफ़ मे खुसरो ने क़सीदे लिखे जो 'गुर्रतुल कमाल' में हैं। 'मिफ़ताहुल फ़ुतूहा' में जलालुद्दीन की चार विजयों का वर्णन है।

१२९६ मे अलाउद्दीन ने राज्य के लोभ से विश्वासघात करके सीधे-सादे और नेक बादशाह जलालुद्दीन को मार डाला और दिल्ली के तख़्त पर जा बैठा। वे रिश्ते मे जलालुद्दीन के भतीजा और दामाद थे। खुसरो ने अलाउद्दीन की भी कृपा-पात्रता प्राप्त की, उनकी तारीफ में कसीदे कहे, और उन्होंने इन्हें अच्छे वेतन पर अपने दरबार में रखा तथा 'खुसरुए-शोअरा' की उपाधि दी। खुसरो ने अलाउद्दीन के लिए 'तारीखे अलाई' तथा बहुत-सी कविताएँ लिखीं।

अलाउद्दीन के उत्तराधिकारी कुतुबुद्दीन मुबारकशाह के दरबार मे भी खुसरो को बड़ी सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था। 'नुह सिपहर' ग्रन्थ इसी समय लिखा गया। कहा जाता है कि इस ग्रन्थ के लिए बादशाह ने वजन मे एक हाथी बराबर सोना दिया, जो निश्चित रूप से अतिशयोक्ति है। हाँ, उन्हें पर्याप्त पुरस्कार अवश्य मिला जिसका उल्लेख उन्होंने स्वयं भी किया है।

मुबारकशाह के मारे जाने पर गयासुद्दीन तुग़लक गद्दी पर बैठे। ये खुसरो के अन्तिम आश्रयदाता थे। खुसरो ने 'तुग़लकनामा' इन्ही के लिए लिखा। ग़यासुद्दीन के साथ खुसरो बंगाल के आक्रमण मे सम्मिलित हुए। दिल्ली से उनकी इसी अनुपस्थिति मे हजरत निज़ामुद्दीन औलिया की मृत्यु हो गयी, जो अन्ततः उनकी अपनी मृत्यु का भी कारण बनी।

इस प्रकार खुसरो को अनेक बादशाहों एव शासकों का आश्रय एवं उनसे सम्मान मिला और उन्होने बड़ी व्यावहारिकता के साथ प्राय. सबका निर्वाह किया।

व्यक्तित्व

खुसरो का व्यक्तित्व बहुत ही बहुरंगी और आकर्षक था। अत्यन्त प्रतिभा-सम्पन्न कवि, गद्य-लेखक, इतिहासकार, संगीतज्ञ, ज्योतिषी तथा जादूगर तो वे थे ही, वे एक बहुत ही व्यावहारिक दरबारी, विनोदप्रिय, ज़िन्दादिल तथा मिलनसार भी थे। बहुत से लोग उन्हें एक उच्चकोटि का सूफ़ी मानते है। कहा जाता है कि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने उन्हें खिरका (वस्त्र विशेष) दिया था, जिसका आशय यह है कि उन्होने खुसरो को इस योग्य समझा था कि यदि वे चाहें तो एक सूफ़ी सन्त की तरह अपने शिष्य बनाएँ। मेरे विचार मे, जहाँ तक स्वभाव का सम्बन्ध है, उनमें सूफ़ीत्व के साथ-साथ समय को पहचाने की प्रवृत्ति थी। उनके पूरे जीवन को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि बादशाह या आश्रयदाता का गुण-दोष का विचार किए बिना वे उसकी तारीफ़ करते थे। उनके लिए व्यक्ति नहीं, गद्दी का महत्त्व था। उस पर जो भी आ गया, उनके लिए प्रशंसनीय था।

खुसरो कला-प्रेमी और कवि जलालुद्दीन के प्रशंसक और कृपापात्र थे, किन्तु जलालुद्दीन को धोखे से मारनेवाला अलाउद्दीन अभी बादशाह बना भी नही था कि उन्होने उसकी तारीफ़ में क़सीदे कहने शुरू कर दिए। कहाँ तो उन्हे जलालुद्दीन के लड़कों का साथ देना चाहिए था और कहाँ वे जलालुद्दीन के दोनों लड़कों का अंधा करके मार डाला जाना भी देखते रहे और अपनी ज़बान या लेखनी को इस अन्याय के विरुद्ध उठाना आवश्यक नहीं समझा। वस्तुतः इस प्रकार की और भी घटनाएँ है जो अमीर खुसरो की महानता पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाती है।

खुसरो की कुछ फ़ारसी रचनाओं में सांप्रदायिकता की गंध भी है। सभवतः अपने कुछ सांप्रदायिक आश्रयदाताओं के लिए लिखी गयी रचनाओ मे उन्होने ऐसा किया है।

(ख) संगीत-प्रेम

अमीर खुसरो एक बहुत अच्छे गायक और संगीतशास्त्री भी थे, यह बात खुसरो-विषयक परम्परा, भारतीय संगीत-परम्परा तथा स्वयं खुसरो की कई पुस्तकों (जैसे क़िरानुस्सादैन[1] अथवा नवल किशोर प्रेस से प्रकाशित 'अरबिया अनासिर दवावीन खुसरो' के कुछ छन्द[2]) से प्रमाणित है।

वस्तुतः इस्लाम की अपनी विशुद्ध धार्मिक परंपरा में संगीत प्रायः वर्जित-सा है, किन्तु इसके सूफ़ी-सम्प्रदाय में संगीत का विशेष स्थान रहा है। मुसलमान बादशाहों के दरबार में ये दोनों ही परम्पराएँ देखने को मिलती हैं। कुछ ने संगीत को पर्याप्त प्रश्रय दिया और कुछ इसके पूरे विरोधी थे। शमसुद्दीन अल्तमश के समय में उनके काजी सईदुद्दीन सादिक़ और मिनहाज अलसिराज के प्रभाव से पहले तो संगीत को ग़ैर-इस्लामी कहकर दरबार से निकाल दिया गया था, किंतु बाद में अल्तमश ने उस पर से प्रतिबन्ध उठा लिया और आगे चलकर उनके बड़े बेटे फीरोज़शाह ने संगीत को पूरा प्रश्रय दिया। बलबन भी संगीत का शौकीन था, किंतु संगीत की सर्वाधिक उन्नति कैकबाद के गद्दी पर बैठने के बाद हुई। उसने तो अपने दरबार और दिल्ली को संगीत का ऐसा केन्द्र बना दिया कि प्रायः पूरे भारत से गायक-गायिकाएँ यहाँ खिंचकर आ गयी। जलालुद्दीन ख़िलजी, अलाउद्दीन खिलजी तथा मुहम्मद तुग़लक के ज़माने में भी संगीत को उचित प्रश्रय मिलता रहा। इस तरह कुछ अपवादों को छोड़कर खुसरो के समय में संगीत को काफी प्रोत्साहक राजाश्रय मिलता रहा और इसी कारण अनेक गुणों और कलाओं के धनी, प्रायः सदा ही राजाश्रित रहने वाले खुसरो को संगीत, कला तथा संगीत-शास्त्र में भी योगदान का समुचित अवसर मिला।

खुसरो का संगीत को योगदान वाद्य और गेय दोनों ही क्षेत्रों में रहा है। कहा जाता है कि वीणा भारत का पुराना वाद्य था। उसके आधार पर खुसरो

---

१. देखिए, भूमिका में इस पुस्तक का परिचय।

२. देखिए 'अमीर खुसरो' (मुहम्मद वहीद मिर्ज़ा) में, पृ० ३३०-३२।

ने ही तीन तारो का 'सेहतार' (फ़ा० सेह=तीन+तार) नाम का बाजा बनाया। यही 'सेहतार' आगे चलकर 'सितार'[1] बना जिसमें तीन तार के स्थान पर सात तार (अब तो गूंज के लिए इन तारों के नीचे और भी तार लगाए जाने लगे हैं) होने लगे। यों मुझे ऐसा लगता है कि 'सप्त-तार' से भी इस शब्द के विकास की संभावना हो सकती है। मूलतः इसमे सात ही तार होते थे। कुछ लोगों के अनुसार इसका आधार वीणा न होकर 'तंबूरा' और 'बीन' थी। ऐसे ही 'तबला' तथा 'ढोलक' को भी ख़ुसरो के नाम के साथ संबद्ध करते हैं। हमारा पुराना वाद्य 'पखावज' था जो अपनी लंबाई के कारण कुछ कम सुविधाजनक रहा है। कहा जाता है कि खुसरो ने बजाने की सुविधा की दृष्टि से पखावज को ही दो भागों मे विभाजित किया तथा अरबी शब्द 'तबला' (जिसका मूल अर्थ ढोल, नगाड़ा, डंका आदि था) के आधार पर इसका नामकरण किया। ऐसे ही कुछ लोगो के अनुसार 'ढोलक' 'पखावज' का छोटा रूप है, और यह रूप देने का श्रेय भी खुसरो को है। 'ढोलक' शब्द का सम्बन्ध फारसी शब्द 'दुहुल' मे सम्भव है : दुहुल > ढोल + अल्पार्थक 'क' = ढोलक। यों 'ढोल' शब्द संस्कृत के प्रसिद्ध तन्त्र ग्रन्थ रुद्रयामल मे आया है : 'ढक्का ढोल प्रिया नित्या ढोल वाद्य-प्रमोदिनी.........' किंतु वहाँ भी यह फ़ारसी से आया हो सकता है।

गेय संगीत के क्षेत्र में खुसरो का योगदान काफ़ी हद तक स्वीकृत है। 'मानकु सोहिल' के फ़क़ीरुल्ला द्वारा 'राग-दर्पन' नाम से औरंगज़ेब के काल में किए गए फारसी अनुवाद में कहा गया है कि अमीर खुसरो बहुत अच्छे गायक थे और अपने काल के प्रसिद्ध गवैये गोपाल नायक को हराकर उन्होने 'नायक' की पदवी प्राप्त की थी। खुसरो के काल में गायक, गंधर्व, गुनी, पंडित, नायक क्रम मे गवैयों की पदवी के रूप में प्रयुक्त होते थे। 'नायक' इस कला के उच्चतम स्तर की प्राप्ति करने वाले को कहते थे।

ख़ुसरो की संगीत-कला—न केवल सैद्धांतिक अपितु उसका प्रयोग भी—मे बड़ी अच्छी गति थी। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे ईरानी और भारतीय संगीत, दोनों ही में पटु थे, इसी कारण वे दोनो के समन्वय द्वारा भारतीय सगीत को बहुत कुछ दे सके।

जैसा कि ऊपर संकेतित है, कुछ के अनुसार खुसरो ने प्रसिद्ध गवैये गोपाल नायक को हराया था, किंतु वास्तविकता यह है कि गोपाल नायक खुसरो के

---

१. अमीर ख़ुसरो ने अपने 'किरानुस्सादैन' तथा 'नुह सिपहर' ग्रन्थों मे जहाँ बाजो के नाम लिये है, 'सितार' का नाम नही है, जिसका अर्थ यह कि सितार खुसरो के बाद अस्तित्व मे आया होगा। यदि यह मेरा निष्कर्ष ठीक है तो सितार का उनकी ईजाद होना सम्भव नही लगता।

काल में थे ही नहीं। वे अकबर के ज़माने में थे।

वाजिद अली शाह ने अपनी पुस्तक 'सौतुल मुबारक' में अमीर ख़ुसरो को ख़्याल का नायक कहा है।

ख़ुसरो 'कव्वाली' और 'तराना' के आविष्कारक माने जाते हैं। आज भी कव्वाल लोग ख़ुसरो को ही अपना पहला उस्ताद मानते हैं। 'रागदर्पन' में ख़ुसरो की आविष्कृत बहुत-सी रागों का उल्लेख है। इन्होंने कुछ राग तो ईरानी और भारतीय रागों के मिश्रण से तैयार किए और कुछ स्वयं बनाए।

जो लोग इन्हें ढोलक और तबला के आविष्कारक मानते हैं, उनके अनुसार उन्हें बजाने के तरीक़े भी ख़ुसरो के बनाए हैं। इन तरीक़ों में भी उन्होंने भारतीय और ईरानी दोनों ही संगीत-पद्धतियों का आधार लिया है। इनके द्वारा आविष्कृत ताल सत्रह कहे जाते हैं, जिनमे अव्वल ख़मसा (५ ताल), सवारी (४ ताल), फ़रोदस्त (५ ताल), पहलवान (४ ताल), चपत (३ ताल), ज़नानी सवारी (५ तथा ७ ताल), पश्तो (एक ताल), आड़ा चौताला (४ ताल), कव्वाली (३ ताल), झूमर (३ ताल) आदि प्रमुख हैं।

ख़ुसरो के बनाए रागों मे मजीर (ग़ारा + एक फ़ारसी राग), साज़गिरी (पूर्वी + गोरा + ककली + एक फ़ारसी राग), एमन (हिंडोल + नीरीज़), उश्शाक (सारंग + वसंत + नवा), मुवाफ़िक (टोडी + मालरी + ईदगाह + हुसैनी), ग़मन (पूर्वी को कुछ परिवर्तित करके), ज़ीलफ़ (षड्राग + शहनाज़), फ़रग़ना (कंगली + गोरा + फ़रग़ान), सरपरदा (सारंग + बिलावल + बिहाग + सस्त; एक मतानुसार एमन + गोंड), फ़र्ज़ेदस्त (कांगड़ा + गौरी + पूर्वी + एक फारसी राग), बाख़रज (एक फ़ारसी राग + देस), सनम (कल्याण + एक फ़ारसी राग) आदि मुख्य हैं। इनमे साज़गिरी, बाख़रज, उश्शाक और मुवाफ़िक बहुत ही अच्छे राग हैं, शेष में कोई ख़ास बात नहीं है।

इस तरह भारतीय संगीत को अमीर ख़ुसरो की देन कुछ शंकाओं के बावजूद काफ़ी महत्त्वपूर्ण है।

(ग) रचनाएँ

खुसरो फ़ारसी, अरबी, तुर्की और हिन्दी के विद्वान् थे। इसके अतिरिक्त संस्कृत में भी न्यूनाधिक रूप में कदाचित् उनकी गति थी। खुसरो की अधिकांश रचनाएँ फ़ारसी में हैं, और कुछ थोड़ी-सी हिन्दी में। लोगों का कहना है कि फ़िरदौसी ने ७०,००० शेर लिखे, सायब ने एक लाख से ऊपर, किन्तु खुसरो नें कई लाख। कुछ तज़किरों के अनुसार खुसरो के फ़ारसी छंद तीन और चार लाख के बीच में हैं। एक मतानुसार ४ लाख से अधिक और ५ लाख से कम हैं।[1] मौलाना शिबली का अनुमान है कि यहाँ आशय पंक्तियों से है।[2] लुत्फ़ अली ख़ाँ का कहना है कि उन्होंने स्वयं खुसरो के एक लाख पद देखे थे।[3] उनकी हिन्दी रचनाएँ मूलतः कितनी थीं, इस संबंध में भी विवाद है। कुछ लोगों का ख़्याल है कि खुसरो ने फ़ारसी से कहीं ज्यादा हिन्दी में लिखा।[4] कुछ लोग फ़ारसी और हिन्दी मे बराबर रचनाएँ मानने के पक्ष में हैं।[5] जैसा कि ऊपर संकेतित है, तथा जैसा कि गार्सां द तासी तथा अन्य अनेक भारतीय-अभारतीय विद्वानों ने माना है, मेरे विचार में हिन्दी में उन्होंने रचनाएँ कीं, किंतु बहुत अधिक नहीं।

फ़ारसी रचनाएँ

अमीर खुसरो की फ़ारसी पुस्तकों की संख्या भी, जैसाकि उपर्युक्त स्थिति के कारण स्वाभाविक है, पर्याप्त विवादास्पद है। पहले इनकी २०-२१ कृतियाँ ही उपलब्ध थीं, अतः कुछ लोगों का विचार था, कि उन्होंने लगभग इतनी ही पुस्तकें

---

१. दौलतशाह, पृ० २४०।

२. बयान ख़ुसरवी।

३. तज़कराए आतिशकदा।

४. ब्रजरत्न दास, खुसरो की हिन्दी कविता, बनारस, सं०१९७८, पृ० १२।

५. औहदी ने 'तज़किरे अरफ़ात' में लिखा है कि ख़ुसरो का जितना कलाम फ़ारसी में है उतना ही ब्रजभाषा में।

लिखी थी। जामी[1] के अनुसार खुसरो की कुल कृतियाँ ६६ थी। अमीन राज़ी ने १६६ मानी है।[2] प्रसिद्ध इतिहासकार बरनी ने, जो खुसरो के समकालीन थे, अपनी 'तारीख फ़ीरोज़ शाही' में लिखा है कि उनकी इतनी रचनाएँ हैं कि एक पुस्तकालय बन सकता है। इस सदी में खुसरो की रचनाओं की व्यवस्थित खोज शुरू हुई और इस दिशा मे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य नवाब इसहाक़ ख़ाँ का है, जिन्होने भारत के सभी प्रसिद्ध पुस्तकालयो एवं तुर्की, मिस्र तथा यूरोप आदि से उनकी ४० से ऊपर कृतियाँ खोज निकाली। रचनाओं के नाम है :

(१) तुहफतुस्सिग्र
(२) वस्तुल हयात
(३) गुर्रतुल कमाल
(४) बकीय: नकीय:
(५) निहायतुल कमाल
(६) किरानुस्सादैन
(७) मिफताहुल फ़ुतूह
(८) खिज्र ख़ाँ व देवल रानी
(९) नुह सिपहर
(१०) तुगलकनाम:
(११) मतलाउल अनवार
(१२) शीरीं व खुसरो
(१३) मजनू लैला
(१४) हश्त बिहिश्त
(१५) आइनए इसकन्दरी
(१६) मजमूआ मसनवियात
(१७) मजमूआ रुबाइयात
(१८) कुल्लियात
(१९) कसीदा अमीर खुसरो
(२०) मुश्तमिल वर दास्ताँ शाहनामा
(२१) एजाजे खुसरवी
(२१) इंशाए खुसरवी
(२३) अहवाले अमीर खुसरो
(२४) खज़ाइनुल फ़तूह
(२५) निसाबे बदीउल अजायब व निसावे मसल्लस
(२६) अफजलुल फ़वाइद
(२७) किस्सा चहार दरवेश
(२८) बाजनामा
(२९) अस्पनामा
(३०) वाहरुल अबर
(३१) मर्रातुस्सफ़ा
(३२) शहर आशोब
(३३) ताजुल फ़तूह
(३४) तारीखे दिल्ली
(३५) मानकिबे हिन्द
(३६) हालात कन्हैया व कृश्न
(३७) मक्तूबाते अमीर खुसरो
(३८) जवाहरुल बहर
(३९) मक़ाला तारीखुल खुलफ़ा
(४०) राहतुल मुहिब्बीन
(४१) रिसाला अब्यात वहस (खुसरो ओ जामी)
(४२) शगूफे ब्यान
(४३) नराना हिन्दी
(४४) मनाजाते खुसरो
(४५) मसनवी शिकायतनामा मोमिनपुर पटियाली

१. सीरुल औलिया, पृ० ३०१-५।
२. नफ़हातुलउन्स, पृ० ७१०।

यों ये सभी रचनाएँ पूर्णतः स्वतंत्र नहीं हैं। कई दूसरी रचनाओं के भाग हैं एवं कई कविताएँ एक से अधिक पुस्तकों में हैं।

नीचे खुसरो की कुछ प्रमुख पद्य एवं गद्य रचनाओं के परिचय दिए जा रहे हैं—

पद्य

पाँच दीवान

(१) **तुहफ़तुस्सिग्र**—यह अमीर खुसरो का पहला दीवान है, जिसे ६७१ हिजरी में उन्होंने क्रम दिया। इसमें १६ से १९ वर्ष की आयु की रचनाएँ संगृहीत हैं, इसीलिए इनका नाम 'तुहफ़तुस्सिग्र' अर्थात् 'बचपन का तोहफ़ा' है। शैली आदि की दृष्टि से इस संग्रह की रचनाओं पर फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि अनवरी तथा ख़ाक़ानी का प्रभाव है। दीवान की भूमिका में खुसरो ने अपने बचपन की कुछ मनोरंजक बातों तथा उन्होंने कविता करने का अभ्यास कैसे बढ़ाया, आदि का उल्लेख किया है। इस दीवान में ३५ कसीदे (१५ से अधिक चरणों का प्रशंसात्मक काव्य), ५ तरजीअबंद (एक प्रकार की कविता, जिसमें कोई विशेष चरण कुछ पदों के बाद बार-बार आता है), बहुत से कते (विशेष प्रकार की कविता जिसमें चार से लेकर ७० तक चरण होते हैं), तथा एक छोटी-सी मसनवी (खंड काव्य या महाकाव्य जैसी रचना, जिसके दोनों मिस्रे एक रदीफ और काफ़िए के होते हैं) हैं। क़सीदे बलबन, नसीरुद्दीन तथा कुछ अमीरों की तारीफ़ में हैं। पुस्तक में दो चिड़ियों और एमादुलमुल्क का मर्सिया (शोककाव्य) भी है।

(२) **वस्तुल हयात**—'वस्तुल हयात' का अर्थ है 'ज़िन्दगी के बीच का भाग'। ६८४ हिजरी के लगभग क्रम दिये गये, साहित्यिक और ऐतिहासिक महत्त्व के इस दीवान में अधिकांश रचनाएँ १९-२० से लेकर २४ तक की उम्र में खुसरो ने लिखी थीं। यों कुछ रचनाएँ ३२-३४ वर्ष की उम्र की लिखी हुई भी हैं। इसकी भूमिका में भी १९ से ३४ वर्ष की ज़िन्दगी से संबंधित कुछ बातें उल्लिखित हैं। ८४४१ छंदों के इस दीवान में कुल ५८ कसीदे, ८ तरजीअबंद, ९२ कते तथा कुछ रुबाइयाँ (चतुष्पदी) और मरसिये हैं। अधिकांश कसीदे और एक मरसिया सुल्तान मुहम्मद शहीद से संबद्ध हैं। अन्य हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, क़शलू खाँ, बलबन, कैक़ुबाद, बुगरा खाँ, शमसुद्दीन दबीर तथा जलालुद्दीन ख़िलजी की तारीफ़ में हैं।

(३) **ग़ुर्रतुल कमाल**—'ग़ुर्रत' का अर्थ है 'शुक्ल पक्ष की पहली रात'। इस दीवान के नाम का अर्थ है 'शुक्ल पक्ष की कमाल की पहली रात'। खुसरो का यह तीसरा दीवान उनके शेष सारे दीवानों से बड़ा और अच्छा है। इसे ६९३ हिज्री में कवि ने क्रम दिया। इसकी अधिकांश रचनाएँ ३४ वर्ष की उम्र से लेकर ४३ वर्ष की उम्र

में लिखी गयी थीं। कुछ ही इस अवधि के बाहर की हैं।

इस दीवान की भूमिका काफ़ी बड़ी है, जिसमें ख़ुसरो ने अपने जीवन-संबंधी बहुत-सी बातें दी हैं तथा कविता के गुण, अरबी से फ़ारसी कविता की श्रेष्ठता, भारत की फ़ारसी कविता क्यों अच्छी है, भारतीय फ़ारसीदानों की फ़ारसी अन्य देशों की तुलना में अधिक शुद्ध है, 'ग़ज़ल' कोई बहुत महत्त्वपूर्ण चीज़ नहीं है, इसे सभी लिख सकते हैं, किस तरह अच्छी कविता की जा सकती है, तथा काव्य और छंदों के भेद, आदि अनेक बातों पर प्रकाश डाला गया है।

इस दीवान में ६ मसनवियाँ तथा बहुत-सी रुबाइयाँ, क़ते, ग़ज़लें, मरसिये, नात और क़सीदे है। मसनवियों में 'मिफ़ताहुल फ़तूह' बहुत प्रसिद्ध है। मरसियों मे ख़ुसरो के बेटे तथा फ़ीरोज़ ख़िलजी के बड़े लड़के महमूद ख़ानख़ाना के मरसिए उल्लेख्य हैं। एक बड़ी नात (स्तुति काव्य; मुहम्मद साहब की स्तुति) है जो ख़ाक़ानी से प्रभावित है। क़सीदों में ख़ुसरो का सबसे अधिक प्रसिद्ध क़सीदा 'दरियाए-अबरार' (अच्छे लोगों की नदी) इसी में है। इसमें हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की तारीफ़ है। ख़ुसरो को अपना यह क़सीदा इतना अधिक पसंद था कि वे कहा करते कि उनका सारा कलाम लुप्त हो जाए, किन्तु केवल यह बच जाए तो भी कोई हर्ज नहीं। अन्य क़सीदे जलालुद्दीन ख़िलजी तथा अलाउद्दीन ख़िलजी आदि से संबद्ध है। इस दीवान की रचनाओं पर ख़ाक़ानी, सनाई आदि फ़ारसी के कई कवियों का प्रभाव पड़ा है, किंतु ख़ुसरो की मौलिकता की परिचायिका कविताएँ भी कम नही हैं।

इस दीवान की भूमिका से स्पष्ट हो जाता है कि वे अरबी के अतिरिक्त तुर्की भी जानते थे।

(४) **बक़ीय: नक़ीय:**—इसका शब्दिक अर्थ है 'बाक़ी साफ़'। ख़ुसरो का यह चौथा दीवान इस दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है कि इसमें अन्य कवियो का प्रभाव प्राय: नहीं के बराबर है, और उनकी मौलिकता अपने चरम बिंदु पर पहुँच गयी है। भाषा-शैली भी बड़ी प्रौढ़ है। इसकी रचनाएँ ४४ वर्ष की उम्र से लेकर ६४ वर्ष की उम्र तक की हैं। ख़ुसरो ने अलाउद्दीन की मृत्यु के कुछ दिन बाद ७१६ हिजरी में इस दीवान को क्रम दिया। इसमें ६३ क़सीदे, ६ तरजीयात, १६५ मसनवी के छंद, २०० क़ते, ५७० ग़ज़लें और ३६० रुबाइयाँ हैं। आरम्भ में भूमिका है। भूमिका से स्पष्ट है कि उन्हें अपनी रचनाओं पर गर्व था। एक स्थान पर वे कहते हैं—'मैं अपने तरह का अकेला कवि हूँ।' इसी तरह उन्होंने यह भी स्पष्ट शब्दों में कहा है कि क़ुरान-हदीस आदि ही केवल मेरी कविता से ऊँची हैं, किसी और की कविता नहीं। एक अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि तक़दीर लिखने वाले की क़लम भी मेरी क़लम से तेज़ नहीं हो सकती। पर साथ ही, कहीं-कहीं, अपने इस गर्व के लिए वे लज्जा का अनुभव करते भी दिखायी पड़ते हैं।

इस दीवान की बहुत-सी रचनाएँ (क़सीदे, मरसिया) अलाउद्दीन ख़िलजी से संबद्ध हैं।

(५) **निहायतुल कमाल** (=कमाल की सीमा)—अमीर खुसरो का यह पाँचवाँ और अंतिम दीवान है, जिसे उन्होंने ग़यासुद्दीन की मृत्यु और मुहम्मद तुग़लक के गद्दी पर बैठने के बाद अपनी मृत्यु से कुछ पहले मुरत्तब किया। इस दीवान की बहुत कम प्रतियाँ उपलब्ध है। ब्रिटिश म्युज़ियम मे उपलब्ध प्रति में २२ क़सीदे, ५ तरजीयात, चार छोटी-छोटी मसनवियाँ, बहुत-सी ग़ज़लें, क़ते और रुबाइयाँ हैं। क़सीदे हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, ग़यासुद्दीन, तुग़लक, जूना ख़ाँ, बहराम ख़ाँ आदि की तारीफ़ से सबद्ध हैं। ४ क़सीदों में तसव्वुफ़ और सद्व्यवहार विषयक बातें हैं। कुतुबुद्दीनशाह तथा अपने बेटे हाजी पर दो तरजीयात में मरसिए हैं। एक कविता में मुहम्मद तुग़लक को तुग़लकबाद बसाने पर बधाई दी गयी है। कुछ क़तों में पहेलियाँ हैं। जैसे उस्तरे की एक पहेली में कहा गया है कि पेट फटा है, पेट मे ज़बान है, जो बुड्ढे को एक क्षण मे जवान कर देता है। इसमें कुछ ऐसी भी गजलें हैं, जिन मे एक पंक्ति अरबी की है, और दूसरी फ़ारसी की। इस दीवान में कुछ ऐसी भी गज़लें हैं जो पूर्ववर्ती दीवानों में आ चुकी हैं। इस दीवान के कुछ छंदों से पता चलता है कि उनको ज्योतिष का भी अच्छा ज्ञान था।

ग्यारह मसनवियाँ

(१) **क़िरानुस्सादैन**—खुसरो ने अपनी यह मसनवी ६८८ हिजरी मे लिखी। इसका मूल विषय है बलबन के पौत्र क़ैक़ुबाद का गद्दी पर बैठना, फिर उसके पिता बुग़रा ख़ाँ से उसका झगड़ा और अंत में दोनों मे समझौता। बाप-बेटे के झगड़े के बाद समझौता करके मिलने के आधार पर ही इसका नाम 'क़िरानुस्सादैन' रखा गया है जिसका अर्थ है 'दो तारो का मिलन'। इस मनसवी के अध्यायों के शीर्षक बड़े काव्यमय हैं। इसमे तत्कालीन इतिहास की अधिक सामग्री तो नहीं है, किन्तु उस समय के बादशाहों और अमीरों की रहन-सहन, तत्कालीन इमारतें, संगीत तथा नृत्य आदि—विषयक सामग्री अच्छी है। फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि निज़ामी का इस मनसवी पर प्रभाव है। इसमे खुसरो ने पान के बारे में लिखा है :

सिफ़ते बीरगे तबोल कि निज़दे हमअ ख़ल्क़।
बेह अज़ाँ नेस्त नबाते हमअ हिन्दुस्तान।

(संसार के लिए, पूरे हिन्दुस्तान में पान के बीड़े से बढकर कोई वनस्पति नहीं है)

इसमें दिल्ली की तारीफ़ है, अतः इसे 'मसनवी दर सिफ़त-ए-देहली' भी कहते है।

(२) **मिफ्ताहुल फ़ुतूह**--६९० हिजरी में लिखित इस दूसरी मनसवी मे जलालुद्दीन फ़िरोज़ खिलजी की चार विजयो (मालिक छज्जू की बग़ावत और उसको सज़ा, अवध की जीत, मुग़लो को हराना, छाइन की विजय) का वर्णन है। 'मिफ्ताहुल फ़ुतूह' का अर्थ है 'विजयों की कुंजी'। यह छोटी मसनवी ऐतिहासिक तथ्यो की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। तथ्यों को प्रायः तोड़ा-मरोड़ा नही गया है।

(३-७) **खमसाए खुसरो**—'खम्सः' का अर्थ है ५। इसमें खुसरो की पाँच मसनवियाँ हैं—मतलाउल अनवार, शीरीं व खुसरो, मजनू लैला, आईनए इस-कन्दरी, हस्त बिहिश्त। प्रसिद्ध फारसी कवि निज़ामी के खम्से के जवाब मे उन्हीं के छन्दों मे, उन्हीं विषयों पर यह ग्रन्थ खुसरो ने लिखा है। इसका रचना काल ६९८ और ७०१ हिजरी के बीच में है। कुछ लोगों के अनुसार यह रचना उलाउद्दीन के कहने से की गयी थी, किन्तु वहीद मिर्ज़ा आदि अन्य लोग ऐसा नहीं मानते। खुसरो अपने इस खम्से को निज़ामी के खुम्मे से अच्छा मानते थे। कुछ ने इसके एक शेर को निज़ामी के पूरे ख़म्से से अधिक अच्छा माना है, किन्तु दूसरी ओर उबैद, जामी, नवाई आदि ने इसे निज़ामी की नक़ल माना है। इन मसनवियों में 'मतलाउल अनवार' (=रोशनी निकलने की जगह) सर्वाधिक प्रसिद्ध है। कहते हैं जामी ने इसी के अनुकरण पर अपना 'तोहफ़तुल अबरार' (=अच्छे लोगो का तोहफ़ा) लिखा था। 'मजनू लैला' भी काफी अच्छी बन पड़ी है।

(८) **खिज्र ख़ाँ व देवलरानी**—इस मसनवी को 'इश्क़िया', 'खिज्रनाम.' आदि कई नामों से पुकारा गया है। जैसाकि नाम से स्पष्ट है इस मसनवी में खिज्र खाँ और देवलरानी का प्रेम वर्णित है। इसे खुसरो ने ७१५ हिजरी में पूरा किया। मूलतः यह मसनवी खिज्र ख़ाँ के जीवनकाल में ही पूरी हो गयी थी किन्तु उनकी मृत्यु के बाद खुसरो ने उनकी मृत्यु का प्रसंग भी बढ़ा दिया। ऐतिहासिक तथ्यों एवं कवित्व गुण दोनों ही दृष्टियों से यह मसनवी महत्त्वपूर्ण है। भारत के प्राकृतिक और शारीरिक सौन्दर्य के लिए खुसरो के हृदय में बड़ा स्थान था, इसकी झलक भी इसमें है। कई भारतीय फूलों के नामों, संगीत के भारतीय पारिभाषिक शब्दों एवं 'सिंहासन' जैसे अन्य शब्दों का इसमें खुसरो ने फ़ारसी में गृहीत शब्द के रूप मे प्रयोग किया है।

(९) **नुह सिपहर**—इसका शाब्दिक अर्थ है 'नौ आसमान'। नौ अध्यायों में विभाजित यह मसनवी ७१८ हिजरी में पूरी हुई। अलाउद्दीन के बेटे कुतुबुद्दीन मुबारक शाह के कहने से खुसरो ने इसकी रचना की थी। बादशाह ने इसके

लिए एक हाथी सोना देने का वायदा किया था और कहा जाता है कि दिया भी। इस ऐतिहासिक मसनवी में मुबारक शाह की जीतों, उसके जीवन की अनेक अन्य बातों तथा उसकी बनवायी इमारतों आदि का वर्णन है। इनके अतिरिक्त निजामुद्दीन औलिया तथा भारतीय नगरो, प्रथाओ, धर्मों, लोगों आदि की तारीफ़, राजा-प्रजा के कर्त्तव्य, सूफ़ियो की प्रेम-पद्धति तथा शाहज़ादा मुहम्मद की कुंडली (इसमें खुसरो के ज्योतिष ज्ञान का पता चलता है) आदि भी है। आठवें अध्याय में इश्क हक़ीकी को चौगान और गेंद के प्रतीक द्वारा स्पष्ट किया गया है। मसनवी के हर अध्याय में नये छन्द है, और इन छन्दो मे कुछ तो ऐसे (जैसे मुतक़ारिब, मुसम्मन, सालिम) भी है जिनके सम्बन्ध में कहा जाता है कि उनका प्रयोग खुसरो के पूर्व किसी ने किया ही नही था। नुह सिपहर का भाषाविज्ञान की दृष्टि से भी महत्त्व है। इसमें उस काल की प्रचलित भाषाओं के नामों की सूची है तथा और भी कई बातें कही गयी हैं। इलियट के अनुवाद के आधार पर खुसरो द्वारा कही गयी बातो को इस रूप मे रखा जा सकता है--चूंकि मैं भारत में पैदा हुआ हूँ अत: यहाँ की भाषा के सम्बन्ध मे कुछ कहना चाहता हूं। इस समय, यहाँ प्रत्येक प्रदेश मे ऐसी विचित्र एवं स्वतन्त्र भाषाएं प्रचलित हैं जिनका एक-दूसरे से सम्बन्ध नही है। ये है—सिंदी (सिन्धी), लाहौरी (पंजाबी), कश्मीरी—डूगरी (डोंगरी), धुर समुन्दर (कन्नड़), तिलंग (तेलुगु), गुजरात (गुजराती), मलाबार (तमिल), गौड़ (उत्तरी बंगला), बंगाल (दक्षिणी बँगला), अवध (पूर्वी हिन्दी), दिल्ली तथा उसके आस-पास की भाषा (पश्चिमी हिन्दी)। ये सभी हिन्दी भाषाएँ हैं जो प्राचीन काल मे ही जीवन के सामान्य कार्यों के लिए, हर एक प्रकार से, व्यवहृत होती आ रही हैं। यदि तथ्यो को ध्यान मे रखकर गम्भीरता से विचार किया जाय तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि हिन्दी, फारसी से निम्न कोटि की नही है। यह अरबी की अपेक्षा जिसका सभी भाषाओं मे प्रमुख स्थान है, निम्न कोटि की है। भाषा के रूप में अरबी का एक पृथक् स्थान है और कोई भी अन्य भाषा इसके साथ सम्मिलित नहीं की जा सकती। शब्द-भण्डार की दृष्टि से फ़ारसी अपूर्ण भाषा है और बिना अरबी की छौंक के यह अच्छी नही लगती। चूंकि अरबी विशुद्ध तथा फ़ारसी मिश्रित भाषा है, अत: यह कहा जा सकता है कि एक आत्मा है तो दूसरा शरीर। अरबी में कुछ भी सम्मिलित नही किया जा सकता, किन्तु फ़ारसी में सब प्रकार सम्मिश्रण संभव है। हिन्द की भाषा अरबी के समान है क्योकि इसमे भी किसी प्रकार का मिश्रण नही किया जा सकता। यदि अरबी में व्याकरण तथा वाक्य-विन्यास है तो हिन्दी में भी उससे एक अक्षर कम नही है। यदि आप यह प्रश्न करें कि हिन्दी में भी क्या अलंकारशास्त्र तथा विचार-प्रकाशन के अन्य विज्ञान हैं तो इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि इस सम्बन्ध मे भी वह

किसी तरह कम नहीं है। यह ध्यान देने की बात है कि यहाँ 'हिन्दी' का अर्थ आज की हिन्दी न होकर कदाचित् संस्कृत है।

(१०) तुग़लकनामः—२७१७ छंदों की इस ऐतिहासिक मसनवी को खुसरो ने अपनी मृत्यु के कुछ दिन पूर्व पूरा किया था। इसका महत्त्व काव्यत्व की दृष्टि से कम और इतिहास की दृष्टि से अधिक है। कुतुबुद्दीन के बारे में शुरू करके इसमें ग़यासुद्दीन तुग़लक की चढ़ाई, उसकी जीत, गद्दी पर बैठना आदि वर्णित हैं। इसमे काफ़ी हिन्दी शब्दों का प्रयोग हुआ है। पहले यह मसनवी ग़ायब हो गयी थी। बाद में जहाँगीर के समय में इसकी एक प्रति मिली, किन्तु उसके आरम्भ और अन्त के अंश फटे थे। कहा जाता है कि जहाँगीर के समय के एक कवि हयाती ने खडित अंशों को पूरा किया।

(११) मसनवी शिकायतनामा मोमिनपुर पटियाली—इसमें पटियाली की शिकायत तथा अफ़गानों की ज्यादतियों का वर्णन है। यह बाद में मिली है।

ग़ज़लें

खुसरो ने ग़ज़ले भी काफ़ी लिखी है। 'ग़ज़ल' शब्द का सम्बन्ध अरबी माद्दा 'ग़ैन-ज़े-लाम' से है, जिसका अर्थ 'औरतों से बातें करना', 'औरतों के बारे में बातें करना', 'जवान औरतों या मर्दों की बातें करना' या 'औरतों के साथ खेलना' आदि कहा गया है। पहले ग़ज़लों का विषय प्रेम हुआ करता था। बाद में मर्सिये, मद्ह, हज्व आदि भी इसमें लिखे जाने लगे। ख़ुसरो ग़ज़लगोई को कोई खास अह-मियत नही देते थे, इसीलिए अपनी ग़ज़लों को क्रम से संगृहीत करने की ओर उनका ध्यान नही गया। यों यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि अब वे अपनी ग़ज़लो के कारण ही अधिक प्रसिद्ध है। उनकी ग़ज़लें बड़ी प्रभावशाली हैं। जहाँगीर ने अपनी जीवनी में लिखा है कि एक बार किसी ने खुसरो की ग़ज़ल सुनी और इतना प्रभावित हुआ कि उसकी मृत्यु हो गयी। खुसरो अच्छे संगीतज्ञ थे, इसी कारण उनकी ग़ज़लों में ग़ज़ल की पूरी रवानी है। बह्र, क़ाफ़िए, शब्द सभी के चुनाव में संगीतात्मकता का ध्यान रखने से इनका आकर्षण और बढ़ गया है। खुसरो के नाम पर प्रचलित ग़ज़लों के बारे मे यह कहना कठिन है कि कौन उनकी हैं, और कौन दूसरो की, या उनकी सारी ग़ज़लें उनमें हैं भी या नही। नीचे खुसरो की एक ग़ज़ल शब्दानुवाद के साथ यहाँ दी जा रही है—

ऐ तुर्क कमा अबरूं मन कुश्तय अबरूयत्
मुल्के हमहिन्दी चीं बे बेहम ब यके मूयत्
गुफ़्ती कि बदीं सूहा ग़ममाक चे मीं गरदी
आवारा दिले दारम दर हलकये गेसूयत्
मस्जिद चे कुम चंदीं, आख़िर चे नमाज़स्ती

रूयम् बसूये क़िब्ला दिल जानिबे अबरूयत्
शब हा हम कस खुफ़्ता जुज़ मन की जे बेख़ाबी,
अफ़सानये दिल गोयम दरपेशे सगे कूयत्
बूबे गुल अज़ी पेशम बर बाग़ न मूबे रह
बादे ब वज़ीद अज़तो गुमरह् शुदम् अज़ बूयत्
गह् नामे गुले गीरम गह् यादे गुलिस्ताने
ज़ीं गून दरंदाज़म हरजा सख़ुन अज़ रूयत्
सर दर ख़मे चौगानत राज़ीस्त बदीं ख़ुसरो
आँ बख़्त केरा कादर, सर तर ख़मे बाज़ूयत् ।

(ए वह माशूक, जिसकी भौं कमान की तरह है, मैं तेरी भौं का कत्ल किया हुआ हूँ। हिन्द और चीन का कुल मुल्क तेरे एक बाल के बदले में मैं देता हूँ। तू कहता है कि इस तरह रंजीदा क्यो फिरता है। मैं तेरे ज़ुल्फ़ों के हल्के (गोल छल्ले) मे अपना आवारा दिल रखता हूँ (अर्थात् मेरा दिल उसी मे लगा है)। मस्जिद मे क्या जाऊँ मैं, आखिर यह कैसी नमाज़ है कि मेरा चेहरा तो काबे शरीफ़ की तरफ़ है और दिल तुम्हारे भौं की तरफ़। रातों में सब सोते रहते हैं, सिवा मेरे। नीद उचटने से तुम्हारी गली के कुत्ते से अपने दिल की कहानी कहता रहता हूँ। इससे पहिले फूल की खुशबू ने बाग़ में मुझे रास्ता दिखलाया। एक हवा जो तुम्हारी तरफ़ से चली, तो मैं तेरी महक से गुमराह हो गया। कभी तो फूल का नाम लेता हूँ और कभी बाग़ का। इसी तरह हर जगह तुम्हारे चेहरे की बात मैं करता रहता हूँ। तेरे चौगान के ख़म में सर मेरा राज़ी है, यह किसके भाग्य हैं कि सर तुम्हारे बाज़ू के ख़म में लाये।)

एक ग़ज़ल हिन्दी में भी मिलती है, जो आगे संग्रह मे दी जा रही है।

गद्य

(१) **एजाज़े ख़ुसरवी**—इस नाम का अर्थ है 'खुसरो की आजिज़ करने वाली बातें'। ख़ुसरो ने अपनी गद्य कृतियों का प्रारंभ इसी से किया, यद्यपि यह पूरी तरह संपादित हुई ७१६ हिजरी में जब वे ७० वर्ष के हो चुके थे। पुस्तक मे प्रारम्भ में एक भूमिका है। इसके पाँच भाग हैं। मूलतः पुस्तक ६८२ हिजरी तक लिखी जा चुकी थी। 'एजाज़े खुसरवी' से स्पष्ट है कि खुसरो एक उच्च कोटि के कवि होने के साथ-साथ एक सफल एवं प्रभावशाली गद्यकार भी थे। उनके क़ाफ़ियेदार गद्य के जुम्ले अनुप्रास, श्लेष, उपमा तथा रूपक आदि से अलकृत हैं। इतिहास, साहित्य तथा भाषाशास्त्र आदि कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण यह ग्रन्थ निज़ामुद्दीन औलिया की वन्दना से शुरू होता है। उसके बाद फ़ारसी की गद्य-शैलियों का विवेचन है। ख़ुसरो ने फ़ारसी गद्य-शैली के ६ वर्ग बनाए हैं, जैसे विद्वानों,

सूफ़ियों, सामान्य लोगों, मजदूरों तथा मसखरों आदि की शैली। इस प्रसंग में उन्होंने अपनी शैली पर प्रकाश डालते हुए बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा है कि उनकी जैसी शैली अन्य गद्यकारों के लिए सम्भव नहीं। इस ग्रन्थ के विभिन्न भागों मे अनेक प्रकार के पत्र, शाही फ़रमान, खुसरो द्वारा बनाई गयी अरबी-फ़ारसी की कहावतें, तथा ज्योतिष, खगोल, संगीत, खेल, हिकमत तथा धर्मविषयक विवेचन आदि हैं। पाँचवें भाग में अत्यन्त विनोदपूर्ण शैली मे प्राय. मित्रों को लिखे गये पत्र है। कुछ पत्रो मे कंजूस मालिकों की हँसी उड़ायी गयी है।

गद्य शैली की दृष्टि से यह ग्रन्थ बहुत महत्त्वपूर्ण है और बहुतों के लिए यह एक आदर्श का काम करता रहा है।

(२) **तारीखे अलाई या खजानुल फ़तूह**—अलाउद्दीन खिलजी के समय का यह एक छोटा-सा इतिहास है, जिसमें ६९५ हिजरी से ७११ हिजरी तक की घटनाएँ ली गयी हैं। खुसरो ने इतिहास को तोड़े-मरोड़े बिना यथावत् रखा है। 'ख़ज़ानुल फ़तूह' का अर्थ है 'फ़तहों का ख़ज़ाना'। इसमें देवगिरि, दिल्ली, गुजरात, मालवा, चित्तौड़ आदि के आक्रमणों एवं जीतो का वर्णन है। साथ ही अलाउद्दीन का शासन-प्रबन्ध, भवन-निर्माण, जनता के सुख-शान्ति के लिए उसके द्वारा किये गये यत्न आदि का भी उल्लेख है। उस काल के इतिहास की यह एक मात्र पुस्तक है। इस पुस्तक की शैली बड़ी ही क्लिष्ट है, किन्तु साथ ही इतिहास और साहित्य का इसमें सुन्दर समन्वय है। यह ७११ हिजरी मे लिखी गयी थी।

(३) **अफ़ज़लुल फ़वायद**—इसका अर्थ है 'सबसे अच्छा फ़ायदा।' ख़्वाजा हसन ने हज़रत निजामुद्दीन औलिया से सम्बन्धित एक पुस्तक (उनकी तारीफ़ तथा उनकी बातों की) लिखी थी। उसी की देखादेखी, खुसरो ने यह पुस्तक लिखी, जिसमें औलिया की तारीफ़, उनके उपदेश, कुछ धार्मिक प्रश्नों के औलिया द्वारा दिये गये उत्तर, उनके परिवार के एवं उनके पास आने वालों के सम्बन्ध में कुछ बातें तथा खानकाह या आश्रम-सम्बन्धी बातें आदि है। खुसरो ने इस पुस्तक का पहला भाग ७१९ हिजरी में (अर्थात् मुरीद होने के ९ वर्ष बाद) लिखा था, दूसरा उन्होने लिखना शुरू किया, किन्तु लिख न पाये। खुसरो की यह पुस्तक रोचक तथा अच्छी है, किन्तु ख़्वाजा हसन की पुस्तक जैसी नही।

(४) **क़िस्स: चहार दरवेश**—किस्सों की यह पुस्तक खुसरो ने निजामुद्दीन औलिया को सुनाने के लिए लिखी थी। कहा जाता है कि एक बार हजरत औलिया बीमार थे। खुसरो उनका वक़्त काटने के लिए इन्ही क़िस्सों को सुनाया करते थे। स्वस्थ होने के बाद औलिया ने आशीर्वाद दिया कि जो भी बीमार आदमी इस क़िस्से को सुनेगा, स्वास्थ्य-लाभ करेगा। तब से इन क़िस्सों का बहुत आदर होने लगा। उर्दू में इनके एकाधिक अनुवाद हो चुके हैं। सबसे प्रसिद्ध मीर अम्मन का 'बाग़ो बहार' है।

(५) **राहतुल मुहिब्बीन**—इस गद्य-ग्रन्थ में खुसरो ने निजामुद्दीन औलिया के उपदेशों का संग्रह किया है।

(६) **इनशाए खुसरो**—यह पत्रों का संकलन है।

(७) **मकाल: तारीखुल खुलफ़ा**—इस पुस्तक का न तो खुसरो से संबद्ध किसी पुरानी पुस्तक में उल्लेख है, और न इसकी कोई प्रति ही उपलब्ध है। टामस विलियम ने ओरियंटल बाइग्रैफ़िकल डिक्शनरी में खुसरो के प्रसंग में इसका उल्लेख किया है। उनके अनुसार यह पुस्तक १३५४ ई० मे लिखी गयी थी तथा इसमें ख़लीफ़ा, सूफ़ी आदि धार्मिक व्यक्तियों के वृत्तान्त थे।

खुसरो भारत के तो सबसे बड़े फ़ारसी के कवि हैं ही, पूरे फ़ारसी साहित्यकारों में भी उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका अनुमान एक छोटी-सी बात से लगाया जा सकता है। खुसरो किसी समय मुल्तान के हाक़िम सुल्तान मुहम्मद के यहाँ थे। सुल्तान मुहम्मद बहुत ही काव्य-प्रेमी थे। उन्होने उस समय के विश्व प्रसिद्ध ईरानी फ़ारसी कवि हाफ़िज को अपने दरबार में सम्मानित करने के लिए आमंत्रित किया। हाफ़िज नहीं आये और उन्होंने यह कहलाया कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ आ नहीं सकता। आपके यहाँ अमीर खुसरो जैसे बड़े कवि है। आप उनका सम्मान कीजिये, यही मेरा सम्मान होगा।

हिन्दी रचनाएँ

खुसरो प्रमुखत: फ़ारसी के कवि थे, किन्तु उन्हें हिन्दी में भी लिखने का शौक था। हिन्दी में उन्होने कितनी कविताएँ लिखीं, इस सम्बन्ध में निश्चय के साथ कुछ नही कहा जा सकता। औहदी साहब ने 'तजकिरे अरफ़ात' में लिखा है कि खुसरो ने जितना फ़ारसी में लिखा, उतना ही ब्रजभाषा में। यदि यह बात सही है तो कुछ तजकिरों के अनुसार खुसरो ने फारसी मे ३ लाख से ऊपर और चार लाख से कम अशआर लिखे हैं। गार्सां द तासी के अनुसार अमीन अहमद राजी कृत 'हफ़्त इक्लीम' में लिखा है कि खुसरो ने स्वयं अपने बारे मे कहा है कि मेरे छन्दों की संख्या पाँच लाख से कम किन्तु चार लाख से अधिक है। इन सबके आधार पर कहा जा सकता है कि उन्होंने हिन्दी में काफ़ी कुछ लिखा है। किन्तु जैसा कि पीछे भी सकेत किया गया है, वास्तविकता यह है कि उनके द्वारा हिन्दी या ब्रजभाषा मे इतना लिखे जाने की सभावना नहीं है। आज, विभिन्न परपराओं से प्राप्त उनके हिन्दी छन्दों की सख्या चार सौ से ऊपर नही है। यों जो रचनाएँ उनके नाम से मिलती हैं, या प्रचलित है, वे सारी-की-सारी उन्ही की हैं, यह मानने के लिए भी पुष्ट आधारों का अभाव है। बल्कि कुछ छन्दों के विषय मे—जैसे हुक्के, बन्दूक, चूड़ी, चिलम आदि की पहेलियाँ या मुकरियाँ—तो इस बात

के स्पष्ट प्रमाण है कि ये उनकी नहीं हैं। आगे यथास्थान इस विषय पर विचार किया जायेगा।

खुसरो की हिन्दी की कविताओं की कोई पुरानी पांडुलिपि अभी तक नहीं मिली है। १८५० की एक पांडुलिपि के लखनऊ में होने की सूचना मुझे मिली थी, किंतु खोजने पर उक्त प्रति का पता नहीं चला। तासी ने कई जिल्दों में उनके एक संग्रह के लखनऊ में होने का उल्लेख किया है, किन्तु अब वह भी अनुपलब्ध है। यों सभी बातों पर विचार करने पर उनकी हिन्दी रचनाओं के सम्बन्ध में चार बातें कही जा सकती है · (१) उन्होंने हिन्दी में कदाचित् बहुत अधिक नही लिखा। (२) जो लिखा भी उसका कोई संग्रह नही किया। जैसा कि स्वयं उन्होंने 'गुर्रतुलकमाल' की भूमिका मे संकेत किया है कि वे हिन्दी कविताएँ लिखकर कदाचित् बाँट दिया करते थे।[1] उनकी अधिकांश हिन्दी रचनाएँ गंभीर नहीं हैं, अत. काव्य-गरिमा से मंडित फ़ारसी रचनाओं के सामने, इनके प्रति खुसरो का उदासीन होना बहुत अस्वाभाविक नहीं। (३) खुसरो की आज जो हिन्दी रचनाएँ उपलब्ध है उनमे सारी-की-सारी उनकी नही हैं। अधिक संभव यह है कि उनकी हिन्दी रचनाओं मे कुछ तो खो गयी और कुछ अन्य लोगो की रचनाएँ उनकी रचनाओं मे मिल गयी क्योंकि ये रचनाए हमे मौखिक परम्परा से मिली हैं। इस प्रकार प्राप्त रचनाओं मे उनकी तथा अन्य लोगों की रचनाएँ मिली-जुली है। (४) प्राप्त रचनाओ की भाषा के आधार पर यह निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि उनका भाषिक रूप खुसरो का या उनके काल का नही है। ये रचनाएँ मौखिक परम्परा से आयी है, अत. भाषा में परिवर्तन के साथ-साथ उनमे परिवर्तन होता रहा है. और जो रूप आज उपलब्ध है वह प्रायः बहुत बाद का है। ऐसी स्थिति में इन रचनाओं की भाषा के आधार पर खुसरो की भाषा के बारे मे कुछ नहीं कहा जा सकता। इसलिए हम खुसरो की 'हिन्दी' पर विचार करने का प्रयास नही करेंगे।

कुछ पुराने ग्रन्थों में खुसरो की केवल फ़ारसी कविता के सम्बन्ध में विवरण मिलता है। इस आधार पर कुछ लोगो का यह विचार है कि उन्होंने हिन्दी में कविता की ही नही, और उनके नाम पर जो कुछ प्रचलित है वह दूसरो की रचना है। किन्तु ऐसी धारणा साधार नही है। जैसा कि पीछे दिखाया जा चुका है, खुसरो ने 'गुर्रतुलकमाल' की भूमिका मे लिखा है कि उन्होंने हिन्दी मे कविता की है, किन्तु उसका विशेष महत्त्व नही था, अतः उनका सग्रह नही किया और

---

१ जुज्वे चंद नज्म-ए-हिंदवी नीज़ नज़रए-दोस्तां करदा शुदा अस्त। ईं जा हम नदीगरे बस कर्दम व नज़र "अस्त कि लफ्ज़-ए-हिंदवी दर पारसी-ए-लतीफ़ आवुर्दन बन्दी लुत्फ़े नदारद मगर ब ज़रूरत ए-आं के जाय ज़रूरत आवुर्दा शुद।

मित्रों में बाँट दिया करते थे। इसके अतिरिक्त 'गुर्रंतुलकमाल' की भूमिका में एक ऐसा शेर है जो फ़ारसी और हिन्दी दोनो का हो सकता है :

आरी आरी हमा बियारी आरी
मारी मारी बिरह की मारी आरी

इस रूबाई मे भी हिन्दी का प्रयोग है :

रफ़्तम् ब तमाशाय कनारे जूये
दीदम ब लबे आब जने हिंदुये
गुफ़्तम सनमा बहाय ज़ुल्फ़त चे बुवद ।
फ़रियाद बराउर्द कि दुर दुर मुये

अर्थात् एक नहर के किनारे मैं सैर करने गया। वहाँ मैंने एक हिन्दुस्तानी औरत देखी। मैंने पूछा—'माशूका, तुम्हारे बालो की कीमत क्या है?' वह झुंझलाते हुए बोली, 'दुर दुर मुये' या 'मोती मोती एक बाल' अर्थात् 'एक बाल की क़ीमत एक मोती'।

इस प्रकार उनके द्वारा हिन्दी मे कविता किए जाने पर प्रश्नवाचक चिह्न नही लगाया जा सकता।

खुसरो की प्राप्त हिन्दी कविताएँ निम्नलिखित बारह वर्गों मे रखी जा सकती हैं—

१. पहेलियाँ
   (क) अतर्लापिका
   (ख) बहिर्लापिका
२. मुकरियाँ
३. निस्बते
४. दोसखुन
   (क) हिन्दी
   (ख) फारसी और हिन्दी
५. ढकोसले
६. गीत
७. क़व्वाली
८. फ़ारसी-हिन्दी मिश्रित छन्द
९. सूफ़ी दोहे
१०. ग़ज़ल
११. फुटकल छन्द
१२. खालिकबारी

१. पहेलियाँ

ारत में पहेलियों की परम्परा बहुत पुरानी है। हमारे प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में त्र-तत्र बहुत-सी पहेलियाँ हैं। ब्राह्मणों, उपनिषदों और कहीं-कहीं काव्यों तक ं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में पहेलियों के दर्शन हो जाते हैं। पहेलियाँ मूलतः नता की चीज है। साहित्यिक पहेलियाँ उन लौकिक पहेलियों की ही अनुकरण ं। खुसरो ने भी कदाचित् लोक के प्रभाव से ही पहेलियों की रचना की। इतना ी नहीं, लोक-प्रचलित और खुसरो की, दोनों ही प्रकार की पहेलियों में कुछ तो बिल्कुल एक ही रूप में मिलती हैं। नहीं कहा जा सकता कि इस प्रकार की हेलियाँ मूलतः लोक-साहित्य की है या अमीर खुसरो की।

खुसरो की पहेलियों को दो वर्गों में रखा जा सकता है। कुछ पहेलियाँ तो सी है जिनका उत्तर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में पहेली में दिया रहता है, जैसे—

श्याम बरन और दांत अनेक
लचकत जैसे नारी।
दोनों हाथ से खुसरो खींचे
और कहे तु आ री।

यहाँ छन्द की अन्तिम पंक्ति के अन्तिम दो शब्द ही उत्तर हैं। इस प्रकार की हेलियों को 'अन्तर्लापिका (अर्थात् जिसका उत्तर पहेली में ही हो) या 'बूझ हेलियाँ' (जिनके भीतर ही जिन्हें बूझ लिया गया हो) कहा जाता है।

खुसरो की 'बूझपहेलियों' के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं। कुछ में तो उत्तर क ही शब्द में रहता है। जैसे—

बाला था जब सबको भाया
बढ़ा हुआ कुछ काम न आया
खुसरो कह दिया उसका नावँ।
अर्थ करो नहिं छोड़ो गाँव।

समें उत्तर है 'दिया'। किन्तु कभी-कभी उत्तर के लिए दो शब्दो को मिलाना ड़ता है। जैसे ऊपर की 'आरी' वाली पहेली में 'आ' और 'री' को मिलाने से त्तर मिलता है।

खुसरो की पहेलियों का दूसरा वर्ग उन पहेलियों का है जिनका उत्तर पहेलियों नहीं रहता। जैसे—

लोहे के चने दांत तले पाने हैं उसको।
खाया वह नहीं जाता, पर खाते हैं उसको।

—रुपया

ा प्रकार की पहेलियों को 'बिनबूझ' (जो बूझी नही गई है) या 'बहिर्लापिका'

(जिसका उत्तर पहेली से बाहर हैं) कहते हैं।

खुसरो के नाम से प्रसिद्ध पहेलियों में, उनके अन्य हिन्दी छन्दो की तरह ही कौन प्रामाणिक है और कौन नही, यह कहना बहुत कठिन है।

गार्सां द तासी ने अपने इतिहास मे लखनऊ के तोपखाने मे खुसरो की पहेलियों की दस या बारह छोटी-छोटी हस्तलिखित प्रतियों के होने का उल्लेख किया है, किन्तु अब उनके बारे में कुछ भी ज्ञात नही है। तासी ने उनमें से एक उदाहरण दिया है, जो इस प्रकार है—

पंसारी का तेल
कुम्हार का बर्तन,
हाथी की सूँड,
नवाब का पताका।

—दीपक

खुसरो के नाम पर प्रचलित कुछ पहेलियाँ तो निश्चित रूप मे उनकी नही हैं। उदाहरणार्थ—

(क) **अग्नि कुंड में घिर गया, औ जल में किया निकास।**
परदे परदे आवना अपने पिया के पास।

—हुक्के का धुआँ

(ख) **नयी को ढीली पुरानी को तंग।**
बूझो तो बूझो नहीं चलो मेरे संग।

—चिलम

(ग) **हाथ में लीजै, देखा कीजै।**

—शीशा

(घ) **एक नार वो ओखद खाए।**
जिस पर थूके वो मर जाए।
उसका पिया जब छाती लाए।
अन्धा नहीं तो काना हो जाए।

—बन्दूक (निशाना लगाते समय एक आँख बन्द कर लेते है)।

(ङ) **खटाख-पटाख कबसे**
हाथ पकड़ा जबसे।
आह-ऊह कब से
आधा गया तब से
वाह-वाह कब से
पूरा गया तब से।

—शीशे की चूड़ी

वस्तुतः हुक्का, चिलम, शीशा, बन्दूक आदि का प्रचार खुसरो के बाद में हुआ।

२. मुकरियाँ

मुकरियाँ भी एक प्रकार की पहेलियाँ ही होती हैं। खुसरो की मुकरियाँ चार पंक्तियों में होती है। इनमें प्रथम तीन पंक्तियों में ही पहेली होती है और चौथी पंक्ति में पहले तो खुसरो 'ए सखी साजन' रूप में पहेली का उत्तर देते है, फिर 'मुकरकर' या 'इनकार करके' वास्तविक उत्तर देते हैं। उदाहरण के लिए—

रात बिना जाको है गौन
खुले द्वार वह आवे भौन
वाको हर एक बतावे कौन
ऐ सखी साजन, ना सखी पौन

यहाँ प्रथम तीन पक्तियों का वर्णन ऐसा है कि वह 'साजन' या 'पति' पर भी लागू होता है, और 'पवन' अर्थात् 'हवा' पर भी। इसलिए चौथी पंक्ति में दिए गए दोनों उत्तर सार्थक हैं। खुसरो की काफ़ी पहेलियाँ ऐसी ही हैं। इन पहेलियों की रोचकता इसी में है कि वे 'साजन' पर भी लागू होती हैं, तथा किसी 'और' पर भी। वास्तविक उत्तर यह 'और' ही होता है।

यों 'मुकरियों की यह दो पर लागू होने की बात' सभी पर लागू नही होती। ऐसी मुकरियाँ भी हैं जो आंशिक रूप से ही 'साजन' पर लागू होती है—

देखत में है बड़ उजियारी
है सागर से आती प्यारी
सिगरी रैन संग ले सोती
ऐ सखी साजन ना सखी मोती

यहाँ प्रथम दो पंक्तियाँ केवल 'मोती' पर लागू होती हैं। केवल तीसरी पंक्ति 'साजन' तथा 'मोती' दोनों पर लागू होती है।

कुछ मुकरियाँ ऐसी भी हैं जो किसी 'और' पर तो लागू होती है, किन्तु 'साजन' पर नही। हाँ वे साजन के किसी अंग पर अवश्य लागू होती हैं। उदाहरण के लिए इस संग्रह की ७वीं मुकरी देखी जा सकती है।

कुछ मुकरियाँ ऐसी भी हैं जो केवल किसी 'और' पर लागू होती हैं, साजन पर बिल्कुल नहीं। केवल अन्यों के सादृश्य पर उनमें भी 'ऐ सखी साजन' जोड़ दिया गया है। उदाहरण के लिए इस संग्रह की तीसरी मुकरी केवल 'मोर' पर लागू होती है, साजन पर बिल्कुल नही।

खुसरो की कुछ मुकरियाँ तो हँसी-मजाक की छौंक होते हुए भी शिष्ट हैं, किंतु कुछ मे तो अश्लीलता की गंध है, और कुछ अश्लील हैं। उदाहरण के लिए आगे संग्रह की १, ५, ७, २३ देखी जा सकती हैं।

खुसरो की मुकरियों से ही कदाचित् प्रेरणा ग्रहण करके भारतेन्दु ने भी कुछ नये जमाने की मुकरियाँ लिखी थीं। इनमें भी व्यंग्य और विनोद की मात्रा खूब है। उदाहरणार्थ—

सब गुरुजन को बुरा बतावै।
अपनी खिचड़ी अलग पकावै।
भीतर तत्व न, झूठी तेजी।
क्यों सखि साजन नहिं अँगरेजी।
भीतर-भीतर सब रस चूसे।
हँसि हँसि के तन-मन-धन मूसे।
जाहिर बातन में अति तेज।
क्यों सखि साजन नहिं अँगरेज।

पीछे हम लोग देख चुके हैं कि खुसरो के नाम से मिलने वाली पहेलियों में कुछ बाद की हैं। मुकरियों में भी कुछ ऐसी हैं। जैसे—

आप जले औ मोय जलावे।
पी-पी कर मोरे मुँह आवे।
एक मैं अब मारूँगी मुक्का।
ऐ सखि साजन ना सखि हुक्का।

मुकरियों को 'कहमुकरियाँ' (जिन्हें कहकर मुकर गया हो) भी कहा गया है।

३. निस्बतें

'निस्बत' अरबी भाषा का शब्द है, और इसका अर्थ है 'सम्बन्ध' या 'तुलना'। खुसरो ने 'निस्बत' नाम से जो लिखा है, वे भी एक प्रकार की 'पहेली' या 'बूझौवल' हैं। इनमें दो चीजों में 'सम्बन्ध' या 'तुलना' या 'समानता' ढूँढ़नी होती है। निस्बतों का मूल आधार है एक शब्द के कई अर्थ। उदाहरण के लिए 'घोड़ा' का एक अर्थ तो 'अश्व' है और दूसरा है 'बन्दूक का एक भाग'। इसी आधार पर खुसरो की एक निस्बत है—

जानवर और बन्दूक में क्या निस्बत है ?

उत्तर है 'घोड़ा'। ऐसे ही परदा, बाल, ताज तथा गोरी आदि बहुत से शब्दों के एकाधिक अर्थों के आधार पर खुसरो ने निस्बतें कही हैं।

यों तो पहेलियों तथा मुकरियों से भी शब्द के प्रति खुसरो की रुचि का पता चलता है, किन्तु 'निस्बतों' में वह रुचि और भी स्पष्ट है।

४. दो-सखुन

'सखुन' शब्द फ़ारसी भाषा का है, और इसका अर्थ है 'कथन' या 'उक्ति'।

ख़ुसरो के 'दो-सखुन' ऐसे हैं जिनमें दो कथनों या उक्तियों का एक ही उत्तर होता है। इसका भी आधार शब्दों के दो-दो अर्थ हैं।

उदाहरण के लिए—

पंडित क्यों न नहाया ?
धोबिन क्यों मारी गई ?

दोनों का उत्तर है 'धोती न थी।' पहले प्रश्न के उत्तर में 'धोती' का अर्थ है 'पहनने का वस्त्र विशेष' और दूसरे प्रश्न के उत्तर मे 'धोती', 'धोना' का वर्तमानकालिक कृदन्त 'धोता' का स्त्रीलिंग रूप है।

ख़ुसरो के 'दो-सखुन' भाषा के आधार पर दो प्रकार के हैं। एक तो हिन्दी में हैं, और दूसरे ऐसे हैं जिनकी पहली पंक्ति फ़ारसी भाषा में है और दूसरी हिन्दी में।

भाषा के आधार पर किए गए भेद के अतिरिक्त भी ख़ुसरो के 'दो-सखुनों' के दो और भेद भी किए जा सकते हैं। एक प्रकार के 'दो-सखुन' तो वे हैं जिनमें उत्तर का काम देने वाले एक शब्द के, बिना उच्चारण-भेद के फारसी और हिन्दी में दो अर्थ होते हैं, और इस प्रकार वह दोनों प्रश्नो का उत्तर हो जाता है। उदाहरणार्थ —

क़ूवते रूह चीस्त
प्यारी को कब देखिए ?

—सदा

इसमें पहली पंक्ति का अर्थ 'प्राण या आत्मा का बल क्या है ?' इस प्रसंग मे 'सदा' को फ़ारसी शब्द मानना होगा और इसका अर्थ होगा 'आवाज़' या 'शब्द'। दूसरी पंक्ति के प्रसंग में जो हिन्दी मे है, 'सदा' को हिन्दी शब्द मानना होगा और इसका अर्थ होगा 'सर्वदा' या 'हमेशा'। यहाँ हम देखते हैं कि 'सदा' का उच्चारण एक ही रहता है।

दूसरे प्रकार के 'दो-सखुन' वे हैं जहाँ उत्तर के शब्द का दो उच्चारण हो जाता है। उदारहण के लिए—

सौदागर बच्च: रा चे मी बायद
बूचे को क्या चाहिए ?

—दो कान

यहां पहली पंक्ति का अर्थ है 'सौदागर के बच्चे को क्या करना चाहिए।' इस अर्थ में 'दूकान' पढ़ना होगा। किन्तु दूसरे प्रसंग में इसका उच्चारण 'दो कान' (दो कान) हो जाएगा अर्थात् 'दू' का उच्चारण 'दो' हो जाएगा तथा बीच में संगम या विवृति (juncture) आ जाएगी। इस तरह उच्चारण-भेद से शब्द के दो अर्थ हो जाते हैं। वस्तुत: फारसी लिपि की अस्पष्टता या पढ़ने की दृष्टि से अनेकरूपता का ख़ुसरो ने ऐसे दो-सखुनों में लाभ उठाया है। नागरी लिपि की दृष्टि से दूसरे वर्ग

160009
29.8.84

के 'दो-सखुनों' को 'दो-सखुन' नही माना जा सकता। 'दो-सखुनों' से खुसरो के शब्दों के साथ खिलवाड़ करने के शौक का पता चलता है।

५. ढकोसले

'ढकोसला' का प्रचलित अर्थ आडम्बर, पाखंड या ऊपरी ठाट-बाट है, किन्तु इसके साथ ही इसका एक विशिष्ट अर्थ भी है। 'ढकोसला' उस विशेष प्रकार की कविता को भी कहते हैं, जिसका कोई अर्थ न हो और जो इतनी बेतुकी हो कि सुन-कर हँसी छूटे। ढकोसलों को उनके अनमेल होने के कारण 'अनमेलियाँ' भी कहते हैं।

'अनमेलियाँ' या 'ढकोसला' नाम से ग्रामीण जनता परिचित नहीं है, किन्तु लोक-साहित्य में इस प्रकार की उक्तियों का पर्याप्त प्रचलन है। विशेषतः भोजपुरी प्रदेश के चमारों या कहारों की नाच का विदूषक इस प्रकार के छन्दों से लोगों का खूब मनोरंजन करते हैं। उदाहरणार्थ कुछ लोक-साहित्य के ढकोसले यहाँ देखे जा सकते हैं—

भैंसा चढ़ा बबूर पर लप-लप गूलर खाय
पोंछ उठा के देखा तो पूरनमासी के तीन दिन।'

या

रजवा के बेटी भुजावे चलल राब
बसुला-रुखानी बाय ना पछोरों कैसे दूध।

दोनों ही छन्द बिना सिर-पैर के है। भैंसा न तो बबूल पर चढ़ सकता है और न बबूल पर गूलर का फल मिल सकता है। इसी प्रकार राजा की बेटी स्वयं कोई अन्न भुनाने (भुजाने) नहीं जाएगी और न राब (गुड़) भुनाया जाता है। ऐसे ही दूध पछोरा नहीं जाता और न फटकने (पछोरने, पिछोड़ने) में बसूला-रुखानी की आवश्यकता पड़ती है।

लोक-साहित्य में ढकोसलों का प्रचलन बहुत पहले से है। खुसरो ने संभवतः लोक-साहित्य से ही प्रेरणा ग्रहण कर कुछ ढकोसले लिखे थे। आज खुसरो के ढकोसलों की कोई पुरानी पोथी नहीं मिलती, जिसके आधार पर निश्चय के साथ खुसरो के ढकोसलों को अलग रखा जा सके। इधर प्रायः मौखिक रूप से सुनकर लोगों ने उनके ढकोसलों को संगृहीत किया है। इसी कारण बहुत से लोक-साहित्य में आने वाले ढकोसले भी पुस्तकों मे उनके नाम से मिलते है। शायद इसी घालमेल

१. यह लोक प्रचलित ढकोसला यों ही या कुछ पाठांतर के साथ खुसरो के नाम से मिलता है।

को ध्यान में रखकर पं० रामनरेश त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक 'ग्राम-साहित्य'[1] मे ख़ुसरो के ढकोसलों को स्थान दिया है। वहाँ भी अलग न रखे जाकर वे लोक में प्रचलित ढकोसलों के साथ ही रखे गए है।

६. गीत

ख़ुसरो विद्वान् और कवि होने के साथ-साथ अच्छे संगीतज्ञ भी थे। किंवदन्ती है कि उन्होंने बहुत से गीत लिखे थे, जिनमें से कुछ ही आज उपलब्ध हैं। ये गीत सूफ़ी भावना तथा लोकगीतों से प्रेरित हैं। इनमें से कुछ आगे दिए गए हैं। संगीतज्ञों से और भी कुछ गीत सुनने को मुझे मिले जो उनके अनुसार ख़ुसरो के हैं, किन्तु मैंने उन सभी को संग्रह मे नहीं लिया है। वस्तुत: ऐसे गीतों की संख्या काफ़ी बड़ी है और उन्हें ख़ुसरोकृत मानने का कोई विशेष आधार नहीं है।

७. क़व्वाली

क़व्वाल लोग आज बहुत-सी ऐसी क़व्वालियाँ गाते है जो अमीर ख़ुसरो की कही जाती हैं। इनमें कुछ मे ख़ुसरो का नाम स्पष्ट है, कुछ में अस्पष्ट है तथा कुछ मे नहीं है। यह कहना कठिन है कि इनमे कौन-कौन-सी उनकी हैं तथा कौन-कौन-सी उनकी नहीं हैं। कुछ क़व्वालों ने मुझे यह भी बताया कि ख़ुसरो का नाम चिपका कर दूसरो की क़व्वालियाँ भी उनकी बनाकर कुछ क़व्वाल गाते हैं। इस तरह उनकी क़व्वालियों की प्रामाणिकता काफ़ी संदिग्ध है। इस संग्रह में चार क़व्वालियाँ दी गई हैं। इनमें कुछ प्रतीकात्मक भी हैं जिनमें हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया को प्रियतम तथा ख़ुसरो को प्रियतमा रूप में रखा गया है। अर्थात् सूफ़ी-परंपरा से अलग संत परंपरा वाली प्रतीकात्मकता इनमें है।

८. फ़ारसी-हिंदी मिश्रित छंद

ख़ुसरो ने फ़ारसी-हिंदी मिश्रित छंद भी लिखे थे। यों इस प्रकार की उनकी थोड़ी ही रचनाएँ आज उपलब्ध हैं। जो छंद उपलब्ध हैं, उनमें फ़ारसी वाक्यों में तो वाक्य-सौंदर्य पर्याप्त है, जैसे—

ज़रगर-पिसरे चू माह पारा[2]

किन्तु हिन्दी वाक्य बहुत सामान्य कोटि के हैं। यथा—

न आप आवें न भेजें पतियाँ

इस श्रेणी की कविता का विषय प्रेम है।

---

१. ग्राम-साहित्य, भाग ३, पृ० ३२८।

२. चाँद के टुकड़े की तरह सोनार का लड़का।

९. सूफ़ी दोहे

ख़ुसरो के कई फुटकर दोहे मिलते हैं। इनमें उनकी सूफ़ी और रहस्यवादी भावना की झलक मिलती है। फ़ारसी में ख़ुसरो की बहुत-सी मसनवियाँ मिलती हैं, जिनका सम्बन्ध सूफ़ी मत से है। उसी विचारधारा की कुछ बूँदें इन दोहों में आ गई हैं। सम्भव है हिन्दी में भी उन्होंने कोई मसनवी लिखी हो और ये फुटकल दोहे, उसी के अंश हों।

१० ग़ज़ल

उनके नाम से हिन्दी में एक ग़ज़ल भी मिलती है जो यदि सचमुच उनकी है तो हिन्दी की प्राचीन ग़ज़ल कहलाने की अधिकारिणी है।

११. फुटकल छन्द

उपर्युक्त के अतिरिक्त ख़ुसरो के कुछ फुटकल छन्द भी मिलते हैं, जिनमें एक तो आँख के दर्द का नुस्ख़ा है।

१२. ख़ालिकबारी

इस बारे में आगे ख़ालिकबारी के पाठ के साथ विचार किया गया है।

विषय

ख़ुसरो के हिन्दी छन्द भगवान् एवं निज़ामुद्दीन औलिया से लेकर चम्मू भटियारी और मक्खी-मच्छर तक अनेकानेक विषयों से सम्बद्ध हैं। कुछ विषय हैं : (प्रकृति) आसमान, बादल, बिजली, चाँद, तारा, हवा; (पक्षी-जानवर) मैना, तोता, कुत्ता, घोड़ा, हाथी, बन्दर; (कपड़े) अँगिया, पंजामा, चूनरी, रुमाल, लहँगा; (शृंगार) पान, मिस्सी, काजल, अंजन, चूड़ी, हार; (औज़ार-हथियार) आरी, बर्छी, तलवार, ढाल; (शरीर के अंग) आँख, नाख़ून, भौं; (बाजे) ढोल, नक्क़ारा; (धन) रुपया, पैसा; (खाद्य-सामग्री) अरहर, चना, भुट्टा, फूट, जामुन, केला, बादाम, कमरख; (मिश्रित) आरसी, छाता, कोयला, चौकी, लोटा, मोढ़ा, नाव पिंजड़ा, चरखा, झूला आदि।

रस

कुछ अपवादों को छोड़कर ख़ुसरो के हिन्दी छन्द मुख्यतः शुद्ध रस-काव्य के अन्तर्गत नहीं आते। उनकी मूल प्रवृत्ति है उक्ति-वैचित्र्य तथा शृंगार-मिश्रित चमत्कारप्रियता, और उनका उद्देश्य है मनोरंजन। यों उनके अनेक छन्द एवं

पंक्तियाँ अद्भुत एवं शृंगार रस से सम्बद्ध है। कुछ अन्य रसों को स्पर्श करने वाले छन्द भी यत्र-तत्र मिल जाते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं—

अद्भुत

इसके दर्शन पहेलियों में होते है। कुछ उदाहरण है—

(१) बीसों का सिर काट लिया
ना मारा ना खून किया

(२) एक अचंभा देखो चल
सूखी लकड़ी लागा फल
जो कोई इस फल को खावे
पेड़ छोड़ कहिं और न जावे

(३) जब काटो तब ही बढ़े
बिन काटे कुम्हिलाय

(४) जल से तरुवर उपजा एक
पात नहीं पर डार अनेक
इस तरुवर की सीतल छाया
नीचे एक न बैठन पाया

(५) चार अंगुल का पेड़ सवा मन का पत्ता
फल लगे अलग-अलग पक जाय इकट्ठा

(६) आग लगे फूले-फले, सींचत जावे सूख
मैं तोहिं पूछों ऐ सखी, फूल के भीतर रूख

शृंगार

खुसरो का फ़ारसी काव्य तो शृंगार रस से भरा-पूरा है, किन्तु उनके हिंदी छन्दों में सस्ते स्तर के अश्लील शृंगार के ही छन्द प्रायः हैं। 'कहमुकरियों' के छन्दों में यह प्रवृत्ति सामान्य रूप से मिलती है। कुछ उदाहरण हैं—

(१) कसके छाती पकड़े रहे
मुँह से बोले न बात कहे
ऐसा है कामिनि का रँगिया
ऐ सखि साजन सखि न अँगिया

(२) पड़ी थी मैं अचानक चढ़ि आयो
जब उतर्‌यो तो पसीनो आयो
सहम गई नहिं सकी पुकार
ऐ सखि साजन ना सखि बुख़ार

(३) न्हाय-धोय सेज मेरी आयो
ले चूमा मुंह मुंहहि लगायो
इतनी बात पर थुक्कम-थुक्का
(४) आठ अंगुल का है वह असली
उसके हड्डी न उसके पसली
लट्टाधारी गुरु का चेला
(५) उठा दोनों टांगन बिच डाला
नाप-तोल में देखा-भाला
(६) सगरी रैन छतिअन पर राखा
रंग रूप सब वाका चाखा
भोर भई जब दिया उतार
(७) छोटा-मोटा अधिक सुहाना
जो देखे सो होय दिवाना
कभी वह बाहर कभी वह अन्दर

कुछ छन्दो एवं पंक्तियों में स्तर का शृंगार रस भी है—

वियोग शृंगार

(१) सूनी सेज डरावन लागे, विरह अगिन मोहिं डस-डस जाए
(२) सखी पिया को जो मैं न देखूं
तो कैसे काटूँ अंधेरी रतियां

संयोग शृंगार

खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग
तन मेरो मन पीव को दोऊ भए एक रंग

हास्य

जब मोरे मन्दिर आवे
सोते मुझको आन जगावे
पढ़त-फिरत वह बिरह के अच्छर
ऐ सखी साजन ना सखी मच्छर

करुण

चकवा चकवी दो जने, उनको मार न कोउ
वो मारे करतार के, रैन बिछोही होउ

अलंकार

खुसरो जन्मजात कवि थे, और उनकी फ़ारसी कविता काव्यत्व की उच्चतम कसौटी पर खरी उतरती है। उनकी यह काव्य-प्रतिभा उनके हिन्दी में लिखित छन्दों में भी अभिव्यक्ति के स्तर पर प्रायः अपने पूरे वैभव के साथ है। उनकी अभिव्यक्ति अनेकानेक प्रकार के अलंकारो से संपुष्ट हुई है। वे भारत की अलंकार-परम्परा से पूर्णतः परिचित थे या नहीं, यह कहना तो कठिन है, किंतु उनमे हमारी परम्परा के अनेक अलंकार बड़े सुन्दर रूप में आए हैं। कुछ के उदाहरण हैं—

अनुप्रास—

एक नार वह दाँत दँतीली
पतली दुबली छैल छबीली

श्लेष

(क) सभंग पद
श्याम बरन औ दाँत अनेक
लचकत जैसे नारी
दोनों हाथ से खुसरो खींचे
और कहें तू आरी
(ख) अभंग पद
गोल मटोल औ छोटा मोटा
हरदम वह तो जमीं पर लोटा

यमक

है वह प्यारी सुन्दर नार।
नार नहीं है पर है वह नार।

रूपक

खुसरो की पहेलियों एव कहमुकरियो में रूपक एवं सांगरूपक का बहुत अधिक प्रयोग हुआ है। दो उदाहरण है—

(१) रात समय वह मेरे आवे
भोर भए वह घर उठ जावे
यह अचरज है सबसे न्यारा
ऐ सखी साजन ना सखी तारा।

(२) आगे-आगे बहिना आई, पीछे-पीछे भइआ
दाँत निकाले बाबा आए, बुरका ओढ़े मइया।

(यहाँ बिम्ब-सौन्दर्य भी द्रष्टव्य है।)

विभावना

एक कहानी मैं कहूँ तू सुन ले मेरे पूत
बिना परों वह उड़ गया, बाँध गले में सूत

प्रतीकात्मकता

खुसरो की कुछ क़व्वालियाँ प्रतीकात्मक है जिनमे 'खुसरो' आत्मा है तथा 'निजामुद्दीन औलिया' परमात्मा।

दोष---जैसा कि ऊपर के शृंगार रस मे सम्बद्ध छदो से स्पष्ट है खुसरो के नाम पर प्राप्त छदो मे अश्लील दोष बहुत अधिक है। इसी प्रकार पुनरावृत्ति और अप्रयुक्त दोष भी यत्र-तत्र है। किन्तु ये दोष खुसरो के है या अन्य लोगो ने खुसरो के छदो मे परिवर्तन-परिवर्धन करके इनको ला दिया है, यह कहना कठिन है।

छन्द

खुसरो के हिन्दी छंदो मे भारतीय परम्परा के दोहा, चौपाई आदि का तथा फ़ारसी परम्परा के भी कुछ बहरो का प्रयोग मिलता है, यद्यपि ये प्रयोग अनेक स्थानो पर नियमानुकूल नही है। आवश्यकतानुसार उनमे परिवर्तन कर लिया गया है। सभव है मौखिक परम्परा से आने के कारण लोगो द्वारा परिवर्तन-परिवर्धन मे कुछ अनियमितताएँ आ गई हो, और सभी का दायित्व खुसरो पर न हो।

(घ) आधुनिक भारतीय भाषाओं के प्रथम उल्लेखकर्ता

खुसरो साहित्यकार और संगीतज्ञ होने के साथ-साथ भाषाओ के एक जागरूक अध्येता भी थे। पीछे कहा जा चुका है कि उन्हे कई भारतीय और बाहरी भाषाओं का ज्ञान था—

मन ब-ज़बाँ हाए-कसाँ बेशतरे
कर्दा-अम अज़ तबए शिनासा गुज़रे'

(मैने कई भाषाओ से कुछ-कुछ परिचय प्राप्त किया है)

दानम् व दरयाफ़्ता न गुफ़्ता हम
जुस्तओ रौशन शुदा जाँ बेशो-कम'

(उन सभी के बारे मे मैंने जानकारी प्राप्त की है। उन्हें जानता और बोलता हूँ। मैंने उनकी खोज की है और उन्हें न्यूनाधिक रूप से जानता हूँ।)

भाषाओं के सामान्य ज्ञान के अतिरिक्त, जैसा कि उपर्युक्त छंद में संकेतित है, भाषाओं की शक्ति समृद्धि का भी उन्हे ज्ञान था। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'नुह सिपहर' (सर्ग ३, अध्याय ५) में उन्होने इसी ज्ञान के बल पर तुलनात्मक दृष्टि से अरबी, फ़ारसी, दरी, तुर्की, तथा संस्कृत भाषाओ की बात की है तथा संस्कृत को फ़ारसी और तुर्की से अच्छी भाषा बतलाया है—

इस्बाते-गुफ़्ते-हिंद ब-हुज्जत कि राजिअ अस्त
बर पारसी व तुर्की जि अल्फ़ाजे-खुशगवार'

(अच्छे शब्दो के कारण भारतीय भाषा के फ़ारसी और तुर्की भाषाओं से अच्छी होने की बात अब की जा रही है।)

'खिज़्र खाँ देवल रानी' मनसवी में भी वे कहते है कि हिंदवी फ़ारसी से कम नही- -न लफ़्ज़े हिंदवास्त अज़ फ़ारसी कम। 'एजाज़ेखुसरवी' मे वे हिन्दुस्तान

---

१. नुह सिपहर, ३-५-३।
२. वही, ३-५-४।
३. वही, ३-५-१

की ज़बान जो हिन्दुस्तान की तलवार (जो उस ज़माने में प्रसिद्ध थी) से ज्यादा तेज मानते हैं : अज तेग़े हिंदी बुर्रान्तर अस्त।

अरबी भाषा को वे सुव्यवस्थित बतलाते है। वे आगे कहते हैं उसका व्याकरण नियमित है, ताकि तू गलतियाँ न करे—

दर अरबी ज़ाबित-ए हस्त क़वी
नह्व ओ इलल ता ब ख़ताहा न रवी[1]

इस तरह वे भाषाओं के प्रति पर्याप्त जागरूक थे। यही कारण है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं के प्रथम उल्लेखकर्ता होने का उन्हे गौरव प्राप्त है। अपने ग्रंथ 'नुह सिपहर' में वे कहते है—

सिंदी ओ लाहौरी ओ काश्मीरी ओ कबर
घोर (धुर) समन्दरी[2] ओ तिलंगी ओ गुजर
मअबरी ओ गौरी ओ बंगाल ओ अवद
दिहली ओ पैरामनश अन्दर हमह हद
ईन हमह हिंदवीस्त कि जि अय्याम-ए-कुहन
आम्मह बकार अस्त ब हर गूनह सुखन[3]

अर्थात् सिंदी, लाहौरी, कश्मीरी, कबर, घोर (धुर) समन्दरी, तिलगी, गुजर, मअबरी, गौरी, बगाल, अवद, दिहली और उसके इर्द-गिर्द की, ये सभी भाषाएँ हिंदवी है और पुराने जमाने मे हर तरह की अभिव्यक्ति के लिए जन-साधारण के काम आती रही है—

इन नामों मे कुछ तो स्पष्ट है—

सिंदी = सिंधी	लाहौरी = पंजाबी
काश्मीरी = कश्मीरी	तिलंगी = तेलुगु
गुजर = गुजराती	बगाल = बंगला
दिहली = खड़ीबोली हिन्दी	

शेष नाम किन भाषाओ के लिए आए है बहुत स्पष्ट नही है। इन्हे पहचानने का प्रयास ग्रियर्सन ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भारतीय भाषा सर्वेक्षण' में किया है, किंतु मैं उनसे कुछ बातों में असहमत हूँ। पहला विवादास्पद नाम कबर है। ग्रियर्सन[4]

---

१ नुह सिपहर, ३-५-५

२. इसके दो पाठ उपलब्ध है : (क) घोर समन्दरी, (ख) धुर समन्दरी।

३. नुह सिपहर ३-५-७१-७३।

४ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया, खण्ड एक, भाग एक, पृष्ठ १ (भूमिका)। यहाँ भी उल्लेख्य है कि ग्रियर्सन ने खुसरो के मूल ग्रंथ को कदाचित् नही देखा था और उन्होंने इलियट की पुस्तक हिस्ट्री आफ इण्डिया (भाग-३, पृ० ५६२) के आधार पर लिख दिया था जैसा कि

इसका अर्थ **डोंगरी** करते हैं, किन्तु उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि **कबर** नाम **डोंगरी** के लिए क्यों प्रयुक्त हुआ है। मेरे विचार में पंजाबी भाषा की इस बोली के, स्वतंत्र व्यक्तित्व-विकास की सम्भावना, खुसरो के काल तक नहीं है, अतः खुसरो द्वारा प्रयुक्त यह **कबर** शब्द डोंगरी का नाम नहीं हो सकता। मुझे लगता है कि यह **कबर** शब्द तत्वतः कनर है, और इसका अर्थ **कन्नड़** भाषा है। वस्तुतः फ़ारसी लिपि बिंदु-प्रधान है। **कबर** तथा **कनर** के लेखन मे केवल इतना अन्तर है कि प्रथम मे बिंदु नीचे होगा तो दूसरे में ऊपर। यों कभी-कभी बिंदु नहीं भी देते और तब अनुमान से पढ़ना पड़ता है। लगता है कि बिंदु न दिए जाने के कारण ही अमीर खुसरो का **कनर** आगे चलकर **कबर** हो गया।[1] दूसरा अस्पष्ट शब्द **घोर समन्दरी** अथवा **धुर समन्दरी** (पाठांतर) है। ग्रियर्सन ने इसका **धुर समुन्दर** पाठ स्वीकार किया है, और इसका अर्थ **कन्नड़** माना है। वस्तुत. **धुर समुन्दर** या **घोर समुन्दरी** कन्नड़ के लिए नही आ सकता। कर्नाटक की स्थिति ऐसी नहीं है। उसकी तुलना में यह नाम केरल या तमिलनाडु के लिए अधिक उपयुक्त है। किन्तु तमिलनाडु की **तमिल** के लिए खुसरो में **मअबरी** शब्द आया है, और इस बात से सभी सहमत है, अतः घोर समन्दर या धुर समन्दर का प्रयोग केरल की मलयालम भाषा के लिए हो सकता है। यह उल्लेख्य है कि मलयालम भाषा तमिल से ९वीं सदी के लगभग अलग हो गयी थी। तीसरा इस प्रकार का शब्द **मअबरी** है। ध्वनि-साम्य से यह **मालबारी** लगता है किन्तु वस्तुतः है नही। मूलतः **मअबर** अरबी शब्द है, और इसका अर्थ है 'नदी आदि पार करने का स्थान'। इसी आधार पर अरबों ने **मअबर** का प्रयोग उस स्थान पर किया है, जहाँ से समुद्र पार करके लंका जाया जा सकता है, साथ ही यह पार्श्ववर्ती कारोमंडल तट के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। इस तरह स्पष्ट ही **मअबरी** तमिलनाडु की भाषा तमिल के लिए प्रयुक्त हुआ है। ग्रियर्सन ने भी इसका अर्थ यही माना है, यद्यपि वे इस शब्द के मूल अर्थ तथा प्रयोग आदि के विस्तार मे नही गए है। अगला शब्द **गौरी** है। यह गौड प्रदेश की भाषा के लिए प्रयुक्त हुआ जान पड़ता है। इसी आधार पर ग्रियर्सन इसे बंगाली से अलग उत्तरी बंगाल की भाषा मानते है।[2] किन्तु खुसरो के काल में बंगाली से अलग उत्तरी बंगाली भाषा के अस्तित्व मे आने की संभावना नहीं है। आज इसने सौ वर्षों बाद भी उसे भाषा के रूप मे कोई महत्त्व नही प्राप्त हो सका है। **गौरी** को **बंगाली** भी नहीं माना जा सकता, क्योंकि अगला शब्द **बंगाल** है जो बंगाली को संकेतित करता है। ऐसी

---

१. 'गुजर' से ठीक तर्क बैठाने के लिए कहीं-कहीं इसे 'कुजर' भी कर दिया गया है (औराक़-ए-मसव्वर—खलीक़ अहमद निज़ामी, पृष्ठ ४४)।

२. लिग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, पृ १।

स्थिति में **गौरी** भाषा की पहचान की समस्या जटिल हो जाती है। 'स्कंदपुराण' तथा 'शक्ति संगम तंत्र' (७वां पटल) में एक श्लोक आता है—

बंगदेशं समारभ्य भुवनेशान्तग: शिवे
गौड देश: समाख्यात: सर्वविद्या विशारद :।

'प्रबध चंद्रोदय' का एक पात्र अपना परिचय देते हुए गौड राष्ट्र में अपने को राढापुरी का नागरिक बतलाता है।[1] इनसे यह अनुमान लगता है कि गौड देश पूर्णत: बँगला भाषा प्रदेश नही था, अपितु वह बगाल से प्रारभ होकर वर्तमान उड़ीसा के कुछ क्षेत्र तक का नाम था। यदि मेरा यह अनुमान ठीक है तो **गौरी** का प्रयोग खुसरो मे **उड़िया** के लिए हुआ हो सकता है।

पैरामन का अर्थ है 'इर्द-गिर्द'। दिल्ली और उसके इर्द-गिर्द की भाषा कदाचित् खड़ी बोली को कहा गया है। यो **अवध** का प्रयोग पूर्वी हिन्दी तथा **दिहलवी** और **पैरामन** का हिन्दी पश्चिमी के लिए भी हुआ हो तो कोई आश्चर्य नही, जैसा कि ग्रियर्सन का भी अनुमान है।[2]

इसमे **हिंदवी** शब्द का प्रयोग भी ध्यान देने योग्य है। यह शब्द आज की **हिंदी** के लिए न आकर पूरे भारत की भाषाओ के लिए आया है। खुसरो ने **हिंदवी** का प्रयोग सस्कृत प्राकृत आदि प्राचीन तथा आधुनिक सारी भारतीय भाषाएँ तथा हिंदी इन सभी अर्थों मे किया है। लगता है कि उस काल मे यह शब्द काफ़ी व्यापक भी था। इसमे पूरी तरह अर्थ-सकोच नही आ पाया था। आगे चलकर अर्थ-संकोच से ही 'हिंदवी' तथा 'हिंदी' शब्द अपने परवर्ती अर्थ मे प्रयुक्त होने लगे।

अन्त मे यह भी सकेत्य है कि खुसरो के काल तक **लहँदा, मराठी, असमिया** का व्यक्तित्व उल्लेख्य होने की सीमा तक शायद नही उभरा था इसीलिए उसका उल्लेख नही है। आगे चलकर अबुल फ़ज़ल के आइन-ए-अकबरी[3] ने इनमे से प्रथम दो को **मुलतान** और **मरहट्ठ** के रूप मे सर्वप्रथम परिगणित किया।

खुसरो कुछ समय तक अवध में भी रहे, इसीलिए अवधी का भी उन्हे ज्ञान था। खड़ी बोली और अवधी इन्ही दोनो का प्रयोग उनकी रचनाओं मे है, यद्यपि कही-कही तो ब्रज के रूप भी हैं। वस्तुत: इस काल मे भाषा काफ़ी मिश्रित थी।

---

१ शब्द कल्पद्रुम मे 'गौड:' शब्द।
२ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया, खड एक, भाग एक, पृष्ठ १ (भूमिका)।
३ जारेट का अनुवाद, भाग-२, पृ० ११६।

(ङ) खुसरो की भाषा

खुसरो का जन्म दिल्ली में हुआ था, जैसा कि पीछे उनके जीवनी में हम देख चुके हैं। इस तरह दिल्ली की भाषा खड़ी बोली उनकी मातृभाषा अथवा मातृ-बोली थी। वे कुछ समय अवध में भी रहे, तथा अवधी की मिठास से भी भलीभाँति परिचित थे। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'नुह सिपहर' के तीसरे सर्ग के पाँचवें अध्याय में उन्होंने भारत की उस काल की भाषाओं की जो सूची दी है, उनमें हिंदी की ये ही दो बोलियाँ है। खड़ी बोली नाम उस समय नहीं था। इसे उन्होंने 'दिहली' अर्थात् 'दिल्ली की बोली' कहा है तथा अवधी को 'अवद' अर्थात् 'अवध की बोली'। अपनी रचनाओं में भी उन्होंने इन दो का ही प्रयोग किया है। यों बीच-बीच मे भी ब्रज के भी कुछ रूप (जैसे सोवै, डारै, मेरो, भयो आदि) है, किंतु इसका कारण यह है कि उस काल मे हिन्दी की ये बोलियाँ पूर्णतः अलग-अलग नही थी, उनमें एक दूसरे का काफ़ी मिश्रण था। मिश्रण के बावजूद यह बहुत स्पष्ट है कि पहेलियो, मुकरियों तथा दो-सखुनों की भाषा खड़ी बोली है। ख़ालिक़ बारी मे भी हिंदी के जो रूप हैं, उनमे आंशिक खड़ी बोली के ही हैं। जैसे कहिए, तू जान, रहिया (रहा का पुराना रूप) बैठ री, तथा रात जो गई आदि। इसके विपरीत गीतों, क़व्वा-लियां तथा दोहों की भाषा का मूल आधार अवधी या पूर्वी है। दोनो के उदाहरण है—

खड़ी बोली—

एक थाल मोती से भरा।
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारो ओर वह थाली फिरे।
मोती उसमें एक न गिरे।

पूर्वी अवधी—

छापा तिलक तज दीन्ही रे तो से नैना मिला कै।

प्रेमबटी का मदवा पिला के,
मतवारी कर दीन्ही रे मोसे नैना मिला के।

यों यह उल्लेख्य है कि उनकी सभी रचनाओं की हिंदी में कई हिंदी बोलियों का मिश्रण है, किन्तु जैसा ऊपर संकेतित है, प्राधान्य कुछ में खड़ी बोली का तथा कुछ में पूर्वी का है।

ख़ालिकबारी की भाषा भी प्राचीन खड़ी बोली है, यद्यपि उसमे ब्रजभाषा की भी छौंक है और कहीं-कहीं 'तोर' जैसे पूर्वी रूप भी हैं। उसमें आए 'कहिया' 'रहिया' आदि रूप प्राचीन खड़ी बोली के हैं। इन्हीं रूपो का विकास आज कहा, रहा आदि रूपो में हुआ है—

कहिया	=	कह्या	=	कहा
रहिया	=	रह्या	=	रहा

मैं चाहता था कि खुसरो की रचनाओं का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण भी इस पुस्तक में दिया जाय, किन्तु ऐसा इसलिए नहीं किया जा रहा है कि खुसरो की अधिकाश हिन्दी रचनाएँ कई सौ वर्षों तक मौखिक परम्परा में ही रही हैं, अतः हर सदी ने अपनी सुविधा के अनुसार उसकी भाषिक संरचना में परिवर्तन किए हैं। ऐसी स्थिति मे यह तो कहा जा सकता है कि इन रचनाओं का कथ्य खुसरो का है—वह भी कितना है, यह कहना कठिन है—किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि इन रचनाओ की भाषा खुसरो की है।—उनके समय तक हिन्दी के इतने अधिक अननगढ़ हो जाने की बिल्कुल संभावना नहीं है। हर सदी ने उसे अपने अनुकूल परिवर्तित करते-करते यह रूप दे दिया है। सामान्यतः उनकी रचनाओं मे प्रयुक्त हिन्दी १८०० ई० के आस-पास की ज्ञात होती है। एक कठिनाई और भी है। उनकी जो थोड़ी पांडुलिपियाँ मिली हैं वे फ़ारसी लिपि मे हैं और उनमें यह पहचान पाना असम्भव है कि कहाँ ए है कहाँ ऐ (सोवे-सोवै) या कहाँ औ है, कहाँ ओ कहाँ ऊ। कहना न होगा कि ऐसी स्थिति में इनकी प्राप्त रचनाओं का भाषिक विश्लेषण, इनके द्वारा व्यवहृत भाषा का विश्लेषण नहीं हो सकता।

द्वितीय खण्ड

संग्रह

पहेलियाँ

(क) अंतर्लापिका

(१)

बाला था जब सबको भाया।
बढ़ा हुआ कुछ काम न आया॥
खुसरो कह दिया उसका नाँव।
अर्थ करो नहिं छोड़ो गाँव॥

—दिया

(२)

इधर को आवे उधर को जावे।
हर-हर फेर काट वह खावे॥
ठहर रहे जिस दम वह नारी।
खुसरो कहे बरे को आरी॥

—आरी

(३)

एक नार वह दाँत-दँतीली।
पतली-दुबली छैल-छबीली॥
जब वा तिरियहिं लागे भूख।
सूखे हरे चबावे रूख॥
जो बताय वाही बलिहारी।
खुसरो कहे बरे को आरी॥

—आरी

(४)

श्याम बरन और दाँत अनेक।
लचकत जैसे नारी॥
दोनो हाथ से खुसरो खींचे।
और कहे तू आरी॥

—आरी

(५)

एक नार जब बन कर आवे।
मालिक अपने उपर बुलावे॥
है वह नारी सबके गों[1] को।
खुसरो नाम लिए तो चौकी॥
—चौकी

(६)

टूटी टूट के धूप में पड़ी।
जों-जों सूखी हुई बड़ी[2]॥
—बड़ी

(७)

फारसी बोली आई ना[3]॥
तुर्की ढूंढ़ी पायी ना॥
हिन्दी बोली आरसी आए।
खुसरो कहे कोई न बताए॥
—आरसी

(८)

पौन चलत वह देह बढ़ावै।
जल पीवत वह जीव गँवावै॥
है वह प्यारी सुन्दर नार।
नार नही पर है वह नार॥[4]
—नार (आग)

(९)

एक नार करतार बनायी।
ना वह क्वारी ना वह ब्याही॥

१. गों (सं० गम, प्रा० गवँ)=मतलब
२. बड़ी =(क) वृहत, (ख) बड़ी, कोंहड़ौरी, बड़ियाँ (सं० वटिका)
३. आई ना=आईना
४. पहले 'नार' (सं० नारी) शब्द का अर्थ 'स्त्री' और दूसरे का 'आग' (अर० नार=आग) है।

सूहा[1] रंगहि वाको रहै।
भाबी[2] भाबी हर कोई कहै।।
—बीरबहूटी

(१०)

एक पेड़ रेती में होवे।
बिन पानी ही हरा रहे।।
पानी दिये से वह जल जाय।
आँख[3] लगे अन्धा हो जाय।।
—आक

(११)

घूम-घुमेला लहँगा पहिने एक पाँव से रहे खड़ी।
आठ हाथ हैं उस नारी के सूरत उसकी लगे परी।
सब कोई उसकी चाह करे हैं मुसलमान हिन्दू छत्री[4]।
खुसरो ने यह कही पहेली दिन मे अपने सोच जरी।।
—छतरी

(१२)

सावन भादों बहुत चलत है, माघ-पूस मे थोरी।
अमीर खुसरो यों कहे तू बूझ पहेली मोरी।।
—मोरी (नाली)

(१३)

चार-महीने बहुत चले हैं और महीन थोरी।
अमीर. खुसरो यों कहे तू बूझ पहेली मोरी[5]।।
— मोरी (नाली)

(१४)

अन्दर है और बाहर बहे।
जो देखे सो मोरी कहे।।
—मोरी (नाली)

१. सूहा = लाल। २. भाबी = (क) भाभी, (ख) बीरबहूटी। कहीं-कहीं इसे 'भाबी' या 'भाभी' भी कहते है।

३. (क) आँख = आँख; (ख) आँख = आक (सं० अर्क, प्रा० अक्क)। कहा जाता है कि 'आक' का दूध 'आँख' मे लगने से आदमी अन्धा हो जाता है।

४. छत्री = (क) क्षत्रिय, (ख) छतरी।

५. १२ और १३ किसी एक के पाठांतर भी हो सकते हैं।

(१५)

गोल-मटोल और छोटा-मोटा।
हर दम वह तो जमी पर **लोटा**॥[१]
खुसरो कहे नही है झूठा।
जो न बूझे अक्लि का खोटा॥

—**लोटा**

(१६)

खड़ा भी लोटा पडा भी लोटा
है बैठा और कहे हैं **लोटा**[२]॥
खुसरो कहें समझ का टोटा[३]॥

—**लोटा**

(१७)

नारी से तू नर[४] भई और श्याम बरन भई सोय।
गली-गली कूकत फिरे कोइलो **कोइलो**[५] लोय॥[६]

—**कोयल**

(१८)

सरकंडो के ठट्ठ बंधे और बन्द लगे है भारी।
देखो है पर चाखी नाही लोग कहे है **खारी**[७]॥

---**खारी (टोकरी)**

(१९)

घूम-घाम के आई है औ मेरे मन को भाई है।
देखी है पर चाखी नाही, अल्ला की क़सम **खाई**[८] है॥

—**खाई (खंदक़)**

१. लोटा=(क) लेटा। 'लेटना' के लिए पुराना शब्द 'लोटना' है जो अब भी भोजपुरी आदि कई बोलियो मे प्रयुक्त होता है। (ख) 'लोटा' नामक बर्तन।
२. लोटा=(क) लेटा, लेटा हुआ, (ख) 'लोटा' नामक बर्तन। ३. कमी।
४. लकड़ी नारी है और कोयला नर अतः नारी से नर होना लिखा है।
५. कोइलो-कोइलो=(क) कोई ले, कोई ले,। (ख) कोयला। ६. लोय= लोग (सं० लोक)।
७ खारी=(क) खा रे, खा ले रे, (ख) टोकरी।
८. खाई=(क) खाई (क़सम खाना), (ख) खाई, खंदक।

(२०)

पान फूल वाके सर माँ है।
लड़े-कटे जब मद पर आहे॥
चिट्टे काले वाके बाल।
बूझ पहेली मेरे **लाल**।[१]

—लाल चिड़िया

(२१)

एक नार हाथे[२] पर खासी[३]।
जानवर बैठा बीच खवासी[४]।
अता-पता मत पूछो हमसे।
कुछ तो **महरम**[५] होगी उसमें॥

—अँगिया

(२२)

एक नार[६] चरन वाके चार[७]।
स्याम बरन, मूरत बदकार।[८]
बूझो तो **मुश्क** है न बूझे तो गँवार॥

—मुश्क (कस्तूरी)

(२३)

मुझको आवे यही परेख[९]।
पैर न गर्दन **मोढा**[१०] एक॥

—मोढ़ा, मूढा (बैठने का)

१. लाल = (क) मेरे लाल, मेरे बच्चे। (ख) 'लालसर' नामक एक चिड़िया जिसका सिर लाल, सिर का ऊपरी भाग तथा छाती चितकबरी, पीठ काली तथा सफ़ेद और डैने सुनहले होते है।
२. हाथ = मूठ, किनारा। ३. खासी = अच्छी। ४. शब्द स्पष्ट नहीं है। ५. महरम = (क) अँगिया की कटोरी, (ख) परिचित।
६. 'मुश्क' शब्द स्त्रीलिंग है। ७. हिरन के चार पैर होते हैं। ८. कस्तूरी का नाफा बदशक्ल होता है।
९. परेख = आश्चर्य। १०. मोढा = (क) कंधा, मुड्ढा। उस शरीर के न तो पैर है न गर्दन है, केवल एक मोढा (कन्धा) है। (ख) मूढा, मोढा (बैठने का)। फ़ारसी लिपि में मोढा, मूढा एक ही तरह से लिखे जाते है।

(२४)

एक मन्दिर के सहस्र दर।
हर दर मे तिरिया का घर॥
बीच-बीच वाके अमृत ताल।
बूझ है इनकी बड़ो **महाल**[1]॥

—शहद का छात्ता

(२५)

एक नार तरवर से उतरी।
सर पर वाके पाँव[2]।
ऐसी नार कुनार को।
मैं ना देखन जाँव[3]॥

—मैना

(२६)

हाड़ की देही उज्जर[4] रंग।
लिपटा रहे नारि[5] के सग।
चोरी की, **ना खून**[6] किया।
वाका सिर क्यों काट लिया[7]॥

—नाखून

(२७)

बोसो का सिर काट लिया।
ना मारा **ना खून**[8] किया॥

—नाखून

१. महाल=(क) कठिन (अर० मुहाल), (ख) शहद का छत्ता। आज-कल इसे 'मोहार' या 'मुहार' कहते है।

२. मैना की एक जाति के सिर पर पैर जैसा होता है। ३. (क) मैं देखन नही जाऊँ, (ख) 'मैंना' देखने जाऊँ।

४. उज्जर=उज्ज्वल। ५. 'अंगुली' स्त्रीलिंग अत स्त्री है। ६. नाखून = (क) खून नही (ख) नाखून, नख। ७. उसने न तो चोरी की और न खून किया, अर्थात् कोई भी अपराध नही किया, फिर उसका सिर क्यों काट लिया ?

८. ना खून=(क) नाखून, (ख) खून नही।

(२८)

जल-जल चलती बसती-गाँव[1]।
बस्ती में ना वाका ठाँव॥
खुसरो ने दिया वाका नाँव[2]।
बूझ अरथ नहिं छोड़ो गाँव॥

—नाव

(२९)

तरवर से एक तिरिया उतरी उसने बहुत रिझाया।
बाप का उससे नाम जो पूछा आधा नाम बताया[3]।
आधा नाम पिता पर वाका बूझ पहेली मोरी।
अमीर खुसरो यों कहें अपने नाम नि बोली[4]॥

—निबोली

(३०)

एक नार तरवर से उतरी माँ सों जनम न पायो[5]।
बाप को नाँव जो वासे पूछ्यो आधो नाँव बतायो।
आधो नाव बताओ खुसरो कौन देश की बोली।
वाको नाँव जो पूछ्यो मैंने अपने नाँव न बोली॥

—निबोली

(३१)

एक नारी[6] की जोड़ी दीठी[7]।
जब बोले तब लागे मीठी॥

१ पानी (जल-जल) मे चल कर वह गांव-गांव बस्ती-बस्ती जाती है।
२. नाँव=(क) नाम; (ख) नाव।
३. निबौली का पिता 'नीम' और 'नीम' का फ़ारसी मे अर्थ 'आधा' होता है।
४. नि बोली=(क) न बोली, चुप रही; (ख) निबौली। फ़ारसी लिपि मे 'नबोली और 'निबोली' प्रायः एक ही तरह से लिखते है। 'जेर' का चिह्न प्राय नही लगाते, जो ह्रस्व 'इ' को द्योतित करता है।
५. 'नीम' (पुल्लिग अतः पिता) से निबौली पैदा होती है, अत माँ से नही जनमती। शेष के लिए देखिए ऊपर २९।
६. 'ढोल' पुल्लिग, 'डुग्गी' स्त्रीलिग। ७. दीठी=देखी।

एक नहाय एक तापनहारा[1]।
चल खुसरो का कूच नकारा[2]॥

—नक्कारा

(३२)

ऐन-मैन[3] है सीप की सूरत[4], आँख देखी कहती है।
अनखावे ना पानी पीवे देखे से वह जीती है[5]॥
दौड़-दौड़ ज़मी पर दौड़े, आसमान पर उड़ती है।
एक तमाशा हमने देखा हाथ-पांव नही रखती है॥

—आँख

(३३)

एक तरुवर का फल है तर।
पहले नारी पीछे नर[6]॥
वा फल की यह देखो चाल।
बाहर खाल औ भीतर बाल[7]॥

—भुट्टा

(३४)

चालीस मन की नार रखावे, सूखी जैसी तीली[8]।
कहने को पर्दे की बीबी, पर वह रँग-रँगीली[9]॥

—चिक़ (पर्दा)

(३५)

अन्धा बहिरा गूँगा बोले गूँगा आप कहावे।
देख सफ़ेदी होत अँगारा गूँगे से भिड़ जावे॥

१. 'नक्कारे' में एक को बार-बार सेकते है। २. नकारा = (क) नक़्क़ारा; (ख) नक्कारा कूच करो, जाओ।

३. ऐन-मैन = हू-ब-हू। ४. सीपी की शक्ल। ५. न खाती है न पीती है, केवल देखकर जीवित रहती है।

६. नारी = बाल, नर = भुट्टा। ७. बाल = बाल, केश; भुट्टे को भी कहीं-कहीं 'बाल' कहते है। बाल या भुट्टे की शक्ल की होने के कारण नैनीताल की एक प्रसिद्ध मिठाई भी 'बाल' कहलाती है।

८. तीली जैसी सूखी होने पर भी भारी है। ९. 'पर्दे की बीबी' होने पर भी वह 'कुलटा' (चमकीली-मटकीली) है।

बाँस का मन्दिर वाका बासा[1], बासे का वह खाजा[2]।
संग[3] मिले तो सिर पर रखें वाको रानी राजा।
सी-सी करके नाम बताया तामे बैठा एक।
उल्टा-सीधा घर फिर देखो वही एक का एक।
भेद पहेली मैं कही तू सुन ले मेरे लाल।
अरबी हिन्दी फ़ारसी तीनो करो ख़्याल[4]॥

—लाल

(ख) बहिर्लापिका

(१)

बिधना ने एक पुरुख बनाया।
तिरिया दी औ नीर लगाया॥
चूक भई कुछ वासे ऐसी।
देस छोड़ भयो परदेसी॥[5]

—आदमी

(२)

झिलमिल का कुँआ रतन की क्यारी।
बताओ तो बताओ नही तो दूँगी गारी॥[6]

—दर्पण

१. वासा = निवास। २. ख़्वाजा = मालिक। ३. संग = (क) साथ; (ख) पत्थर। ४. 'लाल' फ़ारसी का अर्थ गूँगा-बहरा, अरबी अर्थ 'लाल रंग', तथा हिन्दी अर्थ 'एक पक्षी', रत्न, राल, बच्चा आदि है।

५. आदमी के आदि पुरुष आदम ने शैतान के बहकाने से गेहूँ खा लिया, जिससे रुष्ट हो खुदा ने उनकी स्त्री हौवा के साथ उन्हें स्वर्ग से निकालकर पृथ्वी पर भेज दिया। एक मतानुसार ये लंका द्वीप (नीर लगाया) पर भेजे गए थे।

६. यह पहेली भोजपुरी क्षेत्र मे इस रूप मे प्रचलित है--

झिलमिल कुँआ रतन कर बारी
बुझबे त बूझ नाहिं देबों गारी

देहात मे इसे लोग 'आइना' के स्थान पर 'आसमान' बतलाते हैं। आसमान तारों के कारण रत्नों की 'बारी' (स० वाटिका) कहा जाता है। इसका एक और पाठ भी है—

पातर कुँआ रतन की बारी
बुझबे त बूझ नहिं देबों गारी

(३)

एक नार पानी पर तरे।
उसका पुरुख लटका मरे॥
ज्यों-ज्यो खंदी गोता खाय।
त्यों-त्यो भड़ुआ मारा जाय॥[1]

—घड़ी और घंट।

(४)

पानी में निसदिन रहे, जाके हाड़ न मास।
काम करे तलवार का फिर पानी में बास॥

—कुम्हार का डोरा[2]

(५)

एक जानवर जल मे रहे औ मन में वाके खीच।
उछल वार खाड़ा[3] करे, जल का जल के बीच॥

—कुम्हार का डोरा[4]

(६)

गोल गात औ सुन्दर मूरत,
काला मुंह तिस पर खुबसूरत।
उसको जो हो महरम[5] बूझे,
सीना[6] देख पिरोना सूझे॥

—छाती

(७)

एक रुख में अचरज देखा,
डाल घनी दिखलावे।

१. घडी के अविष्कार के पूर्व घड़ियाल के पास घंटा (पुरुष) टँगा रहता था और पानी में एक कटोरी (घड़ी, सं० घटिका, नारी) होती थी, जिसके पेंदे में एक छेद रहता था वह तैरती रहती थी। एक घटे में धीरे-धीरे जब कटोरी डूब जाती थी और पता चलता था कि एक घंटा बीत गया तो घड़ियाल घंटा बजा देता था।

२. इस डोरे से चाक से बर्तनों को काटकर अलग करते हैं।

३. खड्ग, तलवार। ४. यह डोरा तलवार जैसा वार करता है और फिर पानी के भीतर चला जाता है (कुम्हार इस डोरे को पानी में रखता है।)

५. अंगिया की कटोरी। ६. सीना = (क) सिलना; (ख) छाती, स्त्री का स्तन।

एक है पत्ता वाके ऊपर,
माथ छुवे कुम्हलावे ।।
सुन्दर वाकी छाँव है
औ सुन्दर वाको रूप।
खुला रहे औ नहिं कुम्हलावे
जों जो लागे धूप ।।
—छाता

(८)

बालो बाँधी एक छिनाल[1]।
नित वो रहती खोले बाल ।।
पी[2] को छोड़ नफ़र[3] से राज़ी।
चतुरा हो सो जीते बाज़ी ।।
—चुनरी

(६)

डाला था सब को मन भाया।
टाँग उठा कर खेल बनाया ।।
कमर पकड के दिया ढकेल।
जब होवे वह पूरा खेल ।।
—झूला[4]

(१०)

क्या करूँ बिन पाँव के,
तुझे ले गया बिन सिर का!
क्या करूँ लम्बी दुम के,
तुझे खा गया बिना चोंच का लड़का ।।
—जाल[5]

१. चुनरी (टाई-डाई) बाँधकर रँगी जाती है। २. पी = रँगरेज। ३. नफर = नौकर। यहाँ वह जो रँगरेज से ख़रीद कर चुनरी ले जाता है।

४. इस पहेली का प्रत्यक्ष अर्थ अश्लील है।

५. जाल मे बँधी लम्बी रस्सी लम्बी दुम है। जिस चोगे में इसे रखते है, वह बिना चोंच का लड़का है। उलटबासीनुमा यह पहेली 'जाल' पर है। इमे पानी अपने बहाव मे ले जाता है। पानी के सिर-पैर नही होते।

(११)

बिन सिर का निकला चोरी को,
बिन हथ पकड़ा जाय.
दौड़ा वह बिन पांव के,
बिन सिर का लिए जाय ।।
—जाल[१]

(१२)

ताना बाना जल गया जला नही एक तागा।
घर का चोर पकड़ गया, घर में मोरी से भागा[२]।।
—जाल[३]

(१३)

एक नार कुंए[४] मे रहे।
वाका नीर[५] खेत[६] में बहे।।
जो कोई वाके नीर को चाखे।
फिर जीवन की आस न राखे।।
—तलवार

(१४)

चाम[७]-मांस वाके नही नेक।
हाड़-हाड़ में वाके छेद।
मोहि अचंभो आवत ऐसे।
वामे जीव बसत है कैसे।।
—पिंजड़ा

१. जाल के सिर, हाथ, पैर आदि नहीं होते, किन्तु वह दौड़ कर मछलियो को पकड़ता है।

२. बाँस का चोंगा, जिसमे पुराने ज़माने मे जाल रखते थे। ३. ताने-बाने का जाल जल गया (जल में गया) पर उसका एक भी तागा जला नही। चोंगे मे से निकलकर वह पानी मे गया। जाल-वाले ने इसकी रस्सी अपने हाथ मे रखी।

४. म्यान। ५. चमक, चमकीली धार। ६. युद्ध-क्षेत्र।

७. चमड़ा।

(१५)

एक पुरुख[1] औ सहसों नार।
जले पुरुख देखे संसार॥
बहुत जले औ होवे राख।
तब तिरियों[2] की होवे साख॥

—हँड़िया

(१६)

एक पुरुख और नौलख नारी।
सेज चढ़ी वह तिरिया सारी।
जले पुरुख देखे ससार।
इन तिरियों का यही सिंगार।

—हँड़िया

(१७)

सर पर जटा गले मे झोली
किसी गुरू का चेला है।
भर भर झोली घर को धावै.
उसका नाम पहेला[3] है।

—भुट्टा

(१८)

आगे-आगे बहिना[4] आई, पीछे पीछे भइया[5]।
दाँत[6] निकाले बाबा आये, बुरका ओढ़े[7] मइया॥

—भुट्टा

(१९)

एक नार नौरगी नंगी।
वह भी नार कहावे।
भाँति-भाँति के कपड़े पहिन।
लोगों को तरसावे॥

—बदली

१ चूल्हा। २. हँड़िया

३. पहेली, समस्या।

४. बाली। ५. दाना। ६. पूरी बाली मे दाँत जैसे दाने पड़ गए। ७. बाली दीख रही है, जैसे मां (मइया) बुरका ओढ़े है। यह पहेली कई रूपों में लोक मे प्रचलित है।

(२०)

भाँति-भाँति की देखी नारी.
नीर भरी है गोरी काली,
ऊपर बसे और जग धावे,
रच्छा करे जब नीर बहावे ।।

—बदली

(२१)

है वह नारी सुन्दर नार
नार नहीं पर वह है नार[1]
दूर से सब को छवि दिखलावे :
हाथ किसी के कभू न आवे ।।

—बिजली
(आसमान की)

(२२)

देख सखी पी की चतुराई ।
हाथ लगावत चोरी आई ।।[2]

—ओला

(२३)

उज्जल अति वह मोती बरनी ।
पाये कंत, दिए मोहिं धरनी[3] ।।
जहाँ धरी थी वहाँ न पाई ।
हाट-बजार सभी ढूँढ़ि आई ।।
सुनो सखी अब कीजै क्या ।
पी माँगे तो दीजै क्या ।।

—ओला

(२४)

एक नार दो को ले बैठी ।
टेढ़ी होके बिल में पैठी ।।

१. पहले 'नार' का अर्थ 'नारी' है और दूसरे का 'आग'। अरबी मे 'नार' 'आग' को कहते हैं ।
२. हाथ लगाते ही गल जाता है ।
३. मुझे धरने या रखने के लिए दिया था ।

जिसके पैठे उसे सुहाय।
दूसरो उसके जल-बल जाय॥

—पायजामा

(२५)

एक नार जाके मुंह सात[1]।
सो हम देखी बेंड़ी जात॥
आधा मानुस निगले रहे।
आँखो देखी खुसरू कहे॥[2]

—पायजामा

(२६)

स्याम बरन की है एक नारी।
माथे ऊपर लागै प्यारी॥
जो मानुस इस अरथ को खोले।
कुत्ते की वह बोली बोले॥

—भौं

(२७)

आवे तो अँधेरी लावे।
जावे तो सब सुख ले जावे॥
क्या जानूं वह कैसा है।
जैसा देखो वैसा है॥

—आँख

(२८)

एक थाल मोती[1] से भरा।
सबके सिर पर औंधा धरा॥
चारों ओर वह थाली फिरे।
मोती उससे एक न गिरे॥

—आसमान

१. सातमुंह—दो पैरों के, एक ऊपर का, नाड़ा डालने के दो आगे, और दो पीछे। २. अवधी में इससे मिलती-जुलती पहेली है—

दुइ मुंह छोट एक मुंह बड़ा।
आधा मानुस लीले खड़ा॥

१. मोती = तारे।

(२६)

एक बुढ़िया शैतान की खाला।
सिर सफ़ेद औ मुंह है काला[१]।
लौंडे घेरे हैं, वह नार।
लड़के रखे हैं उससे प्यार॥
उछले कूदे, नाचे वो।
आग लगे उस बुढ़िभस को॥

—आक की बुढ़िया

(३०)

एक नार पिया को भानी[२]।
तन वाको सगरा ज्यों पानी॥
आब रखे पर पानी नांहि।
पिया को राखे हिरदय मांहि।
जब पी को वह मुख दिखलावे।
आपहि सगरी पी हो जावे॥

—आईना

(३१)

आना जाना उसका भाए।
जिस घर जाए लकड़ी खाए॥

आरी

(३२)

जा घर लाल बलैया जाय।
ताके घर में दुंद मचाय॥
लाखन मन पानी पी जाय।
धरा-ढका सब धार का खाय॥

—आग

(३३)

एक पुरुख जब मद पर आय।
लाखों नारी संग लपटाय॥[३]

१. आक की बुढ़िया ऐसे ही होती है।
२. अच्छी लगी।
३. 'अमिया' नारी है।

जब वह नारी मद पर आय।
तब वह नारी नर कहलाय॥[1]

—आम

(३४)

अरथ तो उसका बूझेगा।
मुंह देखो तो सूझेगा॥

—आईना

(३५)

सामने आय, कर दे दो।[2]
मारा जाय, न जख्मी हो॥[3]

—आईना

(३६)

हाथ मे लीजै।
देखा कीजै॥

—आईना

(३७)

गोरी सुन्दर पातली, केहर काले रंग।
ग्यारह देवर[4] छोड़ के, चली जेठ[5] से संग॥

—अरहर

(३८)

आग लगे फूले फले, सींचत जावे सूख।
मैं तोहि पूछौ ऐ सखी, फूल के भीतर रूख॥

—अनार (आतिशबाजी)

(३९)

रात समय एक सूहा[6] आया।
फूलों-पातों सबको भाया॥

१. 'अमिया' ही बढ़कर 'आम' (नर) हो जाती है।
२. आईना जिसके सामने आता है, उसे दो कर देता है: एक यथार्थ और एक आईने मे। ३. वह बिना काटे-चीर दो कर देता है।
४. ग्यारह देवर = ११ महीने ५. जेठ = (क) पति का बड़ा भाई; (ख) ज्येष्ठ (महीना जब अरहर पकती है)।
६. सूहा = शोभन वस्तु, लाल वस्तु ।

आग दिए वह होय रूख।
पानी दिए वह जावे सूख।।
--अनार (आतिशबाजी)

(४०)

जल से गाढ़ो थल धरो, जल देखे कुम्हिलाय।
लाओ बसुन्दर[1] फूंक दे[2], जो अमरबेल[3] हो जाय।।
—ईंट

(४१)

बाँस बरेली से एक नारी।
लाई जुल्मी मार[4] कटारी।।
पी[5] कुछ उसके कान मे फूंके।
बोली वह सुन पी के मुँह के।।
आह पिया यह कैसी कीनी।
आग बिरह की भड़का दीनी[6]।।
—बाँसुरी

(४२)

एक राजा की अनोखी रानी।
नीचे से वह पीवे पानी।।
—दिये की बत्ती

(४३)

एक नार[7] ने अचरज किया।
साँप[8] मार पिंजरे[9] में दिया।।
ज्यों-ज्यों साँप ताल[10] को खाए।
ताल सूखे और साँप मर जाए।।
—दिये की बत्ती

१. वैश्वानर, आग। २. यदि उसे आग में पका दें। ३. न पानी में गलने वाली, न आग में जलने वाली अर्थात् अमर।
४. एक और पाठ है 'आई अपने बन्द कटारी'। ५. बाँसुरी बजाने वाला।
६. बाँसुरी की करुण ध्वनि की ओर संकेत है।
७. दीपक। ८. बत्ती। ९. दिये का बर्तन। १०. दिये का तेल।

(४४)

आगे से वह गाँठ गठीला।
पीछे से है टेढ़ा॥
हाथ लगाए कहर खुदा का।
बूझ पहेला मेरा॥

—बिच्छू

(४५)

एक अचम्भा देखो चल।
सूखी लकड़ी लागा फल॥[1]
जो कोई इस फल को खावे।
पेड़ छोड़ कहिं और न जावे॥

—चाकू का फल

(४६)

उज्जल बरन अधीन तन[2],
एक चित्त दो ध्यान॥
देखन में तो साधु है,
पर निपट पाप की खान॥

—बगला

(४७)

एक गाँव में सहदा[3] कुएँ, कुएँ-कुएँ पनिहार।
मूरख तो जाने नहीं, चतुरा करे विचार॥

—बर्र या शहद का छत्ता

(४८)

श्याम बरन पीताम्बर काँधे, मुरलीधर ना होय।[4]
बिन मुरली वह नाद करत है, बिरला बूझै कोय॥

—भौंरा

१. सूखी लकड़ी में फल लगा है, जबकि लगना चाहिए हरी लकड़ी में। चाकू की लकड़ी की मूठ में लोहे का फल लगा होता है।
२. शरीर का नीचे (अधीन) का भाग।
३. सहदा=सैकड़ों।
४. पाठांतर—मुरली धरे न होय

(४६)

अचरज बंगला एक बनाया।
ऊपर नीव तरे घर छाया॥
बांस न बल्ला बधन घने।
कहू खुसरो घर कैसे बने॥

—बए का घोंसला

(५०)

एक नार करतार बनाई।
सूहा[1] जोड़ा पहिन के आई॥
हाथ लगाए वह शर्माय[2]।
या नारी को चतुर बताय॥

—बीरबहूटी

(५१)

एक गुनी ने यह गुन कीना।
हरियल[3] पिंजरे[4] मे दे दीना॥
देखा जादूगर का हाल।
डाले हरा निकाले लाल॥[5]

—पान

(५२)

हरा रूप है निज वह बात।
मुख में धरे दिखावे जात॥
तीन वस्तु[6] से अधिक पिआर।
जान देग सबही नर-नार[7]।
हर एक सभा का रखे मान।
चतुराई का ठाट पहिचान॥

—पान

१. लाल। २. बीरबहूटी छू देने पर हाथ-पैर समेटकर शांत और निश्चेष्ट हो जाती है।

३. (क) एक पक्षी, (ख) हरे रंग का पान। ४. (क) पिंजरा, (ख) आदमी का मुंह। ५. पान खाते समय हरा रहता है, किंतु उसकी पीक निकालने पर लाल होती है।

६. तीन वस्तुएँ—कत्था, चूना, सुपारी। ७. पाठांतर—जानिब हैं सबसे नर-नार।

(५३)

अजब तरह की एक नार।
वाका मैं का करूँ विचार।।
दिन बह रहे व्यक्ति के संग।
लाग रही निस वाके अंग।।[1]

—परछाईं

(५४)

धूपों से वह पैदा होवे
छाँव देख मुर्झाये।
एरी सखी मैं तुझसे पूछूँ,
हवा लगे मर जाये।।

—पसीना

(५५)

'सोने'[2] की एक नार कहावे।
बिना कसोटी बान दिखावे[3]।।

—चारपाई

(५६)

खेत मे उपजे सब कोई खाय।
घर मे उपजे[4] घर खा[5] जाय।।

—फूट

(५७)

एक नार दो[6] सींगो से।
नित खेले उठ धींगों से।।
जाके द्वार जाय के अड़े।
मानुस लिये बिना नहिं टले[7]।।

—डोली

१. अन्तिम दो पंक्तियों के दो अर्थ स्पष्ट हैं: एक 'नारि' के संदर्भ मे, दूसरा 'छाया' के संदर्भ में।

२. सोने की—(क) स्वर्ण की, (ख) सोने के लिए। ३. सोना तो कसौटी पर अपनी चमक (बान) दिखाता है, किन्तु चारपाई की रस्सी (बान) यों ही दीखती रहती है।

४. पाठांतर—होवे। ५. पाठांतर—बहि।

६. कहार। ७. पाठांतर—बे मानुस लिये नहीं टले।

(५८)

एक कन्या[1] ने बालक[2] जाया।
वा बालक ने जगत सताया॥
मारा मरे न काटा जाय।
बा बालक को नारी[3] खाय॥

—जाड़ा

(५९)

दूध में दिया
दही से लिया।

—जामन, खट्टा

(६०)

काजल की कजलोटी[4] उधो,
पेड़न का सिंगार।
हरी डाल पै मैना[5] बैठी,
है कोई बूझनहार॥

—जामुन

(६१)

एक पुरुख बहुत गुना भरा।
लेटा जागै सोवे खड़ा[6]॥
उलटा होकर डाले बेल।
यह देखो करतार का खेल॥

—चरखा

(६२)

एक नारी के हैं दो बालक[7]
दोनों एकहि रंग।

१. ऋतु। २. जाड़ा। ३. नारी = रुई। भोजपुरी में कहते हैं जाड़ा रुई, धुई (आग) या दुई (दो के साथ-साथ सोने) से जाता है।

४. काली। ५. एक प्रसिद्ध पक्षी। इसके बोल मीठे होते हैं। जामुन भी मीठे होते हैं।

६. 'खड़ा' अर्थात् न चलने पर सो जाता है। 'लेटा जागै', 'खड़ा' का विलोम 'लेटा' तथा 'सोवे' का 'जागे' के कारण कहा गया है।

७. दोनों पाट।

एक फिरे एक ठाढ़ा रहे,
फिर भी दोनों संग ।।

—चक्की

(६३)

मिला रहे तो नर[1] रहे,
अलग होय तो नार[2]।
सोने का-सा रंग है,
कोई चतुर बिचार।।

—चना

(६४)

तीनो[3] तेरे हाथ में,
मैं फिरूँ तेरे घात मे।
मैं हर फिर मारूँ[4] तेरी,
तू बूझ पहेली मेरी ।।

—चौसर

(६५)

चारों दिशा की सोलह रानी[5]।
तीन पुरुख[6] के हाथ बिकानो ।।
मरना-जीना उसके हाथ।
कभी न सोवें वह एक साथ ।।

—चौसर

(६६)

बाल नुचे कपडे फटे, मोती[7] लिए उतार।
यह बिपदा कैसे बनी जो नमी कर दई नार ।।

—भुट्टा

१. चना। २. दाल।
३. तीनों—(क) तीनों पाँसे, (ख) दूसरे अर्थ में 'तीनो' (दो अडकोश, एक लिंग) में मजाक भी है। ४. 'मारूँ' में श्लेष है।
५. चारों ओर के सोलह-सोलह खाने। ६. तीनों पाँसे।
७. दाने।

(६७)

सुख के कारज बना एक मंदर[1]।
पौन न जावे वाके अन्दर[2]॥
इस मंदर की रीत दिवानी।
बुझावे आग और ओढ़े पानी[3]॥
—गुसलखाना

(६८)

सूली चढ़ मुसकत करे[4] स्याम बरन एक नार।
दो से दस से बीस[5] से, मिलत एक ही बार॥
—मिस्सी

(६९)

स्याम बरन एक नार कहावे।
ताँबा[6] अपना नाम धरावे॥
जो कोई वाको मुख पर लावे।
रती से सेर हो जावे॥[7]
—मिस्सी

(७०)

नर[8] से पैदा होवे नार[9]।
हर कोई उससे रखे प्यार॥

१. घर। २. चारों ओर से बन्द। ३. गर्मी शान्त करने के लिए स्नानघर में अपने ऊपर पानी डालते हैं।

४. सूली पर चढ़कर भी मुस्कराती रहती है (दाँतों पर चढ़ना)। ५. २ + १० + २० = ३२ दाँत।

६. 'मिस्सी' मूलतः फ़ारसी शब्द 'मिसी' है। फ़ारसी में 'मिस' का अर्थ है 'ताँबा' और 'मिसी' का अर्थ है 'ताँबे का'। ईरान में पहले जो 'मिसी' बनती थी उसकी कालिमा ताम्रवर्णी होती थी; अतः 'मिसी' नाम पड़ा। मध्यकाल में इसे इसी आधार पर 'ताँबा' भी कहा जाता रहा है। ७. यहाँ 'रती' के दो अर्थ ज्ञात होते है : (क) रत्ती, थोड़ा-सा, (ख) रति = अत्यन्त सुन्दरी। अर्थात् रत्ती भर मिस्सी लगाकर, रति की तुलना में सेर (रत्ती का कई गुना), अर्थात् 'रति' से कई गुना सुन्दर हो जाती है।

८. सूर्य (पु०)। ९. धूप (स्त्री०)।

एक जमाना उसको खावे।[1]
खुसरो पेट में वह ना जावे॥[2]
—धूप

(७१)

ऐन पहेली तीन का गुच्छा[3], जिसमें एक सुंदर है।
ऐ सखी मैं तुझ से पूछूँ, दो बाहर एक अन्दर है[4]॥
—डोली

(७२)

श्याम बरन औ सोहनी, फूलन छाई पीठ[5]।
सब सूरन[6] के गले पड़त है, ऐसी बन गई ढीठ॥
—ढाल

(७३)

लोहे के चने, दाँत तले पाते है उसको[7]।
खाया वह नहीं जाता पर खाते हैं उसको[8]॥
—रुपया

(७४)

दानाई[9] से दाँत उस पै लगाता नही कोई[10]।
सब उसको भुनाते है पै खाता नही कोई[11]॥
—रुपया

१. मुहावरा है 'धूप खाना' अर्थात् 'धूप मे गर्म होना'। २. लोग धूप खाते है, किन्तु वह पेट में नही जाती।

३. दोनों ओर के दो डंडे तथा एक व्यक्ति जो भीतर बैठा है। ४. दोनो डंडे बाहर हैं, व्यक्ति अन्दर है। इस पंक्ति के अन्तिम भाग मे एक मजाकिया अर्थ भी है, जो स्पष्ट है।

५. ढाल की पीठ पर फूल-पत्ते बने होते है। ६. शूर-वीरों।

७. रुपया कमाने के लिए लोहे के चने चबाने पड़ते हैं। ८. रुपया तो नहीं खाया जाता किन्तु उसी से खाना मिलता है, अतः 'उसको खाते हैं'।

९. बुद्धिमत्ता। १०. बुद्धिमान व्यक्ति कभी रुपये हड़पता नही। ११. अन्न भुनाते हैं, तो उसे खाते है, किन्तु रुपया भुनाते (तुड़ाते खुदरा लेते) हैं लेकिन खाते नही।

(७५)

चंद्रबदन[1] ऊबड़मी तन[2] पाँव बिना वह चलता है[3]।
अमीर ख़ुसरो यों कहें, वह हौले-हौले चलता है॥

—रुपया

(७६)

एक राजा ने महल बनाया।
एक थम[4] पर वाने बँगला[5] छाया॥
भोर भई जब बाजी बम[6]।
नीचे बँगला ऊपर थम॥

—मथनी, मथानी, रई, बिलोणी

(७७)

मोटा पतला सब को भावे।
दो मीठों का नाम धरावे॥[7]

—शकरकंद

(७८)

एक नारी[8] के सर पर नार[9]।
पीके लगत में खड़ी लचार॥
सीस धुने औ चले न ज़ोर।
रो-रो कर वह करे है भोर॥

—दिये की बत्ती

(७९)

जब काटो तब ही बढ़े[10],
बिन काटे कुम्हिलाय।

१. चाँद की तरह चमकता हुआ। २. ऊबड़-खाबड़ सतह। ३. रुपया चलता है, किंतु बिना पाँव के।

४. स्तंभ, डंडा। ५. मथानी या रई का नीचे का गोला, जिससे मथते हैं। ६. प्रातः-काल (बम बजना)।

७. 'शकरकंद' में दो शब्द हैं : 'शकर' (फ़ा०) अर्थात् चीनी और 'कंद' (फ़ा०) अर्थात् 'खंड' (सं०) अर्थात् खाँड़ या मिस्री। फ़ारसी 'शकर' और 'कंद' दोनों ही शब्द सं० 'शर्करा' और 'खंड' के ही रूपांतर हैं।

८. नारी=दिये की बत्ती। ९. नार (अरबी)=आग।

१०. दिये की बत्ती पर 'गुल' आ जाता है, तो उसे काट देते हैं। काटने से वह बत्ती जलने लगती है, न काटें तो धीरे-धीरे रोशनी कम देते-देते बुझ जाती है।

ऐसी अद्भुत नार का,
अंत न पायो जाय ॥
—दिये की बत्ती

(८०)

एक पुरुख[1] का अचरज लेखा।
मोती[2] फलत आँखों देखा ॥
जहाँ से उपजे वहाँ समाय।
जो फल गिरे सो जल-जल जाय[3] ॥
—फ़व्वारा

(८१)

जब से तरुवर उपजा एक।
पात नहीं पर डाल अनेक ॥
इस तरुवर की सीतल छाया।
नीचे एक न बैठन पाया ॥
—फ़व्वारा

(८२)

बात की बात ठठोली की ठठोली।
मरद[4] की माँग औरत[5] ने खोली ॥
—ताला

(८३)

भीतर चिलमन बाहर चिलमन[6]
बीच कलेजा धड़के।
अमीर खुसरो यों कहें,
वह दो-दो अंगुल सरके ॥
—कैंची

१. फव्वारा। २. फ़व्वारा से गिरती मोती जैसी बूँदें। ३. पानी-पानी हो जाता है।
४. ताला। ५. ताली, चाभी, कुंजी।
६. चिलमन = चिक, परदा। कैंची काटती है तो उसके आगे-पीछे कपड़ा रहता है।

(८४)

आदि कटे तो[1] सबको पाले।
मध्य कटे तो सबको घाले[2]॥
अंत कटे से सबको मीठा।
खुसरो वाको आँखों दीठा॥[3]

—काजल

(८५)

जल कर उपजे[4] जल में रहे[5]
आँखों देखा खुसरो कहे॥

—काजल

(८६)

आधा मटका सारा पानी[6]
जो बूझे सो बड़ा गिआनी॥

—काजल

(८७)

एक नार चातुर कहलावे।
मूरख को ना पास बुलावे॥
चातुर मरद जो हाथ लगावे।
खोल सतर वह आप दिखावे॥

—पुस्तक

(८८)

कीली पर खेती करे[7], औ पेड़ में दे दे आग[8]।
रास[9] ढोय घर में रखे, रह जाए है राख[10]॥

—कुम्हार

१. पाठांतर—से। २. पाठांतर—मारे। ३. पाठांतर—सो खुसरू मैं आँखों दीठा।
४. काजल दीपक जलाकर बनाते हैं। ५. आँखों (पानीदार) में रहता है।
६. यह पंक्ति स्पष्ट नहीं है। आधा मटका 'दिया', या 'आँख' के लिए हो सकता है।
७. चाक कीली पर चलता है। इस पर बर्तन बनाना ही कुम्हार की खेती है।
८. आवें मे आग लगाता है। ९. राशि, ढेर। अनाज का ढेर, जो खलिहान मे साफ़ करके रखा रहता है, राशि कहलाता है। यहाँ बर्तन का ढेर।
१०. पाठांतर—वह जाए रह राख।

(८९)

माटी रौंदूं, चक धरूँ, फेरूँ बारंबार।
चातुर हो तो जान ले, मेरी जात गँवार॥

—कुम्हार

(९०)

एक पुरुख ने ऐसी करी।
खूंटी[1] ऊपर खेती करी[2]॥
खेती-बारी दई जलाय।
वाई[3] के ऊपर[4] बैठा खाय॥

—कुम्हार

(९१)

चार अंगुल का पेड़[5],
सवा मन का पत्ता[6]।
फल[7] लगे अलग-अलग,
पक जाय इकट्ठा॥

—कुम्हार का चाक

(९२)

अंगूठे-सी जड़ चौडा पात।
छोटे-बडे फल एक ही साथ॥

—कुम्हार का चाक

(९३)

गाँठ गँठीला रंग रँगीला,
एक पुरुख हम देखा।
मरद इस्तरी उसको रखें,
उसका क्या कहूँ लेखा॥

—कंठा[8]

१. खूटी = चाक की कीली। २ चाक पर बर्तन बनाना उसकी खेती है।
३. वाई = वही, उसी। ४. के ऊपर = के भरोसे, के सहारे।
५. चाक जमीन से चार अंगुल ऊँचा होता है। ६. चाक सवा मन का पत्ता है।
७. फल = बरतन।
८. गले का एक गहना, जिसका प्रचलन अब समाप्तप्राय है।

(९४)

एक कहानी मैं कहूं,
तू सुन ले मेरे पूत।
बिना परों वह उड़ गया,
बांध गले में सूत।।

—पतंग

(९५)

नारी[1] काट के नर[2] किया,
सब से रहे अकेला।
चलो सखी वां चल के देखे,
नर-नारी का मेला[3]।।

—कुआं

(९६)

अंबर चढ़े न भू गिरे,
धरती धरे न पांव।
चांद-सूरज ओझल बसे,
वाका क्या है नांव?

—गूलर का कीड़ा

(९७)

उकडूं बैठके मारन लागा,
बीच कलेजा धड़के।
अमीर खुसरो यों कहें,
वह दो-दो अंगुल सरके।।

—मूठ (जादू टोने का)

(९८)

एक जानवर रंग-रंगीला,
बिन मारे वह रोवे[4]।
उसके सिर पर तीन तिलाके[5],
बिना बताये सोवे।।

—मोर

१. जमीन। २. कुआं। ३. पानी लेने के लिए।
४. मोर की आवाज़ रोने-जैसी लगती है। ५. मोर के सिर की कलग़ी। 'सिर' के स्थान पर 'मां' पाठ भी मिलता है।

(९९)

सर पर जाली, पेट मे खाली ।
पसली देख एक-एक निराली ॥

—मोढ़ा, मूढ़ा

(१००)

बाँस करे ठाँय-ठाँय[1],
नदी को कँगुआय ।[2]
कँवल का-सा फूल जैसे,
अंगुल-अंगुल जाय ॥

—नाव

(१०१)

ऊपर से वह सूखी-साखी नीचे से पनहाई ।[3]
एक उतरे और एक चढ़े और एक ने टाँग उठाई ॥
मोटा डंडा खाने लागी यह देखो चतुराई ।
अमीर खुसरो यों कहे तुम अरथ देव बताई ।

—नाव

(१०२)

मीठी-मीठी बात बनावे,
ऐसा पुरुष वह किसको भावे ।
बूढ़ा बाला जो कोई आए ।
उसके आगे सीस नवाए ॥

—नाई

(१०३)

नारी[4] में नारी[5] बसे, नारी[6] मे नर[7] होय ।
दो नर[8] मे नारी[9] बसे, बूझे बिरला कोय ॥

—नथिया (नथ)

१. डाँड का चलना । पाठांतर—बाँस काटे ठाँय-ठाँय । २. स्पष्ट नही है ।
३. पानी में डूबी ।
४ नाक । ५. नथिया । ६. नथिया । ७. नग । नथिया मे नग रहते हैं । ८. नख ।
९. नथिया ।

(१०४)

एक नार दखिन से आई।
है वह नर और नार कहाई।।
काला मुंह कर जग दिखलावे।
मोय हरे जब वाको पावे।।[1]

—नगीना

(१०५)

लाल रंग वह चिपटा-चिपटा,
मुंह को करके काला।
थूक लगाकर दाब दिया,
जब खसम का नाम निकाला।।[2]

—नगीना

(१०६)

पंसारी का तेल
कुम्हार का बर्तन।
हाथी की सूंड[3]
नवाब की पताका[4]।

—दिया

परिशिष्ट

पहेली खंड के इस परिशिष्ट में वे पहेलियाँ दी जा रही हैं, जो खुसरो की कही जाती हैं, किन्तु प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक के विचार से ये उनकी नहीं हैं। इनकी रचना उनके बाद हुई होगी।

(१)

अगिन कुंड में घिर गया,
औ जल में किया विकास।
परदे-परदे आवता,
अपने पिया के पास।

—हुक्के का धुआँ

१. यह स्पष्ट नही है।
२. यह स्पष्ट नहीं है।
३. बत्ती। ४. दीपक की लौ।

(२)

हाथ में लीजे। देखा कीजे।

—शीशा

(३)

पीके नाम से बिकत है,
कामिन गोरी गात।
एक बेर दो बेर सती भइ,
पिया न पूछे बात॥

—दियासिलाई

(४)

चटाख पटाख कब से।
हाथ पकड़ा जब से॥
आह आवे कब से।
आधा गया जब से।
चुपचाप कब से।
सारा गया जब से॥[1]

—शीशे की चूड़ी

(५)

एक नार वह औषध खाए।
जिस पर थूके वह मर जाए।
उसका पी जब छाती लाय।
अन्धा नहीं काना हो जाय।[2]

—बंदूक

(६)

नई की ढीली,
पुरानी की तंग।
बूझो तो बूझो,
नहीं चलो मेरे संग॥

—चिलम

१. यह थोड़े पाठांतरों के साथ कई रूपों में प्रचलित है।
२. बन्दूक छोड़ने वाला निशाना लगाते समय एक आँख बन्द कर लेता है।

(ख) मुकरियाँ

(१)

अंगों मेरे लपटा आवे।
वाका खेल मोरे मन भावे।
कर गहि, कुच गहि, गहे मोरि माला।
ऐ सखी साजन ना सखी बाला॥

(२)

अपने आए देत जमाना।
है सोते को यहाँ जगाना॥
रंग और रस का फाग मचाया[1]
आप भिजे औ मोहिं भिजाया।
वाको कौन न चाहे नेह।
ऐ सखी साजन ना सखी मेह॥

(३)

नीला कंठ औ पहिरे हरा।
सीस मुकुट नाचे वह खड़ा
देखत घटा अलापै जोर।
ऐ सखी साजन ना सखी मोर[2]॥

(४)

देखत मे है बड़ उजियारी।[3]
है सागर से आती प्यारी।[4]

१. पाठांतर—(क) रंग रस का फाग मचाया। (ख) रंग-रास का फाग मचाया।

२. पाठांतर—चोर।

३. पाठांतर—देखत के दो घड़ी उजियारी। ४. पाठांतर—सब संगर से आती प्यारी।

सिगरी रैन संग ले आती ।[1]
ऐ सखी साजन ना सखी मोती ।।[2]

(५)

उठा दोनों टाँगन बिच डाला ।
नाप-तोल में देखा भाला ।।
मोल-तोल में है वह महँगा ।
ऐ सखी साजन ना सखी लहँगा ।।

(६)

धमक चढ़ै सुध-बुध बिसरावै ।
दाबत जाँघ बहुत सुख पावै ।।
अति बलवन्त दिनन का थोडा ।
ऐ सखी साजन ना सखी घोड़ा ।।

(७)

आठ अंगुल का है वह असली ।
उसके हड्डी न उसके पसली ।
लटाधारी गुरु का चेला ।
ऐ सखी साजन ना सखी केला ।।

(८)

देखन में वह गाँठ-गठीला ।
चाखन मे वह अधिक रसीला ।
मुख चूमूं तो रस का भाँडा ।
ऐ सखी साजन ना सखी गाँडा ।।[3]

(९)

टट्टी तोड़ के घर मे आया ।
अरतन-बरतन सब सरकाया ।
खा गया पी गया दे गया बुत्ता ।[4]
ऐ सखी साजन ना सखी कुत्ता ।।

१. पाठांतर—सगरी रैन मैं संग ले सोती । २ 'मोती' परिनिष्ठित हिन्दी में पुल्लिंग है, किन्तु भोजपुरी आदि की तरह यहाँ वह स्त्रीलिंग में प्रयुक्त हुआ है ।

३. ईख, गन्ना ।

४. बुत्ता देना—धोखा देना, झाँसा देना ।

(१०)

दुर-दुर करूँ तो भागा जाए।[1]
छन बाहर छन आँगन आए।
देहलि[2] छोड़ कहीं नहीं सुत्ता[3]।
ऐ सखी साजन ना सखी कुत्ता॥

(११)

सेज पड़ी मेरे आँखों आया।
डाल सेज मोहिं मजा दिखाया।
किससे कहूँ मजा मैं अपना।
ऐ सखी साजन ना सखी सपना।

(१२)

मेरा मुँह पोंछे मोको प्यार करे।
गरमी लगे तो बयार करे॥
ऐसा चाहत सुन यह हाल।
ऐ सखी साजन ना सखी रूमाल॥

(१३)

द्वारे मोरे खड़ा रहे।
धूप-छाँव सब सर पर सहे।
जब देखो मोरि जाए भूख।
ऐ सखी साजन ना सखी रूख।

(१४)

एक सजन मोरे मन को भावे।
जासे मजलिस बड़ी[4] सुहावे।
सूत सुनूँ उठ दौड़ूँ जाग।
ऐ सखी साजन ना सखी राग॥

(१५)

सारी रैन मोरे सँग जागा।
भोर भए तब बिछुड़न लागा।

१. पाठांतर—दौड़ा आए। २. देहरी। पाठांतर—दीहल। ३. सोता।
४. पाठांतर—खड़ी।

वाके बिछुड़त फाटे हिया।
ऐ सखी साजन ना सखी बिया॥

(१६)

रैन पड़े जब घर में आवे।
वाका आना मोको भावे॥
लै पर्दा मैं घर में लिया।
ऐ सखी साजन ना सखी दिया॥

(१७)

अंगों मेरे लिपटा रहे।
रंग-रूप का सब रस पिए।
मैं भर जनम न वाको छोड़ा।
ऐ सखी साजन ना सखी चूड़ा॥

(१८)

मेरे घर में दीनी सेंध।
ढुलकत आवे जैसे गेंद।
वाके आए पड़त है सोर।
ऐ सखी साजन ना सखी चोर॥

(१९)

नित मेरे घर वह आवत है।
रात गए फिर वह जावत है।
फँसत अमावस गोरि के फन्दा।
ऐ सखी साजन ना सखी चन्दा॥

(२०)

द्वारे मोरे अलख जगावे।
भभूत विरह के अंग लगावे॥
सिंगी[1] फूंकत[2] फिरै वियोगी।
ऐ सखी साजन ना सखी जोगी॥

(२१)

टप टप चूसत तन को रस।
वासे नाहीं मेरा बस।

१. सिंगी—सींगनुमा एक बाजा। २. सिंगी फूंकत—बाजा (सिंगी) बजाता है। कुछ साधुओं के पास यह बाजा होता है।

लट-लट के मैं हो गई पिंजरा।[१]
ऐ सखी साजन ना सखी जरा।।[२]

(२२)

जोर भरी है जवानी दिखावत।
हुमुकि-हुमुकि[३] मो पै चढ़ि आवत।
पेट मे पाँव दे दे मारा।[४]
ऐ सखी साजन ना सखी जारा।[५]

(२३)

लौंडी भेज उसे बुलवाया।
नंगी हो कर मे लगवाया।
हमसे उससे हो गया मेल।
ऐ सखी साजन ना सखी तेल।

(२४)

रात दिना जाको है गौन।[६]
खुले द्वार वह आवे भौन।
वाको हर एक बतावे कौन।
ऐ सखी साजन ना सखी पौन।।[७]

(२५)

हाट चलत मे पड़ा जो पाया।
खोटा-खरा मै न परखाया।
ना जानूं वह हैगा[८] कैसा।
ऐ सखी साजन ना सखी पैसा।।

(२६)

रात समय वह मेरे आवे।
भोर भए घर से उठ जावे।।
यह अचरज है सबसे न्यारा।
ऐ सखी साजन ना सखी तारा।।

१. दुबली हो गई। एसी दुबली हो गई कि अस्थि-पिंजर शेष रह गया।
२. बुढ़ापा।
३. जोर-शोर मे, पूरी शक्ति से। ४. मारे सर्दी के पैर पेट की तरफ़ सिकोड लेती हूँ। ५. जाड़ा।
६. गमन, आना। ७. पवन, हवा।
८. है।

(२७)

हरा रंग मोहिं लागत नीको[1]।
वा बिन जग लागत है फीको ॥
उतरत चढ़त मरोरत अंग।
ऐ सखी साजन ना सखी भंग ॥[2]

(२८)

कसके छाती पकड़ रहे।
मुँह से बोले न बात कहे ॥
ऐसा है कमिनी का रँगिया।[3]
ऐ सखी साजन ना सखी अँगिया ॥

(२९)

बन में रहे वह तिरछी खडी।
देख सके मेरे पीछे पड़ी ॥
उन बिना मेरा कौन हवाल।
ऐ सखी साजन ना सखी बाल ॥[4]

(३०)

पडी थी मैं अचानक चढ़ आयो।
जब उतर्यो तो पसीनो आयो।[5]
सहम गई नहिं सकी पुकार।
ऐ सखी साजन ना सखी बुखार ॥

(३१)

आँख चलावे भौ मटकावे।
नाच-कूद के खेल दिखावे।[6]
मन में आवे ले जाऊँ अन्दर।
ऐ सखी साजन ना सखी बन्दर ॥

१. गहरे हरे रंग की भाँग अच्छी होती है। २. भाँग।
३. कामिनी का रंगीला छैला।
४. भुट्टा।
५. पसीना आने से बुखार उतर जाता है।
६. पाठांतर—खिलावे।

(३२)

उछल-कूद के वह जो आया।
धरा-टंगा[1] वह सब कुछ खाया ॥
दौड़-झपट जा बैठा अन्दर।
ऐ सखी साजन ना सखी बन्दर ॥

(३३)

छोटा-मोटा अधिक सोहाना।
जो देखे सो होय दिवाना।
कभी वह बाहर कभी वह अन्दर।
ऐ सखी साजन ना सखी बन्दर ॥

(३४)

सब्ज रंग मेंहदी सा आवे।[2]
कर छूवत नैनन चढ़ जावे।[3]
बैठत-उठत मरोरत अंग।
ऐ सखी साजन ना सखी भंग।

(३५)

सोभा सदा बढ़ावन हारा।
आँखों ते छिन होत न न्यारा ॥
आए फिर मेरे मन रंजन।
ऐ सखी साजन न सखी अंजन ॥

(३६)

बरसा बरस वह देख में आवे।[4]
मुंह से मुंह लगा रस प्यावे ॥
वा ख़ातिर मैं खरचूं दाम।[5]
ऐ सखी साजन ना सखी आम ॥

१. पाठांतर—टँका।
२. पाठांतर—सेज रंग मेंहदी पर धावे। ३. उसका नशा हाथ लगाते ही आँखों पर छा जाता है।
४. बारिश के बाद ही प्रायः पका आम खाते है। कहा जाता है कि उसके पहले गर्मी करता है। ५. पाठांतर—वा खातिर में खरचे दाम।

(३७)

वाको रगड़ा नीको लागे[1]।
चढ़े जोबन[2] पर मजा दिखावे।
उतरत मुंह का फीका रंग।[3]
ऐ सखी साजन ना सखी भंग।।

(३८)

मो खातिर बाजार से आवे।
करे सिंगार[4] तब चूमा पावे।
मन बिगड़े[5] नित राखत मान।
ऐ सखी साजन ना सखी पान।।

(३९)

बन-ठन के सिंगार करे।[6]
धर मुंह पर मुंह प्यार करे।
प्यार से मो पै देत है जान।
ऐ सखी साजन ना सखी पान।।

(४०)

वा बिन मोको चैन न आवे।
वह मेरी तिस[7] आन बुझावे।।
है वह सब गुन बारहबानी।
ऐ सखी साजन ना सखी पानी।।

१. (क) भंग रगडना या पीसना अच्छा लगता है। (ख) साजन के साथ प्रेम से झगड़ना अच्छा लगता है। २. (क) चढ़ी जवानी, (ख) भाँग का नशा जब पूरी तरह चढ़ा हो। ३. नशा उतरने पर मुँह पर उदासी छा जाती है। 'साजन' शब्द के साथ इस पंक्ति की सार्थकता स्पष्ट है।

४. कत्था, चूना, सुपारी से पान अपना शृंगार करता है। साजन बनता सँवरता है। ५. (क) मुँह का स्वाद खराब होने पर। (ख) वासना जगने पर।

६. साजन के प्रसंग में स्पष्ट है। पान के प्रसंग में कत्था-चूना आदि से युक्त होना शृंगार है।

७. (क) तृषा, प्यास। (ख) कामेच्छा। ८. बारहबानी = (बारहबानी सोने की तरह) गुणों मे पूर्ण।

(४१)

आप हिलै[1] वह मोय हिलावे।
वाका हिलना मोको भावे॥
हिल-हिल के वह हुआ नसंखा।[2]
ऐ सखी साजन ना सखी पंखा॥

(४२)

छठे-छमासे[3] मेरे घर आवे।
आप हिले औ मोय हिलावे।[4]
नाम लेत मोय आवे संखा।[5]
ऐ सखी साजन ना सखी पंखा॥

(४३)

गद भर जोर हमें दिखलावे।
मुफ़्त मेरे छाती चढ़ आवे॥
छूट गया सब पूजा-जाप।[6]
ऐ सखी साजन ना सखी ताप॥[7]

(४४)

घर आवें मुख फेर धरें।
दे दुहाई मन को हरें॥
कभू[8] करत है मीठे बैन।
कभू करत हैं रूखे नैन।[9]
ऐसा जग मे कोऊ होता।
ऐ सखी साजन ना सखी तोता।

(४५)

सब्ज़ रंग[10] औ मुख पर लाली[11]।
उस पीतम गल कंठी काली॥

१. पाठांतर—हले। २. निःशंक। यह शब्द यहाँ बहुत सार्थक नहीं है। सम्भव है मूल शब्द कुछ और रहा हो। यदि 'ढीला' अर्थ लें तो ठीक हो सकता है।
३. पाठांतर—छमाहे। ४. पाठांतर—आप हिले और मोय हलावे। ५. शंका। पाठांतर—संक्खा।
६. पाठांतर—जप। ७. ताप—गर्मी, ज्वर। पाठांतर—तप।
८. कभी। ९. तोताचश्मी।
१०. (क) हरा. (ख) प्रसन्नवदन (साजन के सन्दर्भ में)। ११. (क) लालिमा (ख) जवानी और गोरेपन आदि की सुर्खी।

भाव-सुभाव जंगल में होता।
ऐ सखी साजन ना सखी तोता ।।

(४६)

अति सुरंग[1] है रंग-रँगीलो।
औ गुनवंत बहुत चटकीलो।[2]
राम भजन बिन कभी न सोता।[3]
ऐ सखी साजन ना सखी तोता ।।

(४७)

मुख सफ़ेद है वाका रंग।[4]
साँझ फिरी मैं वाके संग।
गले में कंठा स्याह थे गेसू[5]।
ऐ सखी साजन ना सखी टेसू ।।

(४८)

लपट-लपट के वाके होई।
छाती पाँव लगा के सोई ।।[6]
दाँत से दाँत बजे तो ताड़ा।
ऐ सखी साजन ना सखी जाड़ा ।।

(४९)

नंगे पाँव फिरन नहिं देत।
पाँव से मिट्टी लगन नहिं देत।
पाँव का चूमा लेत निपूता :
ऐ सखी साजन ना सखी जूता।

(५०)

ऊँची अटारी पलँग बिछायो।
मैं सोई मेरे सिर पर आयो ।।
खुल गई अखियाँ भई अनन्द।
ऐ सखी साजन ना सखी चन्द।

१. पाठांतर—सारंग। २. चटकीले रंग का। ३. तोता 'राम-राम' करता है।
४. (क) टेसू का फूल काला, लाल, सफ़ेद होता है। (ख) साजन गौर वर्ण का तथा लालिमायुक्त है। ५. (क) बाल (साजन के या पलाश के), (ख) टेसू की काले रंग की पट्टी जिसका संकेत ऊपर है।
६. पाँव को पेट या छाती तक ले जाकर सोने से जाड़ा कम लगता है।

(५१)

आधी रात गए आयो दइमारो।[1]
सब अभरन मेरे तन से उतारो।[2]
इतने में सखी हो गई भोर।
ऐ सखी साजन ना सखी चोर॥

(५२)

मोको तो पूरा ही भावे।[3]
घटे-बढ़े पर मोय न सुहावे।
ढूंढ़-ढूंढ़ के लाई पूरा।
क्यों सखी साजन ना सखी चूड़ा॥[4]

(५३)

सोलह मुहर या सेज पै लावै।[5]
हड्डी से हड्डी खटकावै।[6]
खेलत खेल है बाजी बद कर।
ऐ सखी साजन ना सखी चौसर।

(५४)

एक सजन वह गहरा प्यारा।
जा से घर मेरा उजियारा॥
भोर भई तब बिदा मैं किया।
ऐ सखी साजन ना सखी दिया॥

१ दईमारा, स्त्रियों द्वारा दी जाने वाली एक गाली : 'जिसे भगवान् मारे'
२. (क) जेवर उतारा, (ख) नंगा किया।
३. पाठांतर—मोको दो हाथी को भावे। ४. यह छंद 'साजन' अर्थ में घटित नहीं होता।
५. (क) चौसर की चारों पट्टियों पर दोनों तरफ १६-१६ खाने होते हैं। (ख) सेज पर अनेक स्वर्ण-मुद्राएँ लाता है।
६. (क) पहले पासे हड्डी के बनते थे। (ख) हड्डी से हड्डी खटकाना—पूरी शक्ति से रमण आदि करना।

(५५)

वह आये तब शादी होय ।
उस बिन दूजा और न कोय ।।[1]
मीठे लागें वाके बोल ।
ऐ सखी साजन ना सखी ढोल ।।

(५६)

बखत-बेबखत[2] मोयें वाकी आस ।
रात दिना वह रहता है[3] पास ।
मेरे मन को सब करत है काम[4] ।
ऐ सखी साजन ना सखी राम ।।

(५७)

तन मन धन का वह है मालिक ।
वाने दिया मेरे गोद में बालक ।
वासे निकसत जी को काम ।[5]
ऐ सखी साजन ना सखी राम ।।

(५८)

उकड़ूँ[6] बैठ के बनावत[7] है ।
सौ-सौ चक्कर दे के घुमावत है ।[8]
तब वाके रस की क्या देत बहार ।
ऐ सखी साजन ना सखी कुम्हार ।।[9]

(५९)

अति सुन्दर जग चाहै जाको ।
मैं भी देख भुलानी वाको ।।

१. बिना दूल्हे के तो शादी हो ही नहीं सकती, और पुराने ज़माने में शादी के बाजों में ढोल भी अनिवार्यतः आवश्यक बाजा माना जाता था।

२. वक़्त-बे-वक़्त। ३. पाठांतर—रहवत। ४. सभी काम मेरे मन का करता है।

५. (क) अपने सभी काम राम से निकलते हैं।
(ख) हृदय की वासना की तृप्ति साजन से होती है।

६. घुटने मोड़कर बैठने का एक ढंग। ७ पाठांतर—मौपत। ८. चाक घुमाता है। ९. पाठांतर—सुनार, बहार।

देख रूप माया जो टोना।[1]
ऐ सखी साजन ना सखी सोना ॥

(६०)

बाट चलन मोरा अचरा गहे।
मेरी सुने न, अपनी कहे।
ना कुछ मोसो झगड़ा-झांटा।
ऐ सखी साजन ना सखी कांटा।

(६१)

वाकी मोको तनिक न लाज।
मेरे सब वह करत है काज।
मूड़ से मोको देखत नंगी।
ऐ सखी साजन ना सखी कंघी ॥

(६२)

बैसाख में मेरे ढिग आवत।
मोको नंगी सेज पर डारत॥[2]
न सोवे न सोवन देत अधरमी।
ऐ सखी साजन ना सखी गरमी॥

(६३)

चढ़ छाती[3] मोको लचकावत।
धोय हाथ[4] मो पर चढ़ि आवत।
समर लगत देखत हैं सगरी।
ऐ सखी साजन ना सखी गगरी ॥

(६४)

हुमक-हुमक[5] पकड़े मेरी छाती।
हँस-हँस मैं वा[6] खेल खिलाती।।

१. उसका रूप जैसे टोना कर देता है, अर्थात् मोहक है।
२. गर्मी में, बिना कपड़े का सोना सुखकर होता है।
३. गगरी के प्रसंग में—मेरे ऊपर चढ़कर गगरी छा जाती है। दूसरे प्रसंग मे-छाती पर चढ़कर। ४. गगरी के प्रसंग में—भरने वाले प्रायः उसे नदी आ में भरते समय धो लेते हैं।
दूसरे प्रसंग में—हाथ धोकर, बुरी तरह।
५. उल्लसित होकर, आनन्दित होकर। ६. मैं वा = मैं और वह।

चौंक पड़ी जो पायो खड़का[1]।
ऐ सखी साजन ना सखी लड़का ॥

(६५)

जब माँगूं तब जल भर लावे।
मेरे मन की तपन[2] बुझावे॥
मन का भारी[3] तन का छोटा।
ऐ सखी साजन ना सखी लोटा।

(६६)

जब मोरे मन्दिर[4] में आवे।
सोते मुझको आन[5] जगावे॥
पढ़त फिरत वह बिरह के अच्छर।[6]
ऐ सखी साजन ना सखी मच्छर॥

(६७)

बेर-बेर सोवतहिं जगावै।
ना जागूं तो काटे खावे।[7]
व्याकुल हुई मैं हक्की-बक्की।
ऐ सखी साजन ना सखी मक्खी।

(६८)

आठ पहर[8] मेरे ढिग रहे।
मीठी प्यारी बातें कहे॥
स्याम बरन और राती[9] नैना।
ऐ सखी साजन ना सखी मैना।

१ पायो खड़का—कहीं कुछ भी खड़का, कहीं कुछ भी आवाज हुई।

२. पाठांतर—विपत। ३ बड़ा। लोटे का मुंह छोटा होता है, पर भीतर पानी काफ़ी आता है। साजन अर्थ में—शरीर का छोटा है पर दिल का बड़ा है।

४. घर। ५. आकर। ६. मच्छर भन-भन करता फिरता है।

७. काटे खावे—मक्खी काट लेती है। साजन काट खाने को दौड़ता है, बहुत नाराज होता है।

८. आठ पहर=दिन-रात। ९. लाल।

(६९)

उमड़-घुमड़ कर[1] वह जो आया।
अन्दर मैंने पलँग बिछाया।।
मेरा वाका लागा नेह।
ऐ सखी साजन ना सखी मेह।[2]

(७०

मुख मेरा चूमत दिन रात।
होंठों लगत[3] कहत नहिं बात।
जासे मेरी जगत में पत।[4]
ऐ सखी साजन ना सखी नथ।।

(७१)

सरब सलोना[5] सब गुन नीका।
वा बिन सब जग लागे फीका।।
वाके सिर पर होवे को न।[6]
ऐ सखी साजन ना सखी नोन[7]।।

(७२)

हीलत[8]-झूमत नीको लागै।[9]
अपने ऊपर मोहिं चढ़ावै।।[10]
मैं वाकी वह मेरा साथी।
ऐ सखी साजन ना सखी हाथी।।

१ बादल उमड़-घुमड़कर आता है। साजन ज़ोर-शोर से आते हैं। २. बादल (सं० मेघ)।

३. साजन होंठों से लग जाता है। नथ भी। ४. जिससे मेरी जगत में इज़्ज़त (पति) है। 'नथ' सधवा का चिह्न है और पति भी। सधवा शुभ मानी जाती है, मान पाती है, और विधवा अशुभ मानी जाती है अतः वह सम्मान नहीं पाती।

५. नमक नमकीन (सलोना) है, साजन सुन्दर (सलोना) है। ६. उससे बड़ा या अच्छा कोई भी नहीं है। ७. नोन = नमक।

८. पाठांतर = हालत। ९. हिलता-झूमता अच्छा लगता है। १०. साजन के प्रसंग में विपरीत रति।

(७३)

एक तो वह देह का भारू।[1]
छोटे नैन सदा मतवारू।[2]
वह पीउ मेरे सेज का साथी।[3]
ऐ सखी साजन ना सखी हाथी॥

(७४)

सगरी रैन छतिअन पर[4] राखा।
रंग रूप सब वाका चाखा॥
भोर भई सब दिया उतार।[5]
ऐ सखी साजन ना सखी हार॥

परिशिष्ट

परिशिष्ट रूप में दी गई ये दो मुकरियाँ खुसरो के नाम से प्रचलित तो हैं, किन्तु मेरे विचार में खुसरो की हैं नहीं।

(१)

मेरो मोसों सिंगार करावत।
आगे बैठ के मान बढ़ावत॥
वासे चिक्कन[6] ना कोउ दीसा।
ऐ सखी साजन ना सखी सीसा॥

(२)

आप जले औ मोय जलावे।
पी-पी कर मोरे मुँह आवे॥
एक मैं अब मारूँगी मुक्का।
ऐ सखी साजन ना सखी हुक्का॥

१ भारी। २. साजन मस्त रहता है, हाथी भी मदमस्त रहता है। ३. केवल 'साजन' अर्थ मे सार्थक।
४. सीने पर। ५. रात में हार से विशेष शृंगार किया था प्रातः उतार दिया। साजन-अर्थ में भी स्पष्ट है।
६. चिकना।

(ग) निस्बतें

(१)

हलवाई और पायजामे में क्या निस्बत है ?

—कुंदा[1]

(२)

दामन और अँगरखे में क्या निस्बत है ?

—पर्दा[2]

(३)

घोड़े और बजाज में क्या निस्बत है ?

—थान[3], जीन[4]

(४)

मुश्क[5] और आदमी में क्या निस्बत है ?

—दहान[6]

१. कुंदा =(क) खोया, मावा । (ख) कपड़े की शिकन दूर करने तथा चमक के लिए मध्यकाल में कपड़े को कुंदे (एक प्रकार की मुगरी) से पीटा जाता था ।
२. पर्दा=(क) दामन या पल्ला भी परदानुमा होता है। (ख) मध्यकाल में अँगरखा पहना जाता था, जो अचकन या शेरवानी से मिलता-जुलता होता था। उसके छाती पर के हिस्से को 'परदा', कहते थे, क्योंकि यह परदे की तरह खींचकर तनियों से बाँधा जाता था। अँगरखे में बटन नहीं होते थे।
३. थान =(क) घोड़ा-हाथी बाँधने का स्थान। (ख) कपड़े का थान।
४. जीन =(क) घोड़े का चारजामा। (ख) एक प्रकार का मोटा कपड़ा।
५. कस्तूरी। ६. दहान=(क) सुराख। कस्तूरी के दाने निकालने के लिए उसमें सुराख करते हैं। (ख) मुँह। आदमी के मुँह होता है।

(५)

बादशाह और मुर्ग़ में क्या निस्बत है ?

—ताज[1]

(६)

आदमी और गेहूँ में क्या निस्बत है ?

—बाल[2]

(७)

अँगरखे और पेड़ मे क्या निस्बत है ?

—कली[3]

(८)

कपड़े और दरिया में क्या निस्बत है ?

—पाट[4]

(९)

मकान और कपड़े में क्या निस्बत है ?

—लट्ठा[5]

१. बादशाह और मुर्ग़ दोनों के 'ताज' होना है। ताज —(क) मुकुट। (ख) कलँगी।

२. बाल = (क) केश। (ख) बाली।

३. कली = (क) कलीनुमा तिकोना कपड़ा जो कुरते, अँगरखे आदि मे लगता है। छः कलियाँ लगने के कारण अँगरखे की एक किस्म को 'छकलिया' कहते हैं। (ख) पेड़-पौधे की कली, गुचा।

४. चौड़ाई। कपड़े और नदी दोनों ही की चौडाई को 'पाट' कहते है।

५. इस प्रसग में एक मेरे मित्र ने यह बतलाया कि 'लट्ठा' एक नाप (साढे पाँच हाथ) होती है। मध्यकाल मे मकान इसी से नापकर बनाए जाते थे, तथा 'लट्ठा' एक कपडा (मारकीन) भी होता है। किन्तु यदि दोनों मे यह सबंध लें तो यह निस्बत खुसरो की नही हो सकती। उनके समय मे लट्ठा शब्द इस अर्थ में नही चलता था। कपड़े के अर्थ मे 'लट्ठा' अंग्रेज़ी 'लांग क्लाथ' का तद्भव है, अतः अंग्रेजों के आने के बाद ही इसका प्रचलन हुआ होगा। वस्तुतः पहले कहीं-कहीं 'गज़' को भी 'लट्ठा' कहते रहे हैं, और गज से कपडे नापे जाते हैं। मकान में तो लट्ठा (बल्ली) लगता ही है।

(१०)

मकान और पायजामे मे क्या निस्बत है ?

—मोरी[1]

(११)

हलवाई और दबकई में क्या निस्बत है ?

—कंदा (कुंदा)[2]

(१२)

दरिया और गहने में क्या निस्बत है ?

—मगर[3]

(१३)

मकान और अनाज में क्या निस्बत है ?

—कँगनी[4]

(१४)

आम या शलजम और कपड़े में क्या निस्बत है ?

—जाली[5]

(१५)

गहने और दरख़्त मे क्या निस्बत है ?

—पत्ता[6]

१. मोरी = (क) नाली। (ख) पाजामे की मोहरी।

२. फ़ारसी लिपि मे लिखित कदा को 'कंदा' और 'कुदा' दोनों पढ़ा जा सकता है। हलवाई के संदर्भ में 'कदा' शकरकद है, और दबकई के संदर्भ में सोन-चाँदी के पत्तर पीटने का कदा। 'दबकई' धातुओं के तार या पत्तर बनाने वाले को कहते है।

३. मगर = (क) घड़ियाल (यह दरिया में होता है)। (ख) कड़े, कंगन आदि प्राय: शेर या मगर आदि के मुँह जैसे किनारों वाले (मध्यकाल में) बनते रहे है।

४. कँगनी = (क) छत या छाजन के नीचे दीवार में उभरी लकीर जो सौन्दर्य के लिए बनाई जाती है। (ख) एक अन्न जिसका चावल आदि खाया जाता है। इसे आजकल काँकुन या टाँगुन भी कहते हैं।

५. जाली = (क) आम या शलजम के रेशे। (ख) (तरह-तरह के) छेदों वाला कपड़ा।

६. पत्ता = (क) कान में पहना जाने वाला एक मध्यकालीन गहना, जो पत्ते की शक्ल का होता था। (ख) पेड़-पौधे का पत्ता।

(१६)

आम और जेवर में क्या निस्बत है?

—कैरी (कीरी)[1]

(१७)

बजाज और फल में क्या निस्बत है?

—किमरिख (कमरख)[2]

(१८)

जानवर और बंदूक में क्या निस्बत है?

—मक्खी, घोड़ा, तोता, कुत्ता[3]।

(१९)

बंदूक और कुएँ में क्या निस्बत है?

—कोठी[4]

(२०)

गोटे और आफताब में क्या निस्बत है?

—किरन[5]

(२१)

घोड़े और हरफ़ों में क्या निस्बत है?

—नुक्ता[6], लाम[7]

१. फारसी लिपि में 'कैरी' और 'कीरी' एक ही तरह से लिखते हैं। कैरी=आम जिसपर काला दाग होता है। इसे 'कोयलाम' या 'कोयलपट्टा' भी कहते हैं। आम धारणा है कि यह बहुत मीठा होता है। कीरी हाथ में पहना जाने वाला एक गहना। इसका विशेष प्रचार पंजाब की तरफ रहा है।

२. फ़ारसी लिपि में किमरिख (एक प्रकार का मोटा कपड़ा) और कमरख (एक फल) प्रायः एक ही प्रकार से लिखे जाएँगे।

३. ये चारों जानवर भी हैं, और बंदूक के विभिन्न भागों के नाम भी हैं।

४. कोठी=(क) बंदूक की वह जगह जहाँ बारूद भरी जाती है। (ख) कुएँ की दीवार का वह भाग जो पानी के भीतर होता है।

५. किरन=(क) कलाबत्तू का विशेष प्रकार का बना झालरनुमा गोटा। (ख) आफ़ताब अर्थात् सूरज की किरण।

६. नुक्ता (अर०) =(क) घोड़े की मोहरी का वह भाग जो उसके नथने के ऊपर होता है। (ख) बिन्दु जो फ़ारसी के (बे, पे, ते, जीम, चे आदि) अनेक हरफ़ों के नीचे, ऊपर या बीच में होता है। ७. लाम=(क) घोड़े का साज। (ख) फ़ारसी का एक हर्फ़ 'लाम'।

(२२)

हलवाई और बजाज मे क्या निस्बत है ?

—कंद (कुंद)[1]

१. फारसी मे 'कंद' और 'कुंद' एक ही प्रकार से लिखते है। कंद = चीनी, मिश्री। कुंद = बजाज कपड़ों पर चमक के लिए कुंद कराते रहे हैं। कुंदीगरी मध्यकाल का एक प्रमुख पेशा था। ये लोग चमक लाने और सिलवट दूर करने के लिए कपड़े को एक चपटी लकड़ी पर रखकर मुंगरी से पीटते थे। इस क्रिया को 'कुंदी करना' कहते है। इस शब्द का आज लाक्षणिक रूप में प्रयोग खूब मारने के लिए होता है।

(घ) दो-सख़ुन

(क) हिन्दी

पंडित क्यों न नहाया ?
धोबिन क्यों मारी गई ?
—धोती न थी।[1]

(२)

घर क्यों अँधियारा ?
फ़कीर क्यों बिगड़ा[2]
—दिया न था[3]

(३)

दीवार क्यों टूटी ?
राह क्यों लूटी ?
—राज[4] न था

(४)

खाना क्यो न खाया ?
जामा क्यों न धुलवाया ?
—मेल[5] न था

(५)

जोरू क्यों मारी ?
ईख क्यों उजाड़ी ?
—रस[6] न था

१. धोती = (क) पहनने की धोती न थी। (ख) कपड़े नहीं धोती थी।
२. पाठांतर- बिड़ारा। ३. (क) चिराग नहीं था। (ख) भीख में कुछ भी नहीं दिया था।
४. राज = (क) राजगीर। (ख) राज, राज्य-व्यवस्था।
५. फ़ारसी लिपि में 'मेल' और 'मैल' एक ही तरह से लिखते हैं। मेल (फा०) = इच्छा, ख्वाहिश। मैल = गन्दगी।
६. रस = (क) प्रेम। (ख) ईख के भीतर का मधुर रस।

(६)

पोस्ती[1] क्यों रोया ?

चौकीदार क्यों सोया ?

—**अमल[2] न था**

(७)

जोगी क्यों भागा ?

ढोलकी क्यों न बाजी ?

— **मढ़ी न थी ।[3]**

(८)

ककड़ी क्यों छोटी ?

लकड़ी क्यों टूटी ?

—**बोदी थी[4]**

(९)

राजा प्यासा क्यो ?

गदहा उदासा क्यों ?

—**लोटा न था[5]**

१. अफ़ीम का नशा करनेवाला । २. अमल =(क) नशा, अफ़ीम । (ख) पहरे का समय ।

३. मढ़ी न थी =(क) रहने को झोपडी या कुटी न थी । (ख) चमड़े से मढ़ी हुई न थी ।

४. स्पष्ट नहीं है । इससे मिलता-जुलता एक दूसरा 'दो-सखुन' लोक प्रचलित है—

ककडी क्यों हुई ?

लड़की क्यों गई ?

—**बोवी थी**

पहले का उत्तर है 'बो दी थी', दूसरे का 'बोदी' (=अकुशाग्र) थी ।

५. (क) लोटा नहीं था, अत: राजा पानी नहीं पी सका । (ख) गदहे ने लोटकर अपनी थकावट मिटाई नही थी, अत. उदास था ।

(१०)

खिचड़ी क्यों न पकाई ?
कबूतरी क्यों न उड़ाई ?
—छड़ी न थी[1]

(११)

रोटी जली क्यों ?
घोड़ा अड़ा क्यों ?
पान सड़ा क्यों ?
—फेरा न था।[2]

(१२)

अनार क्यों न चखा ?
वज़ीर क्यो न रखा ?
—दाना[3] न था।

(१३)

गोश्त क्यो न खाया ?
नर्तकी ने क्यों न गाया ?
—कला[4] न था

१. 'छड़ना' क्रिया का प्रयोग छाँटना (अनाज को कूटकर साफ करना) के अर्थ में होता है। खिचडी इसलिए नहीं पकाई कि वह छड़ी न थी, अर्थात् 'कूटकर साफ़ की हुई न थी', कबूतरी इसलिए नहीं उड़ाई कि उड़ाने के लिए छड़ी (डंडा) न थी।

२. रोटी को जलने से बचाने के लिए ऊपर-नीचे फेरते अर्थात् उलटते हैं, घोड़े को फेरते हैं, अर्थात् ठीक से चाल सिखाते हैं, इसका अभ्यास न होने मे वह अड़ जाता है, पान की ढेरी को यदि उलटते-पलटते न रहे तो पान सड़ जाता है। यहाँ 'फेरना' का प्रयोग तीन अर्थों में हुआ है।

३ (क) अनार मे दाना न था। (ख) वज़ीर बुद्धिमान (फारसी में 'दाना' का अर्थ बुद्धिमान होता है) न था।

४. कला =(क) टुकड़ा, बोटी। गोश्त की बोटी नहीं थी, अतः नहीं खाया। (ख) हुनर। नर्तकी मे गाने की कला न थी अतः नहीं गाया। गार्सां द तासी ने अपने इतिहास मे 'कला' का नर्तकी के प्रसग मे अर्थ 'काल' या 'अवसर' माना है, किन्तु मैं इससे सहमत नहीं हूँ।

(१३ अ)

गोश्त क्यों न खाया ?
डोम क्यों न गाया ?
—गला[1] न था

(१४)

गढ़ी क्यों छिनी ?
रोटी क्यों माँगी ?
—खाई न थी[2]

(१५)

समोसा क्यों न खाया ?
जूता क्यों न चढ़ाया ?
—तला न था[3]

लोक में

'पराठा क्यो न खाया ?
जूता क्यों न पहना ?'

रूप में भी इसका प्रचार है।

(१६)

दही क्यों न जमी ?
नौकर क्यों न रखा ?
—जामिन[4] न था

१. गला = (क) गला हुआ। (ख) गाने के योग्य अच्छा गला।
२. (क) गढ़ी के चारो तरफ खाई न थी। (ख) रोटी नहीं खाई थी, अतः माँगी।
३. समोसा अभी तला हुआ न था अतः नही खाया, जूते के तल्ला नहीं था, अतः नही पहना। फ़ारसी लिपि में 'तला', 'तल्ला' प्रायः एक ही प्रकार से लिखते हैं।
४. दही के प्रसग मे जामिन का अर्थ 'जामन' 'खट्टा' या 'जोरन' है, जिसे दही जमाने के लिए दूध मे डालते हैं। नौकर के पक्ष मे इसका अर्थ है 'जमानतदार'। 'दही' का स्त्रीलिंग मे प्रयोग द्रष्टव्य है।

(१७)
सितार क्यों न बजा ?
औरत क्यों न नहाई ?
—परदा[1] न था

(१८)
क्यारी क्यों न बनाई ?
डोमनी क्यों न गाई ?
— बेल[2] न थी

(१९)
पानी क्यों न भरा ?
हार क्यों न पहना ?
—गढ़ा[3] न था

(२०)
दरबार क्यों गए ?
ज़मीन पर क्यों बैठे ?
—चौकी[4] न थी

(२१)
रोटी क्यों सूखी ?
बस्ती क्यों उजड़ी ?
—खाई न थी।[5]

१. सितार के डांड पर स, रे, ग, म आदि बजाने के लिए धातु के मोटे तार या टुकड़े तागे या तांत से बंधे रहते हैं। इनकी संख्या प्राय: १३, १६ या १९ होती है। इन्हें परदा कहते हैं। औरत के संदर्भ में 'परदा' का अर्थ है 'कपड़े का परदा'।

२. बेल = (क) बेलचा, मिट्टी खोदने का एक औज़ार। (ख) सारंगी-जैसा एक बाजा। आज का 'बेला' इसी का विकसित रूप है।

३. गढ़ा = (क) गड्ढा। (ख) गढ़ा या बनाया हुआ। गहने गढ़े जाते हैं।

४. पाठांतर—दरबार क्यों न गए ? ज़मीन पर क्यों न बैठे ? ५. चौकी = (क) रक्षा-व्यवस्था। (ख) तख़्त (बैठने का)।

५. रोटी न खाने के कारण सूख गई, तथा बस्ती चारों ओर खाई न होने के कारण लूट ली गई, अत: उजड़ गई।

(ख) फ़ारसी और हिन्दी

(१)

दर जहन्नुम चीस्त[1]?
कामी को क्या चाहिए?
—नार[2]

(२)

कोह चे मी दारद[3]?
मुसाफ़िर को क्या चाहिए?
—संग[4]

(३)

शिकार बचे मी बायद कर्द[5]?
क़ूवते मग़ज़ को क्या चाहिए?
—बादाम[6]

(४)

माशूक रा चे मी बायद कर्द[7]?
हिन्दुओं का रख कौन है?
—राम[8]

(५)

तिश्नः रा चे मी बायद[9]?
मिलाप को क्या चाहिए?
—चाह[10]

१. जहन्नुम (नरक) में क्या है? २. नार=(क) (अर०) आग। (ख) (सं० नारि) स्त्री।

३. पहाड़ क्या रखता है, अर्थात् पहाड़ में क्या है? ४. संग=(क) (फ़ा०) पत्थर। (ख) (हिं०) साथ।

५. शिकार किससे करें? ६. बादाम=(क) (फ़ा० बा + फ़ा० दाम=जाल) जाल से। (ख) (फ़ा०) बादाम नामक मेवा।

७. माशूक को क्या करना चाहिए? ८. राम=(क) (फ़ा०) आज्ञापालन। (ख) (हिं०) भगवान राम।

९. प्यासे को क्या चाहिए? १०. चाह =(क) (फ़ा०) कुआँ। (ख) (हिं०) इच्छा, प्रेम।

(६)

क़ूवते रूह चीस्त[1] ?
प्यारी को कब देखिए ?
—सदा[2]

(७)

बार बर्दारी रा चे मी बायद[3] ?
कलावंत[4] को क्या कहिए ?
—गाओ[5]

(८)

शिकारी रा चे मी बायद[6] ?
मुसाफ़िर को क्या चाहिए ?
—दाम[7]

(९)

दुआ चे तौर मुस्तजाब शवद[8] ?
लश्कर मे कौन बैठे ?
—बाजारी[9]

(१०)

अज़ खुदा चे बायद तलबीद[10] ?
बिरहिन को क्या मिनती ?
—काम[11]

१. रूह या आत्मा का बल क्या है ? २. सदा=(क) (फ़ा०) आवाज, शब्द। (ख) (हिं०) हमेशा।

३. बोझ ढोने को क्या चाहिए ? ४. गानेवाला। ५ गाओ =(क) (फ़ा० 'गाव') बैल। (ख) (हिं०) गाओ।

६ शिकारी को क्या चाहिए ? ७. दाम =(क) (फ़ा०) जाल। (ख) (हिं०) पैसा, धन।

८. प्रार्थना किस तरह स्वीकार होती है ? ९. बाजारी =(क) (फा०) नम्रता से, दीनता से, रोने-धोने से। (ख) (फ़ा०) बाजारवाला।

१०. खुदा या ईश्वर से क्या माँगना चाहिए ? ११. काम=(क) कामना, इच्छा। (ख) वासना की पूर्ति।

(११)

सौदागर बच्च: राचे मी बायद[1],
बूचे[2] को क्या चाहिए?
—दूकान, दोकान[3]

(१२)

दर आईन: चे मी बीनंद[4]?
दुखिया को क्या न कहिए?
—रू, रो[5]

१ सौदागर के बच्चे को क्या चाहिए? २. जिसके कान कटे हों। ३. फ़ारसी लिपि मे 'दुकान' और 'दोकान' एक ही तरह से लिखा जाता है।
४. शीशे में क्या दीखता है? ५. 'रो' और 'रू' फ़ारसी लिपि मे एक प्रकार से ही लिखे जाते है। 'रो' (हिंदी) का अर्थ है 'रोओ' और 'रू' (फ़ारसी) का अर्थ है 'चेहरा'।

(ङ) ढकोसले

(१)

भैंस चढ़ी बबूल पर, और लप-लप गूलर खाय।
दुम उठा के देखा तो पूरनमासी के तीन दिन ॥[1]

(२)

खीर पकाई जतन से और चरखा दिया जलाय।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजाय। ला पानी पिला[2]।

(३)

गोरी के नैना ऐसे बड़े जैसे बैल के सींग।

(४)

भैंस चढ़ी बिटौरी[3] और लप-लप गूलर खाय।
उतर आ मेरे साँड़ की, कहीं हिफ़्ज़[4] न फट जाय ॥

१. पाठांतर —भैंसा चढ़ा बबूल पर गप-गप गूलर खाय।
दुम उठाके देखा तो ईद के तीन दिन ॥

दूसरी पंक्ति का एक और पाठांतर है—
उतर आ मेरे साँड़ की कहीं हिफ़्ज़ ना फट जाय। (दे० न० ४) इस ढकोसले के और भी कई पाठांतर मिलते हैं। यह गाँवों में भी प्रचलित है।

२. कहा जाता है कि एक बार खुसरो कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें बड़े जोर की प्यास लगी। एक कुएँ पर चार औरतें पानी भर रही थीं। वे पानी पीने पहुँच गए। उनमें से एक उन्हें पहचानती थी। उसने औरों को बताया कि ये ही खुसरो हैं जो पहेलियाँ, मुकरियाँ, ढकोसले आदि कहते हैं। चारों ने ही अलग-अलग फ़रमाइशें कीं। एक खीर पर कुछ सुनना चाहती थी, दूसरी चरखे पर, तीसरी कुत्ते पर और चौथी ढोल पर। खुसरो ने यह ढकोसला सुनाया। तब उन्हें पानी मिला।

३. उपलों की छोटी ढेरी। २. हिफ़्ज़ (अरबी) =गला, कंठ।

(५)

भादों पक्की पीपली[1], झड़-झड़ पड़े कपास।[2]
बी मेहतरानी दाल पकाओगी या नंगा ही सो रहूँ ।।

(६)

कोठी भरी कुल्हाड़ियाँ, तू हरीरा[3] करके पी।
बहुत ताऊल[4] है तो टप्पर[5] से मुँह पोंछ ।।

(७)

पीपल पकी पपेलियाँ[6], झड़-झड़ पड़े हैं बेर।
सर में लगा खटाक से, वाह बे तेरी मिठास ।।

१. पीपली नामक लता जिसमें लंबी-लंबी फलियाँ निकलती हैं, जो सुखाकर दवा के काम आती हैं। २. पाठांतर—चू-चू पड़े कपास।
३. हरीरा (अरबी हरीर.) =एक पेय जो दूध में मेवा आदि डालकर बनाया जाता है। ४. ताऊल=तिनका। ५. टाट
६. गोदा, पीपल का मीठा फल।

(च) गीत

(१)

मेरा जोबना नवेलरा भयो है गुलाल।
कैसे घर दीनी बकस मोरी माल।
निजामुद्दीन औलिया को कोई समझाय।
ज्यों ज्यों मनाऊं वह तो रूसो ही जाय।।
मोरा जोबना...।

चूड़ियाँ फोड़ूँ पलंग पर डारूँ।
इस चोली को दूँगी मैं आग लगाय।
सूनी सेज डरावन लागै, बिरहा अगिन मोहें डस-डस जाय।।
मोरा जोबना...।

(२)

बहुत रही बाबुल घर दुलहिन, चल, तेरे पी ने बुलाई।
बहुत खेल खेली सखियन सों, अंत करी[1] लरिकाई।।[2]
न्हाय धोय के बस्तर पहिरे, सब ही सिंगार बनाई।
बिदा करन को कुटुंब सब आये, सिगरे लोग-लुगाई।
चार कहारन डोली उठाई, संग पुरोहित नाई।
चले ही बनेगी होत कहा है, नैनन नीर बहाई।।
अन्त बिदा ह्वै चलिहै दुलहिन, काहू की कछु ना बसाई।
मौज-खुसी सब देखत रह गए, माता-पिता औ भाई।।
मोरि कौन संग लगन धराई[3], धन-धन तेरि है खुदाई।
बिन माँगे मेरी मंगनी जो दीन्ही, पर घर की जो ठहराई।।[4]
अँगुरी पकरि मोरा पहुँचा भी पकरे, कँगना अँगुठी पहिराई।
नौशा के सँग मोहि कर दीन्हीं, लाज-सकोच मिटाई।।

१. खत्म कर दी। २. बाल-सुलभ बातें। ३. विवाह तै किया। ४. पति की इच्छा के बिना ही उस अपरिचित से मेरा विवाह तै कर दिया।

सोना भी दीन्हा, रूपा भी दीन्हा, बाबुल दिल दरियाई।[1]
गहेल गहेला[2] डोलति आँगन मे, पकरि अचानक बैठाई॥
बैठत महीन कपरे पहनाये, केसर तिलक लगाई।
'खुसरो' चली ससुरारी[3] सजनी, संग नहीं कोई जाई॥

(३)

हजरत खाजा[4] संग खेलिए धमाल[5]
बाइस खाजा मिल बन-बन आयो तामे।
हजरत रसूल साहब जमाल[6]
अरब यार तेरो बसन्त बनायो
सदा रखिए लाल गुलाल।

(४)

ऐ सरवंता मवा-मोरी ला —[7] सब बना
खेलत धमाल खाजा मुइनुद्दीन और खाजा कुतुबुद्दीन।
शेख फ़रीद शकरगंज सुल्तान मशायख[8] नसीरुद्दीन औलिया
ऐ सरवता मवामवा—मोरी ला—सब बना।

(५)

दइआ री मोहे भिजोया[9] री
शाह निजाम[10] के रंग में
कपडे रँगन ते कुछ ना होत है
या रंग मे मैंने तन को डुबोया री
दइआ री मोहे भिजोया री॥
वाही के रंग से सुन बे शोख रंग
खूब ही मल-मल के धोया री
पीर निजाम के रंग में भिजोया री॥

१. उदार। २. उन्मत्त और पगली। ३. परलोक। यह गीत संगीतज्ञों में बहुत प्रसिद्ध है। आकाशवाणी से भी प्रायः यह गाया जाता है, यद्यपि कुछ पाठांतरों के साथ। जैसे 'सखियन सो' के स्थान पर 'सखियन संग' या 'न्हाय धोय के बस्तर पहिरे' के स्थान पर 'भाँति-भाँति के बस्तर पहिने' आदि।
४. ख्वाजा। ५. फाग का एक भेद (संगीत)। यहा अर्थ है, फाग अथवा होली।
६. सौन्दर्य, ऐश्वर्य। ७. स्पष्ट नहीं है। ८. बुजुर्ग लोग। ९. भिगोया।
१०. निजामुद्दीन औलिया।

(६)

औलिया तेरे दामन लागी[1]।
पढ़ियो मेरे ललना[2]।
औलिया तेरे दामन लागी।
ख्वाजा हसन को मैं मुजरे मिली[3]
ख्वाजा कुतुबुद्दीन।
औलिया तेरे दामन लागी।

(७)

अम्मा मेरे बाबा को भेजो जी
कि सावन आया।
बेटी तेरा बाबा तो बूढ़ा री
कि सावन आया।
अम्मा मेरे भाई को भेजो जी
कि सावन आया।
बेटी तेरा भाई तो बाला री
कि सावन आया।
अम्मा मेरे मामूं को भेजो जी
कि सावन आया।
बेटी तेरा मामूं तो बांका री
कि सावन आया।[4]

(८)

जो पिया आवन कह गए,
अजहुं न आए स्वामी हो
(ऐ) जो पिया आवन कह गए।
आवन आवन कह गए आए न बारह मास
(ए हो) जो पिया आवन कह गए।[5]

१. दामन लागी— तुम्हारे सहारे हैं, तुम्हारी मदद चाहती हूँ। २. प्रिय। यह मूलत: 'लला' या 'ललन' है। गीत की लय के लिए 'ललना' कर दिया गया है। ३. मुजरे मिली = सलाम करके अदब से मिली।

४. पाठांतर—'बाबा' के स्थान पर 'बाबुल' भी मिलता है। ऐसे ही 'जी' के स्थान पर 'री' तथा 'मामूं तो बांका री' के स्थान पर 'मामूं तो साहब री' भी मिलते हैं।

५. यह गीत आज भी स्त्रियों द्वारा झूले पर गाया जाता है।

(६)

हजरत निजामुद्दीन चिश्ती जरजरी बखश पीर।
जोइ-जोइ ध्यावै तेइ-तेइ फल पावै,
मेरे मन की मुराद भर दीजै अमीर[1]।।

(१०)

यह एक गीत मुझे एक संग्रह में मिला था—

हजरत महबूब इलाही निजामुद्दीन औलिया जरजरी बखस।
ख़्वाजा कुतुबद्दीन शेख फ़रीद शकरगज अमीर खुसरो गंजबखस।।
री मैं धाऊँ पाऊँ हजरत ख़्वा जादीन शकरगंज सुलतानम सायक महबूब इल
निजामुद्दीन औलिया अमीर खुसरो के बल-बल जाही।
अपना घर भला और आप मलिन किसके जाइए न इतना दुख पाइए।
गरज न कदा ने ताँउ फनाद खुसरो ग़रक शुद खूब शुद।
मस्त-ए-चरावाला-ए चाह तो बुरा जरद।
हजरत निजामुद्दीन औलिया भाई।
निश दिन चिराक देहली खुसरो अमीर बलि-बलि जाई।

अस्ताई सुल-नीला अंतरा

अमी बधावा आवो गावो चोटलरा
खुसरो लोग बुलाओ।

कोठ न कोठ दीयरे बारूनी जाम दी पीर मिलाओ।।
द्रुत मद्र द्रनात न मदिर ना आता रे दानी है या
यार मय ललीय लोभ ल ल ल ल ले
गरचे पुरसद आँह की मम के ये आवुर दोनि जाम सोज
खुसरो राव दरगाहत ते माज आवुर्दम

स्पष्ट ही इसका पाठ बहुत भ्रष्ट है।

इनके अतिरिक्त 'हजरत अमीर खुसरो औलिया के दरबार गावे' पंक्ति से युक्त कुछ गीत भी मिलते हैं। मेरे विचार में ये गीत उनके अपने होते तो वे स्वयं अपने नाम के साथ 'हजरत' न लगाते। ऐसे ही उपर्युक्त गीतों के मिश्रण से बने कुछ गीत भी मैंने कुछ लोगों को गाते हुए सुने। कुछ गीतों में 'अमीर खुसरो बलि-बलि जाए' पंक्ति भी मिलती है। कुछ गीत ऐसे भी हैं जिनमें यहाँ उद्धृत दोनों पंक्तियाँ साथ-साथ मिलती हैं। वस्तुतः संगीत जगत से इस प्रकार के गीतों का वृहद् संग्रह किया जा सकता है, किन्तु उन सबकी प्रामाणिकता प्रस्तुत संग्रह में संगृहीत छंदों से भी ज्यादा संदिग्ध है।

१. हजरत निजामुद्दीन।

(छ) क़व्वाली

(१)

निज़ाम तोरी सूरत पै बलिहारी।
सब सखियन मे चुन्दर मेरी मैली ॥
देख हँसे नर-नारी
अब के बहार चूंदर मोरी रँग दे,
निज़ाम पिया रख ले लाज हमारी ॥
निज़ाम तोरी सूरत पै बलिहारी,
सदका बाबा गंज शकर का
रख ले लाज लाज हमारी
मेरे घर निज़ाम पिया
निज़ाम तोरी सूरत की बलिहारी
कुतब फ़रीद मिलि आए बराती
खुसरो राजदुलारी
निज़ाम पिया रख ले लाज हमारी ॥

कुछ क़व्वालो को मैंने उपर्युक्त कव्वाली को इस रूप म गाते भी सुना है—

निज़ाम तोरी सूरत की बलिहारी।
सदक़ा बाबा गंज शकर का, रख ले लाज हमारी।
निज़ाम तोरी सूरत की बलिहारी।
ऐ रंगीली धन भाग वाके, जिन पायूँ निज़ाम प्यारा,
निज़ाम तोरी सूरत की बलिहारी।
हाथ न फैलाऊँ आगे किसी के,
मैंका तो आस निहारी। निज़ाम······
कोऊ सास कोऊ ननद से झगडे

हमको आस तिहारी। निज़ाम······
कुतुब फ़रीद मिल आए बराती
खुसरो राजदुलारी। निज़ाम······

(२)

छापा-तिलक तज दीन्हीं रे तोसे नैना मिला के।
प्रेम बटी का मदवा पिला के,
मतवारी कर दीन्ही रे मों से नैना मिला के।
खुसरो निजाम पै बलि-बलि जइए
मोहे सुहागन कीन्हीं रे मोंसे नैना मिला के

इसके भी कई रूपांतर मुझे मिले हैं।

(३)

बहुत दिन बीते,
पिया को देखे।
अरे कोई जाओ—
पिया को बुलाए लाओ।
मैं हारी वो जीते,
बहुत दिन बीते,
पिया को देखे।
बहुत दिन ०

सब चुनरिन में
चुनर मोरी मैली।
क्यों चुनरी नहीं रँगते ?
बहुत दिन बीते,
पिया को देखे।
बहुत दिन ०
खुसरो निज़ाम के·
बलि-बलि जइये।
क्यों दरस नहीं देते ?
बहुत दिन बीते,
पिया को देखे।
बहुत दिन ०

(४)

आंखों में तसव्वुर जो,
वो माहे-मदी है।
आंखों में तसव्वुर जो,
वो आहे-मुदी है
दुनियावी हँसी है मेरी,
कुछ बाकी हँसी है!
तमगीले-हरम हुक्मे-अजल
शम्मे-मदी है।
अल्लाह का महबूब
हँसीनो की हँसी है।
मिलता है खुदा भी जहाँ,
महबूबे-खुदा भी।
वो गुम्बदे-खिजरा है,
मदीने की जमी है।
कुछ इस तरह आता है नजर
अहले-नजर को।
खुस रोज़-ए-परनूर मे,
वो पर्दानशी है।
आंखो में तसव्वुर जो,
वो माहे-मदी है।

(ज) फ़ारसी-हिंदी मिश्रित छंद

(१)

ज़रगर-पिसरे चू माह पारा[1],
कुछ गढ़ियो सँवारियो पुकारा;
नक़दे-दिले-मन गिरफ़्तो बिशिकस्त[2],
फिर कुछ न गढ़ा न कुछ सँवारा।

(२)

ज़े हाले मिसकीं मकुन तग़ाफ़ुल[3]
दुराय नैना बनाय बतियाँ
किताबे-हिज्राँ न दारम् ऐ जाँ[4]
न लेहु काहे लगाय छतियाँ
शबाने-हिज्राँ दराज़ चूं ज़ुल्फ़ो—
रोज़े वसलत चूं उम्र कोताह,[5]
सखी पिय को जो मैं न देखूं,
तो कैसे काटूं अँधेरी रतियाँ

१. चाँद के टुकड़े की तरह सुनार का लड़का।
२. मेरे दिल को नक़द ले गया और तोड़ डाला।
३. ग़रीब के हाल से गफ़लत न करो, अर्थात मुझ गरीब को मत भूलो।
४. ऐ मेरी जान! जुदाई की किताब मेरे पास नहीं है, अर्थात मैं बिरह नहीं सह सकती।
५. जुदाई की रातें ज़ुल्फ़ की तरह लंबी हैं और मिलन के दिन ज़िन्दगी की तरह छोटे हैं।

यकायक अज़दिल दो चश्म जादू
बसद फ़रेबाम बबुर्द तसकीं;[1]
किसे पड़ी है जो जा सुनावे,
पियारे पी को हमारी बतियाँ।
चु शमअ सोज़ाँ चु ज़र्रा हैराँ
ज़े मेह्र आँ मेह बगश्तम् आख़िर[2]।
न नींद नैनों न अंग चैना,
न आप आवें न भेजें पतियाँ।
बहक़्क़ रोज़े-विसाले दिलबर,
कि दाद मारा फ़रेब ख़ुसरो[3]।।
सो पीत मन की दुराय राखौं
जो जान पाऊँ पिया की घतियाँ[4]।

१. अचानक अश्रुभरी इन दोनों आँखों ने सैकड़ों बहानों से मेरा धैर्य छीन लिया।

पाठांतर—बसद ख़राबे म सब्रो तसकीं

२. पाठांतर—हमेशा गिरियाँ बइश्क आँ मेह।

मैं आख़िर जलती मोमबत्ती और परेशान नज़रों की तरह
उस चाँद (माशूक) की मुहब्बत से फिर गया।

३. माशूक के मिलन के दिन के सहारे जिसने मुझ ख़ुसरो को धोखा दिया है।

४. पाठांतर—लोभाय राखूँ तू सुन ए साजन, जो कहने पाऊँ दो बोल बतियाँ।

(झ) सूफ़ी दोहे

(१)

गोरी सोवै सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस ॥

कहा जाता है कि जब निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु हुई तो खुसरो लखनौती में थे। जबतक उनके पास मृत्यु का समाचार पहुँचा औलिया दफ़ना दिए गए थे। अन्त मे खुसरो जब उनकी समाधि पर पहुंचे तो भावविह्वल होकर उन्होने यह दोहा कहा और बेहोश होकर गिर पड़े।

अर्थ है : औलिया चिर निद्रा में कब्र रूपी सेज पर सो रहे है। उनके ससार से चले जाने से चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार हो गया है। ऐ खुसरो ! अब तुम भी अपने वास्तविक घर को प्रस्थान करो।

यह भी कहा जाता है कि उसके कुछ ही दिनों बाद खुसरो का देहान्त हो गया।

यह दोहा यहाँ अपने बहुप्रचलित रूप मे दिया गया है। महमूद शीरानी को लाहौर के प्रो० आज़र के सग्रह में इसका जो रूप मिला था उसमें 'सेज' के स्थान पर 'पलंग' तथा 'रैन भई' के स्थान पर 'साँझ पडी' पाठ मिलता है। एक और संग्रह (मुहम्मद शाह, इलाहाबाद की पांडुलिपि) में 'साँज पड़ी चौ देस' पाठ है।

(२)

खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग।
तन मेरो मन पीउ को दोउ भए एक रंग ॥

यहाँ 'पी' ब्रह्म है, और 'नायिका' आत्मा।

(३)

श्याम सेत गोरी लिये जनमत भई अनीत।
एक पल में फिर जात है जोगी काके मीत।

मुहम्मद साहब के लिए जो दो प्रकार की (श्याम-श्वेत) सृष्टि रची गई वह उचित नही सिद्ध हुई। इसीलिए आत्मा (जोगी) यहाँ स्थायी रूप से नहीं रह पाती वह लौट जाती है। तुलनीय : जायसी 'अखरावट' में लिखते हैं---

ऐसे जो ठाकुर किया एक दाँऊ।
पहिले रचा मुहम्मद नाँऊ।
तेहि कै प्रीति बीज अस जामा।
भए दुइ बिरिछ सेत औ सामा।।

(४)

वो गए बालम वो गए नदियों किनार।
आपे पार उतर गए हम तो रहे मजधार।।[1]

(५)

भाई रे मल्लाहो हमको पार उतार।
हाथ को देऊँगी मुंदरी[2] गले[3] को देऊँ हार।।

(६)

देख मैं अपने हाल को रोऊँ जार-ओ-जार।
वे[4] गुनवन्ता बहुत हैं हम हैं औगुनहार।।

(७)

बाबुल भेजी मुझ देन को[5] तान्दान[6] की फूल।
हो छावंजा दहाजिया नाला हा मोल[7]।।

(८)

चकवा चकवी दो जने उनको मारे न कोय[8]।
ओह मारे करतार के रैनबिछोही होय[9]।।

(९)

सेज सूनी[10] देख के रोऊँ दिन-रैन।
पिया-पिया कहती मैं[11] पल भर सुख न चैन।।

(१०)

सौ नारें सौ सुख सेवें कंतों को गुल लार[12]।
मैं दुखियारी जनम की दुखी गई बहार।।

(११)

ताखी खूटा देस में क़सबे पड़ी पुकार।
दरवाज़े देते रह गए निकस गए उस पार।।

१. पाठांतर—अरदार। २. पाठांतर—मुंदरा। ३. पाठांतर—गल। ४ पाठांतर—वे। ५. पाठातर—मैं दज कौं। ६. पाठांतर—तौंदाँ। ७. यह शब्द स्पष्ट नहीं है। ८. पाठातर—को। ९. पाठांतर—रैनबिछोडी हो। १०. पाठांतर—वह कहती। ११. पाठांतर—पिया करती हैं पहरों। १२. पंक्ति अस्पष्ट है।

महमूद शीरानी को ये दोहे (तथा 'गोरी सोवे······वाला' पहला दोहा) इस्लामिया कालिज लाहौर के प्रो० सिराजुद्दीन आज़र के संग्रह में मिले थे, जिन्हें उन्होंने 'पंजाब में उर्दू' (पृ० १५६) में दिया है। मुझे इनमें से कुछ दोहे इलाहाबाद के मुहम्मद शाह से भी मिले थे।

(१२)

पंखा होकर मैं डुली साती तेरा चाव
मुज जलती जनम गई तेरे लेखन बाव

यह दोहा दक्खिनी हिन्दी के प्रसिद्ध कवि वजही ने अपनी कृति 'सबरस' (रचनाकाल १६३६ ई०) में खुसरो का कहकर उद्धृत किया है। लिखित रूप में खुसरो का कोई भी अन्य छन्द इतना पुराना नहीं उपलब्ध है। इस तरह इसे अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक मानना पड़ेगा। किन्तु साथ ही यह भी स्पष्ट है कि वजही ने अपने उच्चारण के अनुरूप इसे रखा है। खुसरो की भाषा में 'मुज' के स्थान पर 'मुझ' होने की सम्भावना है। ऐसे ही 'साती' भी कदाचित् 'साथी' रहा होगा। इस दोहे का अर्थ है : 'प्रिय ! तेरे प्रेम में पंखे की तरह डुलती रही। मेरा तो जन्म जलते बीता, किन्तु तेरे लिए इसका कोई महत्त्व नहीं।' यह उक्ति किसी विरहिणी की है। कवित्व की दृष्टि से खुसरो का यह सर्वोत्तम हिन्दी छन्द है।

(ञ) ग़ज़ल

जब यार देखा नैन भर, दिल की गई चिन्ता उतर,
ऐसा नहीं कोई अजब राखे उसे समझाय कर।
जब आँख से ओझल भया, तड़पन लगा मेरा जिया,
हक़्क़ा[1] इलाही क्या किया, आँसू चले भर लाय कर।
तूँ तो हमारा यार है, तुझ पर हमारा प्यार है,
तुझ दोस्ती बिसियार[2] है, एक शब[3] मिलो तुम आय कर।
जाना तलब[4] तेरी करूँ, दीगर तलब किसकी करूँ,
तेरी जो चिन्ता दिल धरूँ, एक दिन मिलो तुम आय कर।
मेरो जो मन तुम ने लिया, तुम उठा ग़म को दिया,
तुमने मुझे ऐसा किया, जैसा पतंगा आग पर।
ख़ुसरो कहै बातों ग़ज़ब, दिल में न लावे कुछ अजब,
क़ुदरत ख़ुदा की है अजब, जब जिव दिया गुल लाय कर।[5]

महमूद शीरानी को यह ग़ज़ल १३वीं सदी हिज्री के आरम्भ में लिखी गई एक पांडुलिपि (जो लाहौर के प्रो० सिराजुद्दीन आज़र के संग्रह में थी) में मिली थी।

१. ईश्वर की क़सम। २. बहुत। ३. रात। ४. चाह, पाने की इच्छा। ५. इस सम्बर्भ में 'गुल लाय कर' अस्पष्ट है।

(ट) फुटकर छंद

(१)

औरों की चौपहरी बाजे, चम्मो की अठपहरी।
बाहर का कोई आए नाहीं, आए सारे सहरी।
साफ़-सूफ़ कर आगे राखे, जामें नाहीं तूसल।
औरों के जहाँ सीक समाए, चम्मो कं वाँ मूसल।।

खुसरो की परिचिता चम्मो नाम की एक भठिहारिन थी। उसके यहाँ लोग गाँजा, भाँग, चरस आदि पीने आते थे। एक दिन उसने खुसरो से प्रार्थना की कि सुना है आप शायरी करते हैं। कुछ मेरे बारे मे भी कह दीजिए। कहा जाता है कि उसकी फ़र्माइश पर खुसरो ने यह छन्द कहा। इसमे वे कहते हैं कि बादशाह आदि औरो के दरवाज़े पर तो चार पहर ही नौबत बजती है, किन्तु चम्मो के यहाँ आठा पहर बजती है, अर्थात् चौबीसों घंटे लोगों का जमघट लगा रहता है। बाहर से कोई नहीं आता, मगर सारे शहर के लोग गाँजा, भाँग, चरस आदि पीने आते है। वह पीने वालों को साफ़-सूफ़ करके ऐसी भाँग देती है, जिसमें ज़रा भी कूड़ा-कचड़ा (तूसल) नहीं होता। भँगेड़ियों की मान्यता है कि बढ़िया भाँग इतनी गाढ़ी होनी चाहिए कि उसमे सींक खड़ी हो जाय। खुसरो कहते है कि चम्मो की भाँग इतनी अच्छी होती है कि जहाँ औरों की भाँग में सींक खड़ी हो जाती है, वहाँ चम्मो की भाँग में मूसल खड़ा हो जाता है। अर्थात् वह बहुत ही गाढ़ी होती है।

(२)

आँख का नुसखा

लोध्र फिटकरी मुर्दासंख।[१]
हल्दी जीरा एक एक टंक।।[२]
अफ़यून चना भर मिर्चें चार।
उरद बराबर थोथा डार।।
पोस्त के पानी पुटली करे।
तुरत पीर नैनन की हरे।।

(ठ) खालिकबारी

खालिक़बारी हिन्दी-फारसी का एक छन्दोबद्ध कोश है। वैसे शब्द तो इसमें अरबी के भी हैं, और कुछ तुर्की के भी, किन्तु इसमें वाक्य अथवा वाक्यांश केवल हिन्दी या फ़ारसी के ही हैं, अतः इसे इन्ही का कोश कहा जा सकता है। अरबी तथा तुर्की के इसमें केवल वे ही शब्द है, जो फ़ारसी भाषा के शब्द-भंडार के अंग रहे हैं।

यह विवाद का विषय रहा है कि खालिकबारी किस कवि की रचना है। इसे लेकर तीन प्रकार के मत व्यक्त किए गए हैं---

(क) खालिकबारी प्रसिद्ध फारसी कवि अमीर खुसरो की रचना है। हिंदी और उर्दू के काफ़ी सारे विद्वान् इस पक्ष में हैं। उदाहरण के लिए डॉ० श्याम सुन्दर दास ने लिखा है, 'खुसरो' ने हिन्दी और अरबी-फारसी शब्दो का प्रचार बढाने तथा हिन्दू-मुसलमानो मे परस्पर भाव-विनिमय में सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से खालिक़बारी नाम का एक कोश पद्य में बनाया था। कहते है कि इस कोश की लाखों प्रतियाँ लिखवाकर तथा ऊँटों पर लदवाकर सारे देश में बाँटी गई थी।'[1]

किंवदंती भी है—

एक लाख ऊँट सवा लाख गाड़ी।
तेहि पर लादी खालिक़बारी॥

इसी प्रकार डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने भी इसे खुसरो की रचना कहा है, किन्तु साथ ही यह भी कहा है कि इसका जो रूप प्राप्त है वह अधूरा है।[2] इस अधूरे कहने का अर्थ यह है कि वे भी मूलतः खालिकबारी को बहुत बड़ी रचना मानते हैं, और यह भी मानते है कि प्राप्त रूप उसका अंश-मात्र है। उर्दू के प्रथम आलोचनाशास्त्री मुहम्मद हुसैन आजाद लिखते हैं, 'खालिक्बारी जिसका इख़्तिसार आज तक बच्चों का वज़ीफा है, कई बडी-बडी जिल्दो मे थी। इसमे फारसी की बहरों ने अव्वल असर किया और इसी मे यह भी मालूम होता है कि उस वक्त कौन-कौन से अलफ़ाज मुस्तेमिल थे जो अब मतरूक है। इसके

१. हिन्दी भाषा का विकास, पृ० ७८
२. हिन्दी भाषा का इतिहास, भूमिका, पृ० ७८

अलावा बहुत-सी पहेलियाँ अजीबो-ग़रीब लताफ़तों से अदा की हैं, जिनसे मालूम होता है कि फ़ारसी के नमक ने हिन्दी के ज़ायके में क्या लुत्फ़ पैदा किया है।···भटियारी के लड़के के लिए ख़ालिक़बारी लिख दी।[1] सईद अहमद मारहरवी का कहना है कि ख़ालिक़बारी अरबी-फ़ारसी-हिन्दी का लुग़ात मुख़्तलिफ़ बहरों में है। वह पहले कई बड़ी-बड़ी जिल्दों में थी, आजकल जो आमतौर पर रायज है, यह असल किताब का बहुत मुख़्तसर-सा इंतिख़ाब है। मशहूर है कि अमीर खुसरो ने इसको किसी भटियारी की फ़रमाइश पर उसके दो लड़कों के वास्ते लिख दी थी। जब बिरज भाषा ने वसते अख़लाक़ से अरबी-फ़ारसी अलफ़ाज़ के मेहमानों को जगह दी तो एक नयी ज़बान पैदा होनी शुरू हुई, लेकिन वह मुद्दत तक दोहरों के रंग में ज़ुहूर करती रही याने फ़ारसी की बहरें और फ़ारसी के ख़यालात उसमें न आते थे। सबसे अव्वल इसी ख़ालिक़बारी में फ़ारसी बहरों ने अपनी झलक दिखाई है।[2] अमीन चिरैयाकोटी विस्तार से अपनी बात कहते हुए कहते हैं, 'किताब की क़दामत साफ़ यह पता बतलाती है कि ये किताब अहदे हज़रत अमीर खुसरो के मुत्तसिल ज़माने की तसनीफ़ है, जैसे चीतल जोकि हज़रत अमीर खुसरो के अहदे-ज़िन्दगी तक में एक हिन्दी सिक्के का नाम था और हज़रत के क़रीब अहद में यह मतरूक हो चला था। यहाँ तक कि उनके बाद तारीख़ में उसका नाम भी नहीं आता, क्योंकि सलातीने हिन्द की क़दीम सादगी जिस तरह ऐश व दौलत के सामानों से आरास्ता हो गई थी, सिक्कों के सादा नाम भी अशरफ़ी और अख़्तरे ज़र वग़ैरह-वग़ैरह तकल्लुफ़ात से बदल गए थे। बहरहाल 'चीतल' का चलन अहदे-खुसरवी से आगे नहीं पाया जाता, या मुहावराते क़दीम जैसे मैं तुझ कहिया(मैंने तुझसे कहा), तू कित रहिया (तू कहाँ रहा), बाव उड़ानी (हवा चली), आखना (देखना), भाखना (कहना), चाव (शौक़) वग़ैरह अलफ़ाज़ की गवाही से ख़ालिक़बारी का ज़मानए-तसनीफ़ अहदे खुसरो में क़तई तौर पर मुक़र्रर···हो सकता है। हम इस मुख़्तसर को देखकर यही समझते हैं कि बच्चों को मुतरादिफ़ अलफ़ाज़ याद कराने के लिए एक चीज़ है, लेकिन इस ज़ख़ीम किताब की तदवीन से हज़रत अमीर खुसरो रहमतुल्लाह अले का मंशा इससे कुछ ज़्यादा था। उन्होंने यह किताब ऐसे वक़्त में लिखी थी जबकि मुसलमान जौक़-दर-जौक़ बराहे ख़ैबर बलख़ व बुखारा व ईरान व तूरान व तुर्किस्तान से मुग़लों के हाथों तर्के-वतन करके हिन्दुस्तान आ रहे थे, और यहाँ पहुँचकर ज़बान न जानने की दुश्वारियों से शब-रोज़ उनका मुक़ाबिला था और अहले हिन्द इन ताज़ा विलायत मेहमानों का माफ़ी-उज़्ज़मीर समझने से आजिज़ व

१. आबेहयात, प० ७१, ७६, ८६।
२. हयाते खुसरो प० १२६-१२७।

परेशान थे। इन अजनबियों में बाहम तार्रुफ़ कराने की ग़र्ज़ से हज़रत अमीर ने उन तमाम लुग़ात व अलफ़ाज़ को जो एक-दूसरे की ज़बानों पर मौजूद और कारआमद थे, इस ख़ूबसूरती के साथ मुंसलिक कर दिया और बेशक वह तमाम मजमूआ उन कई बड़ी जिल्दों में तमाम हुआ होगा, जिनके न मिलने पर आज हमें हसरत है।"[1] मुहम्मद वहीद मिर्ज़ा ने पक्ष-विपक्ष की बातों को लेते हुए निष्कर्ष दिया है, 'ख़ालिक़बारी या उसका ज़्यादातर हिस्सा अमीर ख़ुसरो की तसनीफ़ ज़रूर है।"[2] मसउद हुसैन रिज़वी भी इसे ख़ुसरो-कृत मानते हैं, यद्यपि इसका उद्देश्य उनके अनुसार कुछ और है—'ख़ालिक़बारी ग़ालिबन बच्चों के लिए नहीं लिखी गई थी। अमीर ख़ुसरो के ज़माने में चंगेज़ियों की ताख़्त व ताराज ने ईरान व तूरान को ज़ेर-व-ज़बर कर दिया था। उनकी जदाल व क़ताल से तंग आकर हज़ारहा ईरानियों और तूरानियों ने हिन्दुस्तान में पनाह ली थी। इन लोगों को हिन्दुस्तानियों से बातचीत करने में बड़ी दिक़्क़त पड़ती थी। न वह इनकी बात समझते थे न ये उनकी। क़यास कहता है कि इसी दिक़्क़त को दूर करने के लिए अमीर ख़ुसरो ने फ़ारसी और हिन्दी के ज़रूरी हममानी यकजा करके नज़्म कर दिए होंगे।[3]

(२) दूसरे वर्ग के लोग इसे ख़ुसरो की रचना नहीं मानते। इसके अमीर ख़ुसरो कृत न होने की बात सबसे पहले प्रसिद्ध अनुसंधाता महमूद शीरानी ने कही। उन्होंने अपनी बात 'पंजाब में उर्दू'[4] तथा 'ख़ालिक़बारी'[5] इन दो पुस्तकों में कही है। शीरानी साहब को अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू के पुस्तकालय में ख़ालिक़बारी की एक पांडुलिपि मिली जिसका लिपिकाल १७७४ ई० है। आरम्भ में छोटी-सी भूमिका है, जिसमें लेखक का नाम, पुस्तक का नाम तथा लेखन-काल दिया है। उनके द्वारा कही गई मुख्य बातें ये हैं—(क) यह जहाँगीर के समय के किसी ज़ियाउद्दीन ख़ुसरो की रचना है। (ख) इसका नाम 'खालिक़बारी' न होकर 'हिफ़्ज़ुललिसान' है। (ग) बच्चों को फ़ारसी सिखाने के लिए बाबा इसहाक हलवाई के कहने से इसकी रचना की गई थी। बच्चों के लिए उन दिनों ऐसी बहुत-सी किताबें लिखी गईं जैसे हामिदबारी, राज़क़बारी, वाहिदबारी, अल्लाबारी, इज़दबारी, समदबारी आदि।(घ) 'मैं तुझ कहिया' जैसे रूपों को बहुत पुराना कहा गया है, किन्तु वस्तुतः ये बहुत पुराने नहीं हैं।(ङ)'चीतल' (जीतल) सिक्के के आधार पर भी इसको अमीर ख़ुसरो से नहीं

---

१ जवाहरे ख़ुसरवी पृ० ५, १०।

२. अमीर ख़ुसरो, पृ० १२६।

३. हिन्दुस्तानी (उर्दू पत्रिका), जनवरी १६३१, पृ० ४२।

४. पृ० १८७।

५. भूमिका।

जोड़ा जा सकता, क्योंकि यह बाद में भी था। आईन-ए-अकबरी में भी इसका उल्लेख मिलता है। (च) 'खुसरो शाह' कहने की परम्परा खुसरो के ज़माने में नहीं थी, अतः यह उस काल की रचना नही है। (छ) खुसरो की रचनाओ की प्राचीन सूचियाँ जो विभिन्न ग्रंथों में हैं, उनमें कहीं भी ख़ालिक़बारी का नाम नहीं है। (ज) इसमें छन्द-भंग तथा अर्थ की ग़लतियाँ हैं, अतः यह रचना महाकवि खुसरो की नहीं हो सकती। (झ) इसमें जो 'ख़ुसरो' नाम है, वह तो किसी भी खुसरो का हो सकता है। 'ख़ुसरो' नाम के जाने कितने लोग हो चुके हैं। (ञ) ख़ालिक़बारी में 'दाम' 'दमड़ा' शब्द हैं, जो अकबर के काल में थे, अतः यह ग्रन्थ उसके पहले का नहीं हो सकता। (ट) यह तूरानियो या ईरानियों के लिए नहीं लिखी गई है, क्योंकि ये लोग और पहले आ चुके थे। इन पंक्तियों के लेखक (भोलानाथ तिवारी) ने भी अपनी 'हिन्दी भाषा'[1] (१६६६) में लिखा था कि यह खुसरो की रचना नहीं है। मेरे तर्क ये रहे हैं—(क) अमीर खुसरो जैसे विद्वान की रचना यदि ख़ालिक़बारी होती तो वह पर्याप्त व्यवस्थित होती, जबकि खालिक़बारी बहुत ही अव्यवस्थित है। कभी फ़ारसी शब्दो के समानार्थी हिन्दी शब्दादि दिए गए हैं, तो कभी वाक्यों के समनार्थी वाक्य। भाषा सीखने की दृष्टि से इन वाक्यों या शब्दों में कोई भी तारतम्य नही है। जो शब्द लिये गए है, उनमें सब ऐसे नहीं हैं, जिनको भाषा के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए आवश्यक समझा जाय। साथ ही प्रारम्भिक ज्ञान के लिए बहुत-से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शब्द छूट भी गए है। जो वाक्य दिए गए हैं, वे भी तुक या छन्द बैठाने की दृष्टि से लिये गए ज्ञात होते हैं। भाषा के प्रारम्भिक ज्ञान की दृष्टि से उनका प्रायः बिल्कुल भी मूल्य नही है। कारक, काल-रचना आदि की दृष्टि से भी ये महत्त्व नही रखते। (ख) छन्दों का बिना किसी योजना के परिवर्तन और कहीं-कही उनमें अप्रवाह या दोष भी खालिकबारी को महाकवि खुसरो की रचना मानने में व्याघात उपस्थित करते हैं। (ग) बीच में आता है—'तुर्की जानी ना।' तुर्की का विद्वान् खुसरो यह लिखे कि उसे अमुक शब्द की तुर्की नहीं आती, यह बात कल्पनातीत है। यों सभी शब्दो के लिए तुर्की शब्द दिए भी नहीं गए हैं, अतः ऐसा कथन बड़ा निरर्थक-सा लगता है। यह बात भी खालिक़-बारी को अमीर खुसरो से सम्बद्ध करने में अड़चन डालती है। (घ) ख़ालिक़बारी के अन्त में आता है 'गदा भिखारी खुसरोशाह', यहाँ भी आपत्ति उठाई जा सकती है कि 'शाह' क्यों कहा? जैसाकि लोगों ने कहा है कि खुसरो के समय तक नामों के साथ इसे जोड़ने की परंपरा नही मिलती। (ङ) शब्दो की ग़लतियाँ भीहै। हिन्दी 'काना' के लिए फ़ारसी शब्द 'कोर' दिया गया है, जबकि 'कोर' का अर्थ 'अन्धा' होता है। 'तिदर्व', 'कुब्क' और 'हुंस' को एक माना है, जबकि तीनों अलग-

---

1 पृ० १२८, २६।

अलग हैं। 'तीतर' के लिए एक स्थान पर 'दुराज' तथा अन्यत्र 'लगलग' दिया गया है। ख़ालिकाबारी से इस तरह की अशुद्धियों के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। ऐसी भद्दी ग़लतियाँ खुसरो नहीं कर सकते, और न ऐसी कम योग्यता के आदमी को, जैसा कि खालिक़बारी का लेखक लगता है, ग़यासुद्दीन तुग़लक अपने लड़के को हिन्दी पढ़ाने के लिए पुस्तक लिखने का आदेश ही दे सकते थे (कहा जाता है कि गयासुद्दीन तुग़लक के कहने से अमीर खुसरो ने उनके लड़कों को हिन्दी पढ़ाने के लिए इसे लिखा था)। उपर्युक्त बातों को देखते हुए यह कहना उचित नहीं लगता कि ख़ालिक़बारी खुसरो की रचना है।

(३) इन दो पक्षों के अतिरिक्त एक तीसरा मत यह भी हो सकता है कि यह रचना मूलतः खुसरो की है, किन्तु आज जो उसका रूप प्राप्त है वह बहुत परिवर्तित और कदाचित संक्षेपित है। अब मेरा मत यही है।[1]

यहाँ पहले दोनो मतों—खुसरो कृत है, खुसरो कृत नही है—की कुछ मुख्य बातों को लें। (क) चिरैयाकोटी ने जो 'चीतल' या 'मैं तुझ कहिया' की बात कही है, उससे इतना बड़ा निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। यों 'चीतल' का उल्लेख आइन-ए-अकबरी तक में है, तथा 'मैं तुझ कहिया' जैसे प्रयोग बाद में भी मिलते हैं। (ख) किन्तु शीरानी साहब का यह कहना भी गलत है कि 'दाम', 'दमड़ा' का प्रचलन अकबर काल में हुआ। वस्तुतः यह शब्द भारत मे बहुत पुराना है। मूलतः यह शब्द यूनानी 'द्रख़्मे' (Drakhme) है, जो सिकन्दर के साथ भारत में आया। यह संस्कृत तथा प्राकृत आदि में 'द्रम्य', 'दम्म' है। अरबी-फ़ारसी में 'दिरम', 'दरम' के रूप में भी यही शब्द है। क्षतिपूरक दीर्घीकरण से 'दम्म' का ही 'दाम' बना जिसमें स्वार्थे प्रत्यय 'डा' (जैसे मुख-मुखड़ा, टुक-टुकड़ा) लगने से 'दमड़ा' बना जिसका अल्पार्थक या स्त्रीलिंग 'दमड़ी' है। साथ ही खालिक़बारी की सभी प्रतियों के पाठ में यह नही है।[2] (ग) ऐसे ही मैंने हिन्दी भाषा में 'जो आपत्ति उठाई है कि खुसरो जो स्वयं तुर्क थे, तुर्की जानते थे, कोश मे कहे कि 'तुर्की जानी ना' यह बात समझ में नहीं आती। इसके उत्तर में दो बातें कही जा सकती हैं : एक तो यह कि तुर्की मे काफ़ी शब्द अरबी और फ़ारसी के हैं, अतः जरूरी नही कि सभी चीजों के लिए तुर्की नाम हों ही, दूसरे यह पंक्ति खालिक़बारी के सभी पाठों में नहीं है, अत. प्रक्षिप्त भी हो सकती है। (घ) 'खुसरो शाह' एक नाम रूप में नहीं आया है, बल्कि 'खुसरो' और 'शाह' पर्याय रूप में दिए गए हैं। दोनों का अर्थ 'बादशाह' है। साथ ही 'खुसरो'

१, कोशविज्ञान, भोलानाथ तिवारी, १९७९, पृ० १३४

२. जो-जो प्रतियाँ मैंने देखी हैं उनमें क्रमशः १९१, १९२, १९४, २१५, २३२ छन्द हैं। इसमे पुस्तक के अपने संकरण में मैंने १९४ छन्द दिए हैं।

रचयिता का नाम भी है। (ङ) यह बात ठीक है कि ख़ुसरो के ... सूचियों में 'ख़ालिक़बारी' का उल्लेख नहीं है। वस्तुतः उनमें ... हिन्दी रचना का उल्लेख नहीं है, क्योंकि उनकी गम्भीर रच... हैं, इसी कारण पुरानी प्रामाणिक सूचियो में केवल फारसी ग्रंथ ... इसके साथ ही जैसे कुछ स्थानों पर यह उल्लेख है कि उन्होंने हि... उसी प्रकार कही-कही यह भी उल्लेख है कि उन्होंने ख़ालिकबारी ... उदाहरण के लिए तजल्ली ने अपने हिन्दी-फारसी कोश ... (१६५० ई०) मे खुसरो तथा उनके ग्रंथ ख़ालिकबारी ... किया है—

शायद अज़ लुत्फ़े रहमन बारी।
रूहे ख़ुसरो तमामीदम यारी।

ऐसे ही औरंगजेब के समय मे अब्दुल वासेह हाँसवी ने एक हिन्दी शब्द कोश बनाया था जिसका नाम 'ग़रायबुललुग़ात'[1] है। ख़ान आरज़ू (... वास्तविक नाम सिराजुद्दीन अली ख़ाँ था) ने हाँसवी के कोश मे 'न... अलफ़ाज़, रूप में परिवर्धन-परिवर्तन किए हैं। ख़ान आरज़ू की मृत्यु १७... में हुई थी। इन्होंने 'उन्मन' और 'छुरा' के प्रसंग में ख़ुसरो की खालिकबा... जिक्र किया है, जिसका अर्थ यह है कि उस समय ऐसा माना जाता था कि ख़ालि... बारी ख़ुसरो की रचना है।

इस प्रकार १७वीं सदी से ही यह ख़ुसरो के नाम से प्रसिद्ध है।

सारी बातों को देखते हुए निश्चय के साथ यह नहीं कहा जा सकता कि ... कोश प्रसिद्ध कवि अमीर ख़ुसरो की रचना नही ही है। यों सनिश्चय यह ... का बहुत प्रौढ़ आधार न होते हुए भी कि यह उन्ही अमीर ख़ुसरो ... संभावना उन्हीं की रचना होने की है। जहाँ तक शीरानी साहब के यह कहने का सम्बन्ध है कि यह किसी जियाउद्दीन की है, असम्भव नहीं कि ख़ुसरो की यह रचना मूलतः काफ़ी बड़ी रही हो, और जियाउद्दीन नामक व्यक्ति ने उसी को अपने ... से संक्षिप्त करके इसहाक के कहने से बच्चों के लिए यह रूप दे दिया हो। शीरानी साहब वाली पाण्डुलिपि की पुष्पिका में रचयिता के रूप में 'ज़ियाउद्दीन' के नाम का यह कारण हो सकता है। ऐसी स्थिति में ख़ालिक़बारी के जितने भी वर्तमान रूप उपलब्ध है, उनकी अव्यवस्थाओं, कमियों और ग़लतियों का दायित्व मूल लेखक पर न होकर संक्षेप-कर्ता ज़ियाउद्दीन पर या बाद में उसमें प्रक्षिप्तांश जोड़ने वालों पर है। कहना न होगा कि आज ख़ालिक़बारी के अनेक पाठ उपलब्ध है,

---

१. कोशविज्ञान, पृ० १०२।

[illegible] काफी [illegible] । मैंने अपना पाठ (जो इस पुस्तक मे दिया जा रहा है) [illegible] आधार पर तैयार किया है, यद्यपि मेरा यह दावा नही है कि [illegible] पाठविज्ञान [illegible] मे यह मेरा पाठ बहुत वैज्ञानिक है।

[illegible] लोग इस कोश को [illegible] अमीर [illegible] की रचना न माने तब [illegible] क्योंकि जहाँगीर के काल की रचना [illegible] काफी प्राचीन कोश ठहरता [illegible] महत्त्व से [illegible] नही किया जा सकता। एक बात [illegible] जहाँगीर के का[illegible] रचना मानते है, जबकि औरगजब के [illegible] की रचना [illegible] गया है। एक पीढी मे ऐसी भूल [illegible] असम्भव [illegible] मूलत' यह अमीर खुसरो की ही रचना

[illegible] जिले मे पैदा हुए, अवध मे भी कुछ दिन रहे तथा दिल्ली मे काफ़ी [illegible] खालिकबारी के शब्द भी तीन प्रकार के है खडीबोली के, ब्रजभाषा के, पूर्वी [illegible] इस कोश के शब्द भी इस अमीर खुसरो से सम्बद्ध होने की ओर कुछ [illegible] करते है। ऐसे ही दौलताबाद भी वे रहे जहाँ 'गोश्त' के लिए 'हेडा' शब्द चलता है। यो यह शब्द कबीर मे भी आया है—

हेडा-रोटी खाय के सीस कटावे कौन।

निष्कर्षत' यह माना जा सकता है कि यह ग्रंथ मूलत खुसरो की रचना है किन्तु इसके प्राप्त रूप मे लोगो ने काफी परिवर्धन, परिवर्तन, संक्षेपण और प्रक्षेपण किये है।

खालिकबारी क्यो लिखी गई, इस [illegible] भी विवाद रहा है। डॉ० श्याम सुन्दरदास के अनुसार हिन्दी और अरबी-फारसी शब्दो का प्रचार बढाने तथा हिन्दू मुसलमानो में विचार-विनिमय मे सहायता पहुँचाने के लिए इसकी रचना हुई।[1] मुहम्मद हुसन आज़ाद[2] तथा बहुत से अन्य लोग इसे किसी भटियारी के लड़के के लिए लिखी मानते हैं। अमीन चिरैयाकोटी आदि के अनुसार उन ईरानी और तुर्की मुसलमानो के लिए यह लिखी गई जो भारत आ रहे थे तथा जिन्हे हिन्दी न समझने के कारण कठिनाई होती थी।[3] [illegible] के अनुसार बाबा इसहाक हलवाई के कहने से यह लिखी गई। एक [illegible] गयासुद्दीन तुग़लक के कहने से उसके बेटेको हिन्दी पढाने के लिए इसकी रचना की गई।[4] ब्रजरत्नदास से अनुसार

१ हिन्दी भाषा का विकास, पृ० [illegible]

२. आबेहयात, पृ० ८६।

३. जवाहरे खुसरवी, पृ० ५०।

४. हिन्दी भाषा—भोलानाथ तिवारी, पृ० [illegible]।

अमीर खुसरो ने अलाउदीन की आज्ञा से खालिक़बारी लिखी।[1] कुछ लोग यह भ
मानते हैं कि हिन्दुस्तानियों को फ़ारसी शब्दों का ज्ञान कराने के लिए इसकी रचना
हुई। वस्तुतः इनमें कोई भी कथन बहुत सप्रमाण नहीं है।

यों इस बात के निर्णय के लिए निम्नांकित बातें महत्त्वपूर्ण हैं : (क) इस
शब्द हिन्दी, फ़ारसी, अरबी और तुर्की के हैं, किन्तु वाक्य या वाक्यांश केवल
फ़ारसी या हिन्दी के हैं। (ख) इनमें भी फ़ारसी वाक्यों या वाक्यांशों की संख्या
हिन्दी से अधिक है। (ग) साथ ही फ़ारसी वाक्य या वाक्यांश प्रायः सभी प्राप्त
प्रतियों में समान रूप से पाए जाते हैं, उनमें पाठांतर हैं भी, तो बहुत कम, इस
विपरीत हिन्दी वाक्य तथा वाक्यांश में पाठभेद काफ़ी है, कुछ तो सभी प्रतियों
हैं भी नहीं। (घ) साथ ही कोशकार प्रायः फ़ारसी शब्द के लिए हिन्दी शब्द देने
का यत्न करता दीखता है, (खाल तिल बाशद; संग पत्थर जानिए, अस्प मी
हिंदवी घोड़ा चलाव, सोज़न ओ रिश्तह् बहिंदी सुई ताग, आदि) हिंदी के लिए
फ़ारसी शब्द नहीं। यदि ऐसे स्थल हैं भी तो कम। शायद केवल वहाँ, जहाँ छन्द
की आवश्यकता ने ऐसा करने को मजबूर किया है। 'दर हिंदी', 'दर हिंदवी',
'बज़बान-ए-हिंदवी' (हिंदी या हिंदवी में), 'बहिंदी' (हिन्दी मे) पद बार-बार कोश
में आए हैं, जबकि 'दर ताजी' (अरबी में) कम, तथा 'बज़बान-ए-फ़ारसी'
(फ़ारसी भाषा में) या इस प्रकार के पद और भी कम। इसके साथ ही जो शब्द
इसमें आए हैं वे फ़ारसी का परिचय देने के लिए संकलित किए गए नहीं लगते,
क्योंकि फ़ारसी दरबार की भाषा थी, शासन की भाषा थी, और ऐसे वातावरण
के शब्द इस कोश में प्रायः नहीं के बराबर हैं। जो शब्द हैं, प्रायः दैनिक जीवन के
हैं।

निष्कर्षतः ऐसा लगता है कि यह फ़ारसी माध्यम से हिंदी का कोश है। इसका
उद्देश्य है फ़ारसी शब्दों के लिए हिंदी में प्रयुक्त समानार्थी शब्दों का ज्ञान कराना।
फ़ारसी में अरबी तथा तुर्की शब्द भी हैं, अतः फ़ारसी के साथ अरबी (काफ़ी शब्द)
तुर्की (बहुत कम) शब्द भी दिए गए है। असंभव नही कि जो ईरानी, अरब, तुर्क
यहाँ आए थे, उनको अपने दैनिक जीवन में हिंदी या हिंदवी-भाषी लोगों के संपर्क
में आना पड़ता था, अतः उनकी दैनिक आवश्यकतार्थ हिंदी शब्दों का ज्ञान कराने
के लिए यह ग्रंथ लिखा गया हो। हिंदी वाक्य कदाचित केवल छंद के कारण ही
प्रायः प्रयुक्त किए हैं, क्योंकि व्यवस्थित रूप से उनका ज्ञान कराने का यत्न इसमें
नहीं है। यदि फ़ारसी वाक्यों के समानार्थी हिंदी वाक्यों का ज्ञान कराना होता तो
कोश का स्वरूप कुछ भिन्न होता।

समवेततः खालिक़बारी में लगभग बारह सौ शब्द हैं जिनमें प्रायः ४ तुर्की,

१ उर्दू साहित्य का इतिहास, पृ० ६।

२ अरबी, ४७५ हिंदी तथा ४८० फ़ारसी के हैं। प्राचीन हिंदी के शब्द-भंडार तथा अनेक हिंदी शब्दों का ऐतिहासिक विकास जानने के लिए यह ग्रंथ काफ़ी उपयोगी है। इस दृष्टि से इसका अध्ययन किया जाना चाहिए।

आगे खालिक़बारी का पाठ अर्थ के साथ दिया जा रहा है।

(१)

खालिकबारी सिरजनहार।
वाहिद एक बदा करतार ॥१॥

खालिक (अर०, उत्पत्ति करनेवाला)=बारी (अर०, सृष्टि करनेवाला) =सिरजनहार (हि०)। वाहिद (अर०, एक)=एक (हि०)। 'वाहिद' अर्थात् ईश्वर एक है। यहाँ 'वाहिद' मे श्लेष है। बदा (अर०, प्रारम्भ अर्थात् प्रारम्भकर्ता अर्थात् ईश्वर)=करतार (हि०)।

रसूल पैग़बर जान बसीठ।
यार दोस्त बोले जा ईठ ॥२॥

रसूल (अर०, ईश्वर का दूत)=पैगबर (फा०, पैग़ाम+बर, ईश्वर का पैगाम लानेवाला ईश्वर का संदेशवाहक)=बसीठ (हि०, सं० अवमृष्ठ, संदेश ले जानेवाला। 'अति सठ ढीठ बसीठ स्याम को हमे सुनावत गीत'।—सूर)। जान=जानो अर्थात् 'रसूल' और 'पैगबर' के लिए हिंदी 'बसीठ' जानो। यार (फ़ा०, मित्र)=दोस्त (फ़ा०, मित्र)=ईठ (हि०, सं० इष्ट. इष्टमित्र)। बोले जा=जिसे बोले। अर्थात् 'ईठ' जिसे 'यार' 'दोस्त' बोलते हैं।

इस्म-ए अल्लाह खुदा का नाँव।
गर्मा है धूप सायह् है छाँव ॥३॥

इस्म (अर०, नाम, सज्ञा)=नाँव (हि०, नाम)। अल्लाह (अर०)=खुदा (फ़ा०)। इस्म-ए-अल्लाह=खुदा का नाम। अर्थात् 'अल्लाह का नाम'='खुदा का नाम'। ए=का। गर्मा (फ़ा०, गर्मी, धूप, तुलनीय सं० घर्म, ग्रीक थर्म (अं० थर्मामीटर), हि० घाम)=धूप (हि०)। 'गर्मा' 'धूप' है। सायह् (फा० छाया)=छाँव (हि०, छाया)। 'सायह्' 'छाँव' है।

राह तरीक सबील पछान।
अर्थ तिहूँ का मारग जान ॥४॥

राह (फ़ा०, मार्ग)=तरीक़ (अर०, मार्ग)=सबील (अर०, मार्ग)। पछान=पहचानो। मारग (हि०, मार्ग)। राह, तरीक़, सबील इन तीनों को पहचानो और इनका अर्थ 'मार्ग' जानो।

ससि है मह, नय्यर खुरशीद ।
काला उजला स्याह सफ़ेद ।।५।।

ससि (सं० शशि, चन्द्रमा) = मह (फ़ा०, चाँद) । नय्यर (अर० सूर्य) = खुरशीद (फा०, सूर्य) । काला (हिं०) = स्याह (फ़ा०, काला) । उजला (हिं०, सफ़ेद) = सफ़ेद (फ़ा०) ।

पीला नीला जर्द कबूद ।
तानाँ बानाँ तार ओ पूद ।।६।।

पीला (सं० पीत) = ज़र्द (फा०, पीला) । नीला (सं० नील) = कबूद (फा०, हल्का नीला) । तार (फ़ा० धागा या तार) । ओ = और । पूद (फ़ा०, बाना) । ताना-बाना = तार-ओ-पूद ।

कुव्वत नीरु जोर बल आन ।
सारिक़ दुज़्द चोर है जान ।।७।।

कुव्वत (अर० क़ूवत) = नीरु (?, शक्ति) = ज़ोर (फ़ा०) = बल । आन = अन्य । 'आन' छंद पूर्ति के लिए है । सारिक (अर०, चोर) = दुज़्द (फा०, चोर) = चोर (हिं०) । 'सारिक' और 'दुज़्द' 'चोर' है, ऐसा जानो ।

मर्द मनुष ज़न है इस्तरी ।
क़हत काल वबा है मरी ।।८।।

मर्द (फा०) = मनुष (सं० मनुष्य) । जन (फ़ा०, औरत) = इस्तरी (सं० स्त्री) । क़हत (अर०, अकाल) = काल (सं० अकाल) । वबा (अर०, छूत के रोग) = मरी (महामारी) ।

दोश काल्ह रात जो गई ।
इमशब आज रात जो भई ।।९।।

दोश (फा०, बीती हुई या कल की रात; तुलनीय स० दोषा) = काल्ह रात जो गई (जो रात कल गई) । इमशब (फा०, आज की रात) = रात जो भई (जो रात है) ।

तुरा बेगुफ़्तम मैं तुज कहिया ।
कुजा बेमांदी तूं कित रहिया ।।१०।।

तुरा (फ़ा०, तुझे) = तुज (हिं०, तुझे) । बेगुफ़्तम (फा०, मैंने कहा) = मैं कहिया (हिं० मैंने कहा) । कुजा (फा०, कहाँ) = कित (हिं०, कहाँ) । बेमांदी (फा० लेटा, पडा रहा, रहा) = रहिया (हिं० रहा) ।

बेया बिरादर आव रे भाई ।
बेनिशीं मादर बैठ री माई ।।११।।

बेया (फ़ा०, तू आ) = आव रे (हि०, तू आ रे)। बिरादर (फ़ा०, भाई) = भाई (हि०)। बेनिशीं (फा० तू बैठ) = बैठ (हि०, तू बैठ)। मादर (फ़ा०, माँ) = माई (हि०, माँ)।

वालिद बाप, बेटा फ़र्ज़न्द।
दुख़्तर बेटी, सिख है पंद ॥१२॥

वालिद (अर०, पिता) = बाप (हि०)। बेटा (हि०) = फ़र्जन्द (फ़ा०, पुत्र)। दुख़्तर (फा०, बेटी) = बेटी (हि०)। सिख (हि०, सीख, उपदेश) = पंद (फा०, उपदेश)।

सावह् सरीचह् ममोला जान।
कौवा ज़ाग कुलाग़ पछान ॥१३॥

सावह् (अर०, एक पक्षी, ममोला) = मरीचह् (फा०, एक पक्षी, ममोला) = ममोला (हि०)। अर० सावह्, फा० सरीचह् को हि० ममोला जानो। कौवा (हि०) = ज़ाग़ (फ़ा०, कौवा) = कुलाग (फा०, कौवा) पछान = (पहचानो)। 'कौवा' को 'ज़ाग' और 'कुलाग' पहचानो।

आतिश आग, आब है पानी।
ख़ाक धूल जो बाव उड़ानी ॥१४॥

आतिश (फा०, आग) = आग (हि०)। आब (फा०, पानी) = पानी (हि०)। ख़ाक (फ़ा०, धूल) = धूल (हि०)। बाव (हि०, सं० वायु) = उड़ानी (उड़ाती है)। 'ख़ाक' 'धूल' है, जिसे वायु उड़ाती है।

मुश्क औ क़ाफ़ूर है कस्तूरी कपूर।
हिंदवी आनन्द, शादी औ सुरूर ॥१५॥

मुश्क (फ़ा०, कस्तूरी) = कस्तूरी (हि०)। क़ाफ़ूर (अर०, फ़ा०, कपूर) = कपूर (हि०)। 'मुश्क' और 'काफ़ूर' कस्तूरी और कपूर हैं। आनन्द (हि०) = शादी (फ़ा०, हर्ष) = सुरूर (अर०, हर्ष)। फा० 'शादी' और अर० 'सुरूर' हि० आनन्द है।

अस्प घोड़ा, फ़ील हाथी, शेर सीह।
गोश्त हेड़ा, चर्म चमड़ा, शहम पीह ॥१६॥

अस्प (फा०, घोड़ा) = घोड़ा (हि०)। फ़ील (फा०, हाथी) = हाथी (हि०)। शेर (फ़ा०) = सींह (हि०, सिंह)। गोश्त (फा०) = हेड़ा (हि०, मांस; हेड़ा रोटी खाइ के सीस कटावे कौन ?—कबीर। चर्म (फ़ा०, चमड़ा) = चमड़ा (हि०) शहम (अर०, चरबी) = पीह (फ़ा०, चरबी)।

शीर जुग़रात आमद दूधो दही।
रोग़न आमद घी, ओ दोग़ आमद मही ॥१७॥

शीर (फ़ा०, दूध, तुल० सं० क्षीर) = दूध (हिं०)। जुग़रात (फ़ा०, दही) = दही (हिं०)। रोग़न (अर०, घी) = घी (हिं०)। दोग़ (फ़ा०, मट्ठा) = मही (हिं०, मट्ठा)। आमद = आया।

ज़र बुवद सोना, सीम चीतल, नुक़्रह् रूपा।
जामह् कप्पड़, टाट टप्पड़, दब्बह् कूपा ॥१८॥

ज़र (फ़ा०, सोना) = सोना (हिं०)। बुवद (फ़ा०) = हुआ। सीम (फ़ा०, चाँदी) = चीतल (हिं०, चाँदी, चाँदी का एक सिक्का) = नुक़्रह् (फ़ा०, चाँदी) = रूपा (हिं०, चाँदी)। जामह् (फ़ा०, कपड़ा) = कप्पड़ (हिं०, कपड़ा)। टाट (हिं०) = टप्पड़ (हिं०, टाट, टाट की गद्दी)। दब्बह् (फ़ा०, चर्मपात्र) = कूपा (हिं०, चर्मपात्र)।

ख़ंजर ओ शम्शीर ओ समसामस्त तेग़।
हिंदवी खांडा कहावे उन्मन मेग़ ॥१९॥

ख़ंजर (अर०, कटार) = शमशीर (फ़ा०, तलवार) = समसाम (अर०, तलवार) = तेग़ (फ़ा०, खड्ग) = खाँडा (हिं०, खड्ग)। अस्त = है। उन्मन (हिं०, बादल) = मेग़ (फ़ा०, बादल)। प्लाट्स ने अपने कोश में 'उन्मन' शब्द का अर्थ 'घटाएँ' दिया है। प्राचीन हिंदी में इसके प्रयोग के अन्य प्रमाण भी मिलते हैं।

ख़ाल तिल बाशद ग़िलेवाज़ ओ ज़ग़न।
चील्ह है दरगोश कुन गुफ़्तार-ए-मन ॥२०॥

ख़ाल (अर०, तिल) = तिल (हिं०)। बाशद (फ़ा०) = हो। ग़िलेवाज़ (फ़ा०, चील) = ज़ग़न (फ़ा० ज़ग़न्द, चील) = चील्ह (हिं०)। दरगोश कुन गुफ़्तार-ए-मन (फ़ा०) = मेरी बात कान में करो। ख़ाल तिल हो, ग़िलेवाज़, ज़ग़न चील है, यह मेरी बात सुनो।

अर्ज़ धरती फ़ारसी बाशद ज़मीं।
कोह दर हिंदी पहाड़ आमद यक़ीं ॥२१॥

अर्ज़ (अर०, पृथ्वी) = धरती (हिं०) = ज़मीं (फ़ा०)। बाशद (फ़ा०, हो)। कोह (फ़ा०, पहाड़) = पहाड़ (हिं०)। दर हिंदी (फ़ा०) = हिंदी में। अर० 'अर्ज़', हिंदी धरती' (सं० धरित्री) फ़ारसी में 'ज़मी' है। फ़ा० 'कोह' हिंदी में' पहाड़' है, (यह) यक़ीन आया।

काह ओ हैज़ुम घास काठी जानिए।
ईंट माटी ख़िश्त ओ गिल पहचानिए ॥२२॥

काह (फ़ा०, घास, सं० घास, अ० grass) = घास (हिं०)। हैज़ुम (फ़ा०, इंधन, लकड़ी) = काठी (हिं०, लकड़ी)। ईंट (हिं०) = ख़िश्त (फ़ा०, ईंट)। माटी (हिं०) = गिल (फ़ा०, मिट्टी)।

देग हाँडी, कफ़चह् डोई, बेख़ता।
ताबह् कज़ग़ानस्त कड़ाही ओ तवा ॥२३॥

देग (फ़ा०, खाना पकाने का विशेष प्रकार का बर्तन) = हाँडी (हिं०)। कफ़चह् (फ़ा०, करछी) = डोई (हिं०, करछी)। बेख़ता = बिना ग़लती के, ठीक। ताबह् (फ़ा०, तवा) = तवा (हिं०)। कज़ग़ान (तु०, कड़ाही) = कड़ाही (हिं०)।

संग पाथर जानिये, बर कुन उठाव।
अस्प मीरां हिंदवी घोड़ा चलाव ॥२४॥

संग (फ़ा०, पत्थर) = पाथर (हिं०)। बरकुन (फ़ा०, ऊपर करो, ऊपर उठाओ) = उठाव (हि०, उठाओ)। अस्प मीरां (फ़ा०, श्रेष्ठ घोड़ा) = घोड़ा (हिं०)।

मूश चूहा, गुर्बह् बिल्ली, मार नाग।
सोज़न ओ रिश्तह् बहिंदी सुई ताग ॥२५॥

मूश (फ़ा०, चूहा, सं० मूषक) = चूहा (हिं०)। गुर्बह् (फ़ा०, बिल्ली) = बिल्ली (हि०)। मार (फ़ा०, साँप) = नाग (हिं०)। सोज़न (फ़ा०, सुई) = सुई (हिं०)। रिश्तह् (फा० तागा) = ताग (हिं०, तागा)। बहिंदी = हिन्दी में।

चालनी गिर्बाल चाकी आसिया।
देगदां चूल्हा व कंदू कोठिया ॥२६॥

चालनी (हिं० चलनी, छन्नी) = गिर्बाल (अर०, छन्नी, चलनी)। चाकी (हिं०, चक्की) = आसिया (फ़ा०, चक्की)। देगदां (फा०, चूल्हा) = चूल्हा (हिं०)। कंदू (फा०, कोठी) = कोठिया (हि०, कोठी)।

सर्द सीतल गर्म ताता चीर सख़्त।
नर्म कोवल नेश डंक औरंग तख़्त ॥२७॥

सर्द (फा०, ठंडा) = सीतल (हि०, ठंडा, सं० शीतल)। गर्म (फ़ा०, तुलनीय सं० घर्म) = ताता (हि०, गर्म, सं० तप्त)। चीर (फा० चीरह्, बलशाली) = सख़्त (फ़ा०, कठोर)। नर्म (फ़ा०) = कोवल (हिं०, कोमल)। नेश (फ़ा०, डंक) = डंक (हिं०)। औरंग (फा०, सिंहासन) = तख़्त (फा० सिंहासन)।

जारोब सोहनी कि सबद अस्त टोकरा।
मिक़राज कतरनी कि बुवद उस्तरा छुरा ।।२८।।

जारोब (फ़ा०, झाड़ू) = सोहनी (हि०, झाड़ू) । सबद (फ़ा०, टोकरा) = टोकरा (हि०) । अस्त = है। मिक़राज (अर०, कैंची) = कतरनी (हि०, कैंची)। बुवद (फ़ा०) = हुआ । उस्तरा (फ़ा०, छुरा) = छुरा (हि०) ।

उम्मीद आस बाशद नाउमीद है निरास।
चर्ख़ ओ फ़लक सिपहर बुवद आसमाँ अकास ।।२९।।

उम्मीद (फ़ा०, आशा) = आस (हि०, आशा) । बाशद (फ़ा०) = हो। नाउमीद (फा०, निराश) = निरास (हि०, निराश) । चर्ख (फ़ा०, आकाश) = फ़लक (अर०, आकाश) = सिपहर (फ़ा०, आकाश) = आसमाँ (फ़ा०, आकाश) = अकास (हि०, आकाश) । बुवद (फ़ा०) = हुआ ।

रान ओ फ़ख़िज कि जाँघ बवद नाज लाडला ।
उस्तुख़ाँ हाड़ बाशद दीवानह् बावला ।।३०।।

रान (फ़ा०, जंघा) = फख़िज (अर०, जंघा) = जाँघ (हि०) । बुवद (फ़ा०) = हुआ । नाज़ (फ़ा०, गर्व, हाव-भाव) = लाड़ला (हि०) । उस्तुख़ाँ (फ़ा०, हड्डी) = हाड़ (हि०, अस्थि) । दीवानह् (फ़ा०, पागल) = बावला (हि०)। यहाँ हिन्दी 'लाडला' नाज़ के समशब्द के रूप में दिया गया है । आज ही नहीं उस काल में भी 'लाड़ला' के उक्त अर्थ में प्रयोग की संभावना नहीं है ।

बादह् शराब ओ रावक ओ सहबा मय अस्त ओ मद ।
गर जुरअह् जाँ खुरी तू कुनी कारे नेक बद ।।३१।।

बादह् (फ़ा०, शराब) = शराब (अर०) = रावक (फा०, मदिरा) = सहबा (अर०, लाल रंग की मदिरा) = मय (फ़ा०, मदिरा) = मद (हि०, मदिरा) । गर जुरअह् जाँ खुरी तू कुनी कारे नेक बद = यदि तू मदिरा की एक घूँट भी पीएगा तो अच्छा काम भी बिगाड़ देगा ।

रायत लिवा नैज़ह् बुवद सिपर अस्त ढाल ।
लब-ए-आब नदी हौज दिगर सरवर अस्त ताल ।।३२।।

रायत (अर०, पताका) = लिवा (अर०, ध्वजा) । = नैज़ह् (फा०, एक प्रकार की ध्वजा) । बुवद (फ़ा०) = हुआ । सिपर (फ़ा०, ढाल) = ढाल (हि०) । अस्त (फ़ा०) = है । लब-ए-आब (फ़ा०, कुंड, नदी) = नदी (हि०) । हौज़ (अर०, कुंड) = सरवर (हि० सरोवर) = ताल (फ़ा०, तालाब) । अस्त = है ।

ताऊस मोर बाशद ओ दुर्राज तीतरा।
ख़ूब ओ नीक ओ भला व बद ओ ज़िश्त है बुरा ॥३३॥

ताऊस (अर०, मोर) = मोर (हि०, मयूर)। बाशद (फ़ा०) = हो। दुर्राज (अर०, तीतर) = तीतरा (हि०, तीतर, सं० तित्तिर)। ख़ूब (फ़ा०, सुन्दर) = नीक (फ़ा०, सुन्दर) = भला (हि०. सुन्दर, सं० भद्र)। बद (फ़ा०, बुरा) = ज़िश्त (फ़ा०, बुरा) = बुरा (हि०, सं० विरूप)।

देहीम ओ ताज ओ अफ़सर दर हिंदवी मुकट।
ज़ाग़-ए बुरीदह् पर रा तू जान काग कट ॥३४॥

देहीम (फ़ा०, मुकुट) = ताज (फ़ा० मुकुट) = अफ़सर (अर०, मुकुट) = मुकट (हि०)। दर = में। देहीम, ताज, अफ़सर, हिंदवी में मुकुट है। ज़ाग़ (फ़ा०, कौवा) = काग (हि०, कौवा)। बुरीदह् (फ़ा०, कटा हुआ) = कट (हि०)। पर रा = पंख का।

गैहान ओ दहर ओ गेती दुनिया दिगर जहाँ।
दर हिन्दवी तू प्रिथमी संसार जग बेदाँ ॥३५॥

गैहान (फ़ा०, संसार) = दहर (अर० संसार) = गेती (फ़ा०, संसार) = दुनिया (अर०, संसार) = जहाँ (फ़ा०, संसार) = प्रिथमी (हि० पृथ्वी) = जग (हि०) = संसार (हि०)। बेदाँ (फा०) = तुम जानो। गैहान, दहर, गेती, दुनिया, जहाँ को हिन्दवी में पृथ्वी, संसार, जग जानो।

शबगीर ओ लैल शब तू बेदाँ रात रैन निस।
फ़ानीज़ ओ कंद ओ शकर गुण जान, ज़हर बिस ॥३६॥

शबगीर (फ़ा०, रात का पिछला पहर) = लैल (अर०, रात) = शब (फ़ा० रात) = रात (हि०, रजनी) = रैन (हि०, रजनी) = निस (हि०, निशा)। फ़ानीज़ (अर०, शक्कर) = कन्द (अर०, शक्कर) = शकर (फ़ा०, शक्कर) = गुड़ (हि०)। ये पर्याय एकार्थी नहीं हैं, निकटार्थी हैं। ज़हर (फ़ा०, विष) = बिस (हि०, विष)। जान = जानो।

जान ओ ख़ान जीव तन ओ काल्बुद कया।
आदत चो ख़ूए सहज बेदाँ आतिफ़त मया ॥३७॥

जान (फ़ा०, प्राण, आत्मा) = ख़ान (फ़ा०, आत्मा) = जीव (हि०)। तन (फ़ा०, शरीर) = काल्बुद (फ़ा०, शरीर) = कया (हि०, काया)। आदत (अर०) = ख़ू (फ़ा०, प्रकृति) = सहज (हि०)। चो = जो। बेदाँ = जान। आतिफ़त (अर०, दया) = मया (हि०, दया, ममता, सं० माया)।

दिल है हिया ओ ख़ातिर ओ अंदेशह् चीतना।
मेहमान ओ ज़ैफ़ रा तू बेदानी के पाहुना ॥३८॥

दिल (फ़ा०) = हिया (हिं०, सं० हृदय) = खातिर (अर०, हृदय)। अंदेशह् (फ़ा०, चिन्ता) = चीतना (हिं०, सोचना, सं० चिन्तन)। मेहमान (फ़ा०) = ज़ैफ़ (अर०, अतिथि) = पाहुना (हिं०, अतिथि, सं० प्राघुर्ण)।

उम्मुल किताब फातिहह् अलहम्द जाको नाँव।
उम्मुल कुरा तू मक्का बिदाँ करियह् देह गाँव ॥३९॥

उम्मुल किताब (किताबों की माँ अर्थात् क़ुरान) = फ़ातिहह् (क़ुरान की इसी नाम का पहला सूरा) = अलहम्द (क़ुरान की एक सूरत) = ईश्वर प्रशंसनीय है। उम्मुल कुरा (पृथ्वी, अर्थात् जगहों की माँ अर्थात् मक्का) = मक्का। बिदाँ (फ़ा०, जान)। करियह् (अर०, गाँव) = देह (फ़ा०, गाँव) = गाँव (हिं०, सं० ग्राम)

हिर्बा गिरगिट कज़दुम बिच्छू रासू न्यौल।
सग है कुत्ता माही मछली लुक्मह् कौल ॥४०॥

हिर्बा (फ़ा०, गिरगिट) = गिरगिट (हि०, सं० गलगति)। कज़दुम (फा०, बिच्छू) = बिच्छू (हिं०, सं० वृश्चिक)। रासू (फ़ा०, नेवला) = न्यौल (हिं०, नेवला, सं० नकुल)। सग (फ़ा०, कुत्ता) = कुत्ता (हिं०)। माही (फा०, मछली) = मछली (हि०, स० मत्स्य)। लुक्मह् (अर०, ग्रास) = कौल (हिं०, कौर, सं० कवल)।

दुश्मन बैरी कोस दमामह् बाराँ मेह।
इश्क मुहब्बत आशिक मित्तर जानो नेह ॥४१॥

दुश्मन (फ़ा०) = बैरी (हिं०)। कोस (फ़ा०, नगाड़ा) = दमामह् (फ़ा०. नगाड़ा)। बाराँ (फ़ा०, वर्षा) = मेह (हिं०, वर्षा, सं० मेघ)। इश्क (अर०) = मुहब्बत (अर०) = नेह (हिं०, स० स्नेह)। आशिक़ (अर०, प्रेमी) = मित्तर (हिं०, मित्र)।

ताम सवाद ओ तआम खुरिश जो कहिये खाना।
आलिम दाना हिंदवी बोल जो कहिये स्याना ॥४२॥

ताम (अर०, स्वाद) = सवाद (हिं०, सं० स्वाद)। तआम (अर०, भोजन) = खुरिश (फ़ा०, भोजन) = खाना (हिं०, सं० खादन)। आलिम (अर०, विद्वान्) = दाना (फ़ा०, बुद्धिमान्) = स्याना (हिं०, सं० सज्ञान)।

सीनह् छाती पिस्ताँ चूची बीनी नाक।
ज़ाहिर पैदा परगट दोसे ताहिर पाक ॥४३॥

सीनह् (फ़ा०, छाती)=छाती (हिं०)=पिस्ताँ (फ़ा०, छाती)=चूची (हिं०, छाती, सं० चुचि)। बीनी (फ़ा०, नाक)=नाक (हिं०, सं० नासिका)। जाहिर (अर०, प्रकट)=पैदा (फ़ा०)=परगट (हिं०, सं० प्रकट)। ताहिर (अर०, पवित्र)=पाक (फ़ा०, पवित्र)।

तपलर्जह् दर हिंदवी आमद जूड़ी ताप।
दर्द-ए-सर आमद सिर की पीड़ा तग है धाप ॥४४॥

तपलर्जह् (फा०, मलेरिया)=जूड़ीताप (हिं०, मलेरिया)। आमद= आया। दर हिंदवी=हिंदी मे। दर्द-ए-सर (फ़ा०, सिर का दर्द)=सिर की पीड़ा (हिं०)। तग (फ़ा०, भाग-दौड़)=धाप (हिं० भाग-दौड़, तुलनीय दौड़-धूप; जनि धापहु बलि चरन मनोहर—सूर, स० धावन, पुरानी हिंदी धापना=दौड़ना, चलना)।

हामह् काचक माँथा कपार जा कहिये ठाँव।
चूं दर हिंदवी मरा बेपुर्सी खोपड़ी नाँव ॥४५॥

हामह् (अर०, माथा)=काचक (फ़ा०, खोपडी)=माँथा (हि०, स० मस्तक) =कपार (हिं०, स० कपाल)=खोपड़ी (हिं०, स० कर्पट, खर्पर)। जा (फ़ा०, जगह)=ठाँव (हि०, जगह, सं० स्थान)। चूं दर हिंदी मरा बेपुर्सी=जब तू मुझसे (खोपड़ी का नाम) पूछता है।

दूद काजल सुर्मह् अंजन क़ीमत मोल।
चाकर सेवक बंदह् चेरा क़ौल सो बोल ॥४६॥

दूद (फ़ा०, धुआँ, धुंध)=काजल (हिं०, सं० कज्जल)। सुर्मह् (फ़ा०, सुर्मा) =अंजन (हिं०)। क़ीमत (अर०)=मोल (हिं०, सं० मूल्य)। चाकर (फ़ा०, नौकर)=सेवक (हिं०)=बंदह् (फ़ा०, सेवक)=चेरा (हिं० नौकर)। क़ौल (अर०, वचन)=बोल (हिं०)।

मिस है ताँबा रोईं कासा आहन लोह।
तेशह बसोला तबर कुल्हाड़ा उज्र दिरोह ॥४७॥

मिस (फ़ा०, ताँबा)=ताँबा (हिं०, सं० ताम्र)। रोईं (फ़ा०, काँसा, काँसे का बना हुआ)=कासा (हिं०, सं० कांस्य)। आहन (फ़ा० लोहा)=लोह (हिं०, सं० लौह)। तेशह् (फ़ा० कुदाल)=बसोला (हिं०, कुदाल; अब बढ़ई का औजार विशेष)। तबर (फा० कुल्हाड़ा)=कुल्हाडा (हिं०, सं० कुठार)। उज्र (अर०, आपत्ति)=दिरोह (हिं०, द्रोह)

ग़ार मग़ाक जो गड्ढा कहिए कुवाँ चाह।
दरिया बहर समंदर कहिए जाकी नाँही थाह ॥४८॥

ग़ार (अर०, गड्ढा) = मग़ाक (फ़ा०, गड्ढा) = गड्ढा (हि०, सं० गर्त)। कुवाँ (हि०, कुआँ) = चाह (फ़ा०, कुआँ)। दरिया (फ़ा०, समुद्र) = बहर (अर०, समुद्र) = समंदर (हि०, सं० समुद्र)।

गंदुम गेहूँ नखुद चना शाली है धान।
जुर्रत जूनरी अदस मसूर बर्ग है पान ॥४९॥

गंदुम (फ़ा०, गेहूँ) = गेहूँ (हि०, सं० गोधूम)। नख़ुद (फ़ा०, चना) = चना (हि०, सं० चणक)। शाली (फ़ा०, धान) = धान (हि०, सं० धान्य)। जुर्रत (फ़ा०, ज्वार) = जूनरी (हि० जवार, तुलनीय भोजपुरी जोन्हरी)। अदस (फ़ा०, मसूर) = मसूर (हि०)। बर्ग (फ़ा०, पत्ता) = पान (हि०, सं० पर्ण)।

अब्रू भौएँ सबलत मूछें दंदाँ दाँत।
रीश मुहासिन डाढ़ी कहिए रोदह् आँत ॥५०॥

अब्रू (फ़ा०, भौंएँ) = भौंह् (हि०, सं० भ्रू)। सबलत (अर०, मूँछ) = मूँछ (हि०, सं० श्मश्रु)। दंदाँ (फ़ा०, दाँत) = दाँत (हि०, सं० दंत)। रीश (फ़ा०, दाढ़ी) = मुहासिन (अर०, दाढ़ी-मूँछ) = दाढ़ी (हिं०, दाढ़ी, सं० दंष्ट्र)। रोदह् (फ़ा०, आँत) = आँत (हि०, सं० अंत्र)।

ख़द रुख़सार हिंदवी बोल जो कहिए गाल।
आज इमरोज बेदाँ फ़र्दा रा तू बिगोई काल ॥५१॥

ख़द (अर०, गाल) = रुख़सार (फ़ा०, गाल) = गाल (हि०, सं० गल्ल)। आज (हि०, सं० अद्य) = इमरोह् (फ़ा०, आज)। बेदाँ (फ़ा०) = जान। फ़र्दा (फ़ा०, आने वाला कल) = काल (हि०, कल, सं० कल्य)। रा (फ़ा०) = को। बिगोई (फ़ा०) = कह।

मिंजल अस्त ओ दास दाँती जाको नाँव।
तुर्ब मूली दार सूली जा है ठाँव ॥५२॥

मिंजल (अर०, हँसिया) = दास (फ़ा०, हँसिया) = दराँती (हि०, हँसिया)। तुर्ब (फ़ा०, मूली) = मूलीं (हि०, सं० मूलिका)। दार (फ़ा०, सूली) = सूली (हि०, सं० शूलिका)। जा (फ़ा०, जगह) = ठाँव (हि०, सं० स्थान)।

सल्लह् अफ़्शाँ छाज है अफ़्शाँ पछोर।
शोए शौहर हिंदवी है ममस तोर ॥५३॥

ग़ल्लह् अफ़शाँ (फ़ा०, छाज, अनाज साफ़ करनेवाला) = छाज (हिं०) = अफ़शां (फ़ा०) = पछोर (हिं०, पछोरनेवाला) । शोए (फ़ा०, पति) = = शौहर (फ़ा०, पति) = मनस तोर (हिं०, तेरा मनुष्य = तेरा आदमी = पति) ।

ढाकनी सरपोश चपनी जानिये ।
है धुआँ दूद ओ दुखाँ पहचानिये ॥५४॥

ढाकनी (हिं०, ढक्कन) = सरपोश (फ़ा०, ढक्कन) = चपनी (हिं०, हाँड़ी का ढक्कन) । धुआँ (हिं०) = दूद (फ़ा०, धुआँ) = दुखाँ (अर०, धुआँ) ।

तू पंबह् दानह् बेदाँ हब्बेकुतन दर ताजी ।
वले बिनौले बिदाँ चूँ बहिंदी अंदाजी ॥५५॥

पंबह् दानह् (फ़ा०, बिनौला) = हब्बेकुतन (अर०, बिनौला) = बिनौला (हिं०) । दर ताजी = अरबी में । वले (फ़ा०) = लेकिन । बिदाँ (फ़ा०) = जानो । चूँ बहिंदी अंदाज़ी (फ़ा०) = जब हिंदी में अदाज़ लगाया ।

मूसल अस्त मारूफ़ हावन ओखली ।
हीज़ इन्नीन फह्ल नर आमद लली ॥५६॥

मूसल (हिं०) । अस्त (फा०) = है । मारूफ (अर०) = प्रसिद्ध । हावन (फ़ा०, ओखली) = ओखली (हिं०, सं० उलूखल) । हीज (फ़ा०, नपुंसक) = इन्नीन (अर०, नपुसक) । फ़ह्ल (अर०, नर) = नर (हिं०) । आमद (फा०) आया । लली (हिं०) = लड़की । अंतिम अंश स्पष्ट नहीं है ।

फ़ारसी रूबाह हिंदवी लोखड़ी ।
माकियाँ रा नीज़ मीखाँ कूकड़ी ॥५७॥

रूबाह (फ़ा०, लोमड़ी) = लोखड़ी (हिं०, लोमड़ी) । माकियाँ (फ़ा०, मुर्ग़ी) = कूकड़ी (हिं०, मुर्गी, सं० कुक्कुटी) । रा (फ़ा०) = को । नीज (फ़ा०) = और, भी । मीखाँ (फ़ा०) = तुम कहो ।

कूकड़ा मीखाँ ख़ुरूस-ए-सुबहख़ाँ ।
नीज़ मीखाँ दीक दरताजी ज़बाँ ॥५८॥

कूकड़ा (हिं०, मुर्ग़ा) = ख़ुरूस (फ़ा०, मुर्गा) । ख़ुरूसे सुबहख़ाँ (फ़ा०) = सुबह गाने वाला मुर्ग़ा । = दीक (अर०, मुर्गा) । मीख़ाँ = तुम कहो । दर ताजी ज़बाँ (फ़ा०) = अरबी भाषा में ।

कस्र कोशक हिस्न दर ताजी हिसार।
हुजरह कोठा बाम अटारी दर दुवार ॥५९॥

कस्र (अर०, महल) = कोशक (अर०, महल)। हिस्न (अर०, दुर्ग) = हिसार (अर०, दुर्ग)। हुजरह (अर०, कोठरी) = कोठा (हिं०, सं० कोष्ठक)। बाम (फा०, अटारी) = अटारी (हिं०, सं० अट्टालिका)। दर (फा०, दरवाज़ा) = दुवार (हिं०, सं० द्वार)।

अज्ब शीरीन अम्त मीठा चाख देख।
तल्ख़ कड़वा तुर्श खट्टा आख देख ॥६०॥

अज्ब (अर०, मीठा) = शीरीन (फ़ा०, मीठा) = मीठा (हिं०, सं० मिष्ट)। तल्ख (फा०, कड़वा) = कड़वा (हिं०, सं० कटुक)। तुर्श (फ़ा०, खट्टा) = खट्टा (हिं०, सं० कटु)। चाख देख = चखकर देखो। आख देख = कहकर देखो।

जफ़्त ऐंठन चर्ब चीकन शोर खार।
तेज चरपर जीभ जाने ये विचार ॥६१॥

जफ्त (फ़ा०, मोटा) = ऐंठन (हिं०?)। चर्ब (फ़ा०, चिकना) = चीकन (हिं० चिकना, तेल, सं० चिक्कण)। शोर (फा०, खारा) = खार (हिं०, खारा, स० क्षार)। तेज (फा०) = चरपर (हिं० चरपरा)। जीभ इसका विचार जानती है।

कागज ओ किर्तास कागद पेखिये।
कम कलम हम खामह लेखन लेखिये ॥६२॥

काग़ज (फ़ा०) = किर्तास (अर०, कागज) = कागद' (फा० कागज)। पेखिये = देखिये। क़लम (अर०) = खामह (फा०, लेखनी)। हम (फा०) = साथ, भी। लेखन लेखिये = लिखना लिखिए।

दुर मरवारीद मोती जानिए।
हम सदफ़ सीपी समदर आनिए ॥६३॥

दुर (फा०, मोती) = मरवारीद (फ़ा०, मोती) = मोती (हिं०, सं० मौक्तिक)। सदफ़ (अर०, सीपी) = सीपी (हि०)। समंदर आनिए = समुद्र से लाइए।

सौर सुतूर गाव है बलद।
खाहे लादो खाहे अलद ॥६४॥

सौर (अर०, बैल) = सुतूर (अर०, बैल, चौपाया) = गाव (फा०, बैल) = बलद (हि०, बैल, सं० बलीवर्द)। ग़ाहे लादो ख़ाहे अलद (फा०) = चाहे लादो, चाहे मत लादो।

जंब गुनाह जो कहिए दोस।
ख़िश्म ओ ग़ज़ब दर ,हिंदवी रोस ॥६५॥

जंब (अर०, पाप) = गुनाह (फा०, पाप) = दोस (हिं०, सं० दोष)। ख़िश्म (फा०, क्रोध) = ग़ज़ब (अर०, क्रोध) = रोस (हि०, स० रोष)। दर हिंदवी = हिंदी में।

सरगीं गोबर फ़लह् है पेवसी।
कुदाल कलंद जो कहिए कस्सी ॥६६॥

सरगी (फ़ा०, गोबर) = गोबर (हिं०)। फ़लह (फ़ा०, जमाया हुआ दूध) = पेवसी (हिं०, प्रसव के बाद ८-१० दिन तक का दूध, सं० पीयूष)। कुदाल (हिं०) = कलंद (फ़ा०, खुर्पी, हल का फाल) = कस्सी (हिं०, कुदाल, फावड़ा; सं० कर्षी)।

बुज़ुर्गी बड़ाई व पीरी बुढ़ापा।
निकोई भलाई जवानी तनापा ॥६७॥

बुज़ुर्गी (फ़ा०, बड़ा होने का भाव) = बड़ाई (हि०)। पीरी (फ़ा०, बुढ़ापा) = बुढ़ापा (हि०)। निकोई (फ़ा०, भलाई) = भलाई (हिं०)। जवानी (फ़ा०) = तनापा (हिं०, जवानी)।

लिसान ओ ज़बाँ फ़ारसी जीभ आखो।
दरख़्त ओ शजर रा तुम रुख भाखो ॥६८॥

लिसान (अर०, जीभ) = ज़बाँ (फ़ा०, जीभ) = जीभ (हिं०)। आखो (हि०) = कहो। दरख़्त (फा०, पेड) = शजर (अर०, पेड) = रुख (हिं०, सं० वृक्ष)। भाखो (हिं०) = कहो। रा (फ़ा०) = को।

दरोग़ ओ दिगर किज़्ब तुम झूठ जानो।
बुज़ुर्ग ओ क़लाँ रा बडा जान मानो ॥ ६९ ॥

दरोग़ (फ़ा०, झूठ) = किज़्ब (अर०, झूठ) = झूठ (हिं०)। बुज़ुर्ग (फ़ा०, बडा, वृद्ध) = क़लाँ (फ़ा०, बड़ा) = बड़ा (हिं०)। रा (फ़ा०) = को।

बहिंदी ज़बाँ ख़ानह् हम बैत घर है।
जो ख़ौफ़ ओ ख़तर बीम हम तर्स डर है ॥ ७० ॥

बहिंदी ज़बाँ (फ़ा०)=हिंदी भाषा में। हम (फ़ा०)=भी, और। ख़ानह (फ़ा०, घर)=बैत (अर०, घर)=घर (हिं०)। ख़ौफ़ (अर०, भय)=ख़तर (अर०, भय)=बीम (फ़ा०, भय)=तर्स (फ़ा०, भय, तुलनीय सं० त्रास)=डर (हिं०)।

तमन्ना व हम आरज़ू चाव कहिये।
यद ओ दस्तो हाथो क़दम पाँव कहिये॥ ७१॥

तमन्ना (अर०, कामना)=आरज़ू (फ़ा०, इच्छा)=चाव (हिं०, चाह, इच्छा)। यद (अर०. हाथ)=दस्त (फ़ा० हाथ)=हाथ (हिं)। क़दम (अर०, पाँव)=पाँव (हिं०)।

चराग अस्त दीया फ़तील अस्त बाती।
बुवद जद्द दादा नबीर अस्त नाती॥ ७२॥

अस्त (फ़ा०)=है। चराग़ (फ़ा०, दीप)=दिया (हिं०, सं० दीपक)। फ़तील (अर०, दीपक की बत्ती)=बाती (हिं०, सं० वर्तिका)। जद्द (अर०, दादा)=दादा (हिं०)। नबीर (फ़ा०, पौत्र)=नाती (हिं०)।

क़द्दू ख़रपूज़ह् हर दो मारूफ़ मी दाँ।
ख़ियार अस्त ककड़ी ओ खीरा हमी ख़्वाँ॥ ७३॥

क़द्दू (फ़ा०, लौकी, घिया)=ख़रपूज़ह् (फ़ा०, ख़रबूज़ा)। ख़ियार (अर०, खीरा)=खीरा (हिं०, सं० क्षीरक)। मी दाँ (फ़ा०)=तुम जानो। अस्त (फ़ा०)=है। ख़्वाँ (फ़ा०)=कहो।

दरोबार दह्लीज रा बार जानो।
शुतुर ऊँट घोड़ा फ़रस अस्प मानो॥ ७४॥

दरोबार (फ़ा०, द्वार)=दलहीज (फ़ा०, द्वार)=बार (हिं०, द्वार)। रा (फ़ा०)=को। शुतुर (फ़ा०, ऊँट)=ऊँट (हिं०)। घोड़ा (हिं०)=फ़रस (अर०, घोड़ा)=अस्प (फ़ा०, घोड़ा, तुलनीय सं० अश्व)।

गिरिह अक़्द बाशद बताजी व लेकिन।
बहिंदी बुवद गाँठ बिश्नो तो अज़ मन॥ ७५॥

गिरिह (फ़ा०, गाँठ)=अक़्द (अर०, गाँठ)=गाँठ (हिं०, सं० ग्रंथि)। अगर तुम मुझसे पूछो तो अरबी में गिरह 'अक़्द' है लेकिन हिंदी में 'गाँठ' हुआ।

नहार ओ दिगर योम रोज़ अस्त जानो।
बहिंदी ज़बाँ दिवस दिन रा पछानो॥ ७६॥

नहार (अर०, दिन) = यौम (अर०, दिन) = रोज़ (फ़ा०, दिन) = दिवस, (हिं०) = दिन (हिं०)। 'नहार' 'यौम' 'रोज़' है, जानो; हिंदी भाषा मे 'दिन', 'दिवस' को पहचानो।

कसीर ओ फ़िरावान ओ बिस्यार अफ़्ज़ूं।
बसा बहुत कहिए सभी जानियो तूं ॥ ७७ ॥

कसीर (अर०, बहुत) = फ़िरावान (फा०, बहुत) = बिस्यार (फा०, बहुत) = अफ़्ज़ूं (फ़ा०, बहुत) = बसा (फा०, बहुत) = बहुत (हिं०)।

समंदर रहे आग मे जीव कीड़ा।
चो बुअद अस्त दूर ओ चो नज़दीक नीड़ा ॥ ७८ ॥

समंदर (फ़ा०, आग का कीड़ा) = आग मे जीव = कोडा (हिं०) = आग का कीड़ा। चो (फ़ा०) यदि। बुअद (अर०, दूरी) = दूर (हिं०)। नजदीक (फ़ा० = नीड़ा (हिं०, स० निकट)।

नमक मिल्ह है लोन शीरीन मीठा।
बहिंदी जबाँ बदमज़ह् अस्त सीठा ॥ ७९ ॥

नमक (फा०) = मिल्ह (अर०, नमक) = लोन (हिं०, नमक, स० लवण)। शीरीन (फ़ा०, मीठा) = मीठा (हिं०, स० मिष्ट)। बदमज़ह् (फा०, जिसका स्वाद बुरा हो) = सीठा (हिं०, नीरस, स० शिष्ट)। अस्त = है।

पिदर बाप बाशद चो उम्म अस्त मादर।
सिनाँ भाल बरगुस्तवान अस्त पाखर ॥ ८० ॥

पिदर (फ़ा०, पिता) = बाप (हिं०)। अस्त (फ़ा०) = है। उम्म (अर०, माँ) = मादर (फ़ा०, माँ)। सिनाँ (फा०, भाला) = भाला (हिं०)। 'भाला' को छंद की मात्रा के अनुरूप बनाने के लिए यहाँ 'भाल' कर दिया गया है। बरगुस्तवान (फ़ा०) = पाखर (हिं०) = लड़ाई मे घोड़े-हाथी को पहनाया जानेवाला कवच।

जुबाब ओ मगस माखी ओ पश्शह माँछर।
बुवद रेग बालू ओ संगरेज़ह् काँकर ॥ ८१ ॥

जुबाब (अर०, मक्खी) = मगस (फा०, मक्खी) = माखी (हिं०, सं० मक्षिका)। पश्शह (फा०, मच्छर) = माँछर (हिं०, स० मत्सर)। रेग (फा०, रेत) = बालू (हिं०)। संगरेज़ह् (फ़ा०, ककड़) = काँकर (हिं०)।

बेया आव नशी बैठ बेरो जा।
बेबीं देख बेदह् दे बेखुर खा ॥ ८२ ॥

बेया (फ़ा०, आओ)=आव (हिं०)। नशीं (फ़ा०, बैठ)=बैठ (हिं०)। बेरौ (फ़ा०, जा)=जा (हिं०)। बेबीं (फ़ा०, देख)=देख (हिं०)। बेदह (फ़ा०, दे)=दे(हिं०)। बेखुर (फ़ा०, खा)=खा (हिंदी)।

बेसा पीस बेक़श खींच बेचश चाख।
बेज़न मार बेदर फाड़ बेनेह् राख॥ ८३॥

बेसा (फ़ा०, पीस)=पीस (हिं०)। बेक़श (फ़ा०, खीच)=खीच (हिं०)। बेचश (फ़ा, चख)=चाख (हिं०)। बेज़न (फा०, मार)=मार (हिं०)। बेदर (फ़ा०, फाड़)=फाड़ (हिं०)। बेनेह् (फा०, रख)=राख (हिं०)।

गुलू हल्क़ दहन मुख सखुन बोल।
शिकम पेट नज़र डीठ दुहुल ढोल॥ ८४॥

गुलू (फ़ा०, गला)—हल्क़ (अर०, गला)। दहन (फा०, मुख)=मुख (हिं०)। सखुन (फ़ा०, बोल)=बोल (हिं०)। शिकम (फ़ा०, पेट)=पेट (हिं०)। नज़र (अर०)=डीठ (हिं०, दृष्टि)। दुहुल (फा०, ढोल)=ढोल (हिं०)।

तबीब ओ हकीम अस्त बैद ऐ बिरादर।
बुवद वाद बावो दिगर आग आजर॥ ८५॥

तबीब (अर०, वैद्य)=हकीम (अर०, वैद्य)=बैद (हिं०, सं० वैद्य)। ऐ बिरादर (फ़ा०)=ऐ भाई। बाद (फ़ा०, वायु)=बाव (हिं०, सं० वायु, तुल० बात)। आग (हिं०, सं० अग्नि)=आजर (फा०, आग)। दिगर (फ़ा०) =दूसरा।

दिगर गोशकुन वाज़ ओ अंदर्ज़ो पंद।
बहिंदी बुवद सीख दरकार बंद॥ ८६॥

दिगर गोशकुन (फा०)=दूसरी बात सुनो। वाज़ (अर०, धर्मोपदेश)= अंदर्ज़ (फ़ा०, सीख)=पंद (फा०, सीख)=सीख (हिं०)। दरकार बन्द (फ़ा०) छन्द के लिए अपेक्षित है। बहिंदी बुवद=हिंदी में हुआ।

खराब अस्त बीरां तू उजड़ा हमीखां।
तू मामूर आबाद बसता हमीदां॥ ८७॥

खराब (फ़ा०, निर्जन स्थान)—बीरां (फ़ा०, निर्जन स्थान)=उजड़ा (हिं०)। हमीखां (फ़ा०)=कहो। मामूर (अर०, आबाद)=आबाद (फ़ा०)= बसता (हिं०, आबाद)। हमीदां (फ़ा०)=जानो।

हस्त इब्नुललैल माहे आस्माँ।
चाँद बेटा रात का ताजी ज़बाँ ॥ ८८ ॥

हस्त (फ़ा०) = है। इब्नुललैल (अर०, रात का बेटा = चाँद) = माह (फ़ा०, चाँद मा)। चाँद बेटा रात का ताजी ज़बाँ (फ़ा०) = अरबी भाषा में चाँद रात का बेटा है।

लैल शब दैजूर दर ताजी ज़बाँ।
रात अँधियारी तू नेकोतर बेदाँ ॥ ८९ ॥

लैल (अर०, अँधेरी रात) = शब (फा०, रात) = दैजूर (अर०, अँधेरी रात)। 'अँधियारी रात' अरबी भाषा में लैल, शब, दैजूर है। नेकोतर = अच्छी तरह। बेदाँ = जान।

दादन देना दाद दिया फ़ेल कार।
कर्ज़ ओ बाम ओ देन दर हिंदी उधार ॥ ९० ॥

दादन (फ़ा०, देना) = देना(हिं०)। दाद (फा०, दिया) = दिया (हिं०)। फेल (अर०, कार्य) = कार (हिं०, कार्य)। कर्ज़ (अर०) = बाम (फा०, कर्ज़) = देन (हिं०, ऋण) = उधार (हिं०)।

आफ़त ओ आसेब है रंज ओ बला।
हय्यी ज़िदह् जानियो तुम जीवता ॥ ९१ ॥

आफ़त (फ़ा०, कष्ट, विपत्ति) = रंज (फ़ा०, कष्ट, विपत्ति)। आसेब (फ़ा०, प्रेतबाधा) = बला (अर०, प्रेतबाधा)। हय्यी (अर०, जीवित) = ज़िदह् (फ़ा०, जीवित) = जीवित (हिं०)। जानियो (हिं०) = जानो।

शान ओ मिश्त अस्त दर हिंदी ज़बाँ।
कघो आमद पेश तू करदम बयाँ ॥ ९२ ॥

शान, शानह् (फ़ा०, कंघी) = मिश्त (अर०, कंघी) = कघी (हिं०)। करदम बयाँ (फ़ा०) = मैंने वर्णन किया है। अस्त दर हिंदी ज़बाँ (फा०) = हिंदी भाषा में है।

किर्मे-ए-शबताब अस्त कीड़ा चमकनाँ।
नीज़ गोयंद आतशक ऊ रा बेदाँ ॥ ९३ ॥

किर्मे-ए-शबताब (फ़ा०, किर्म = कीड़ा, शब = रात, ताब = चमक, अर्थात् जुगनू) = चमकनाँ कीड़ा (हिं०, जुगनू) = आतशक (फा०, जुगनू)। अस्त (फ़ा०) = है। नीज़ गोयंद(फ़ा०) = और भी……। ऊ रा बेदाँ(फ़ा०) = उस को जानो।

नान बताजी ख़ुब्ज़ रोटी हिंदवी।
पंब ओ महलूज रा मी दां रुई॥ ६४॥

नान (फ़ा०, रोटी) = ख़ुब्ज़ (अर०, रोटी) = रोटी (हिं०)। बताजी (फ़ा०) = अरबी भाषा में। पंब (फ़ा०, रुई) = महलूज (अर०, रुई) = रुई (हिं०)। रा मी दां (फ़ा०) = को जानो।

पस बहिंदी पंबह् रा मी दा कपास।
नस्र करगस बूम उल्लू बूए बास॥ ६५॥

पस (फ़ा०) = अन्त में। पंबह् (फ़ा०, कपास) = कपास (हिं०)। नस्र (अर०, गिद्ध) = करगस (फ़ा०, गिद्ध)। बूम ((फ़ा०, उल्लू) = उल्लू (हिं०)। बू (फ़ा०, गंध) = बास (हिं०, गंध)।

बादबेजन बादकश पंखा बुख़ां।
ग़ूक जिफ़्दे मेडकी बेशक बेदां॥ ६६॥

बादबेजन (फ़ा०, फ़र्शी पंखा) = बादकश (फा०, छत का पंखा) = पंखा (हिं०)। बुख़ां (फ़ा०) = तू जान। ग़ूक (फ़ा०, मेंढक) = जिफ्दे (अर०, मेढक) = मेंढक (हिं०, सं० मंडूक)। बेशक बेदां (फ़ा०) = निरसन्देह जानो।

साग सब्जी बहज शादी सुर्ख सूहा लाल।
सब्ज़ हरिया दाश्त धरिया मांद रहिया दाम जाल॥ ६७॥

साग (हिं०, सं० शाक) = सब्ज़ी (फा०, साग, सब्ज़ी)। बहज (अर०, ख़ुशी, आनन्द) = शादी (फ़ा०, आनन्द)। = सुर्ख (फ़ा०, लाल) = सूहा (हिं०, लाल, सं० सौभाग्य) = लाल (हिं०)। सब्ज (फ़ा०, हरा) = हरिया (हिं०, हरा, सं० हरित)। दाश्त (फा०, रखा हुआ) = धरिया (हिं० धरा हुआ)। मान्दह् (फ़ा०, अवशिष्ट) = रहिया (हिं०, अवशिष्ट)। दाम (फा०, जाल) = जाल (हिं०)।

फ़ज्र सुबह ओ ज़ुहर पेशीं अस्र दीगर शाम सांज।
दां ज़ने जाइंदह् जनती है अक़ीमह् जो ये बांज॥ ६८॥

फ़ज्र (अर०, प्रातःकाल) = सुबह (अर०)। ज़ुहर (अर०, दोपहर) = पेशीं अस्र (चौथे पहर के पहले)। अस्र (अर०, चौथा पहर) = शाम (फा०) = सांज (हिं० सांझ, सं० सन्ध्या)। दां = जानो। ज़न (फ़ा०) = औरत। जाइंदह् (फ़ा०) = मां। अक़ीमह् (अर० = बांझ स्त्री) = बांज (हिं०, बांझ, सं० बंध्या)। अर्थात् जो 'जन' 'जनती है' उसे 'जाइंदह्' और जो 'बांज' है उसे 'अक़ीमह्' जानो।

सेर अघाना कूर काना भेद राज़ ।
गुरस्नह् भूका पियासा तश्नह् बाज़ ॥ ९९ ॥

सेर (फ़ा०, तृप्त)=अघाना (हिं०, तृप्त)। कूर (फ़ा०, अन्धा)=काना (हिं०)। भेद (हिं०)=राज (फ़ा०, रहस्य)। गुरस्नह् (फ़ा०, भूखा)=भूका (हिं०, भूखा)। पियासा (हिं०, प्यासा)=तश्नह् (फ़ा० प्यासा, तृषित)। बाज़ (फा०)=फिर।

हिमार अगर तुरा पुरसंद चीस्त खरस्त ।
बहिंदवी बुवद गदहा के बारबरस्त ॥१००॥

हिमार (अर०, गधा)=खर (फ़ा०, गधा)=गदहा (हि०, सं० गर्दभ) (हिं०)। हिमार······खरस्त (फ़ा०)=अगर तुझसे (कोई) पूछे (?) कि 'हिमार' क्या है (तो तू कह दे)'खर' है। बहिंदवी···बारबरस्त (फ़ा०)=हिंदी में गधा हुआ जो बोझ ढोता है। बार (फ़ा०)=भार, बोझा।

ख़रगोश खरहा बाशद आहू बुवद हिरन ।
अंगुश्तरी अंगूठी पैरायह् आभरन ॥१०१॥

ख़रगोश (फ०)=खरहा (हिं०, खरगोश, सं० खरभुक्)। बाशद (फ़ा०) =हो। आहू (फा०, मृग)=हिरन (हिं०)। बुवद (फा०)=हुआ। अंगुश्तरी (फा०, अगूठी)=अगूठी (हिं०, स० अगुष्ठिका)। पैरायह् (फा०, आभूषण) =आभरन (हिं०, स० आभरण)।

बिश्नो तू नाम चर्खए बेचारह् पीर ज़न ।
गोयंद नाम रहटा दर हिंदवी बचन ॥१०२॥

बिश्नो······हिंदवी वचन=(यदि) तू बेचारी बूढ़ी औरत से चर्खे का नाम पूछे (तो वह) कहेगी हिंदी भाषा में (इसे) रहटा (स० अरघट्ट) कहते हैं। चर्ख़ (फा०, चर्खा)=रहटा (हि०, चर्खा)। भोजपुरी मे आज भी चर्खे को पुरानी पीढ़ी के लोग 'रहँटा' कहते हैं। लोकोक्ति भी है : 'ये बूढी सौंग ला, रहटा छोड़ा जाँत ला। नयी पीढ़ी इस लोकोक्ति में 'रहँटा' के स्थान पर 'चरख़ा' कहने लगी है।

पेचक बेदाँ तू पूनी पागुंद गाला दाँ ।
दूकअस्त नाम तकला आवुर्दी अम बयाँ ॥१०३॥

पेचक (फा०, पक्के सूत की गोली)। पूनी (हिं०, रुई की बत्ती)=पागुंद (फा०, धुनी हुई रुई का गोला)=गाला (हिं०, धुनी हुई रुई)। दूक (फा०, तकला)= तकला (हिं०, सं० तर्कु)। आवुर्दी अम बयाँ (फ़ा०)=मैंने कहा है। बेदाँ (फा०) =जान।

आईनह् आरसी के दर रूए बेनगरी।
सेवा बहिंदी तू बेदाँ नामे चाकरी॥१०४॥

आईनह् (फ़ा०, दर्पण)=आरसी (हिं०, दर्पण, सं० आदर्श)। दर रुए बेनगरी (फ़ा०)=उसमें तू अपना चेहरा देखे। सेवा (हि०)=चाकरी (फ़ा०)। बेदाँ (फ़ा०)=जान।

सिदा अलात अहरन फ़ित्तीस तुपक रा।
मी दाँ हतोड़ बाशद बेचूं ओ बेचरा॥१०५॥

सिदा (फ़ा०, निहाई)=अलात (अर०, निहाई)=अहरन (हि०, निहाई, सं० आ+धरण)। फ़ित्तीस (अर०, बड़ा हथौड़ा)=हतोड़ (हिं०, हथौड़ा)। तुपक (तुर्की, तोप)। मी दाँ=जानो। बेचूं ओ बेचरा=निस्संदेह।

चींटी अस्त नाम मोरचह् पिस्सूस्त नामे कैक।
आँ को पयामो नामहबरो क़ासिदस्त पैक॥१०६॥

चींटी (हिं०)=मोरचह् (फ़ा०, चींटी)। पिस्सू (हिं०)=कैक (फ़ा०, पिस्सू)। पयामवर (फ़ा०, सदेशवाहक)=नामह्‌वर (फ़ा०, पत्रवाहक)=क़ासिद (अर०, दूत, पत्रवाहक)=पैक (फ़ा०, दूत, पत्रवाहक)। आँ को पयाम=इसका समाचार।

बेदार बेदाँ के जागता है।
हम खुफ़्तह् बेदाँ के सोवता है॥ १०७॥

बेदार (फ़ा०, जागृत)=जागता है (हिं०)। खुफ़्तह् (फ़ा०, सुप्त)=सोवता है (हि०, सोता है)। हम (फ़ा०)=भी, साथ ही। बेदाँ=जानो।

मीदाँ सुबू घड़ा व सुबूचह् बेदाँ घड़ी।
चूं तीर-ए-सक़्फ़ बाशद दर हिंदवी कड़ी॥१०८॥

मी दाँ (फ़ा०)=तुम जानो। सुबू (फ़ा०)=घड़ा (हिं०, सं० घट)। सुबूचह् (फ़ा०, मटकी)=घड़ी (हिं०, मटकी)। बेदाँ(फ़ा०)=जानो। तीर-ए-सक़्फ़ (फ़ा०, छत की कड़ी)=कड़ी (हिं०)। सक़्फ़ (अर०)=छत की कड़ी। बाशद=हो। दर हिंदवी=हिंदी में।

तगर्ग अस्त हम संगचह् जालह् ओला।
चो ज़ीरक सयाना ओ नादान भोला॥ १०९॥

तगर्ग (फ़ा०, ओला)=संगचह् (फ़ा०, ओला)=जालह् (फ़ा०, ओला)=ओला (हिं०, सं० उपल)। अस्त (फ़ा०)=है। चो=यदि, जब। ज़ीरक

(फ़ा०, सयाना)=सयाना (हिं०, सं० सज्ञान)। नादान (फा०, नासमझ)= भोला (हिं० सीधा, नासमझ)।

तू अख़रोट रा जौज-ए-ख़ुरासाँ बेदाँ।
दिगर नारियल जौज-ए-हिंदी बेख़ाँ॥११०॥

अखरोट (हिं०)=जौज़-ए-ख़ुरासाँ (अख़रोट)। नारियल (हिं०)=जौज-ए-हिंदी (नारियल)। जौज़ (अर०)=फल, अखरोट, नारियल। बेदाँ (फा०) =जान। बेख़ाँ (फ़ा०)=कह।

हिज़ब्र अस्त नाहर पलंग चीता।
चो गुर्ग अस्त भेड़ा ओ करग अस्त गैंडा॥ १११॥

हिज़ब्र (अर०, बाघ)=नाहर (हिं०, बाघ, स० नखरायुध)। पलग (फा०, चीता, तेंदुआ)=चीता (हि०, सं० चित्रक)। गुर्ग (फ़ा०, भेड़िया)=भेढा (हि०, भेड़िया, स० मेषिक)। करग (फा०, गैंडा)=गैंडा (हिं०, स० गंडक)।

दीगर कलावह् कुकड़ी हम रेस्माँ सूत।
इन्साँ शुमार मानुस ओ मी दाँ तू देव भूत॥११२॥

कलावह् (फा०, रील, सूत का लच्छा)=कुकड़ी (हि०, सूत का लच्छा)। रेस्माँ (फा०, डोरी, सूत)=सूत (हिं०)। इन्सान (अर०, मनुष्य)=मानुस (हि०, सं० मनुष्य)। देव (फा०, भूत)=भूत (हिं०)। दीगर (फा०)=दूसरा। हम=भी, और, साथ ही। शुमार (फा०)=गिनो। मीदाँ (फा०)=जानो।

कुफ्ल किलीद जो ताला किल्ली।
गुर्बह् ख़ैतल जो कहिए बिल्ली॥११३॥

कुफ्ल (अर०, ताला)=ताला (हि०, स० तालक)। किलीद (फा०, ताली, चाभी)=किल्ली (हि०, ताली, सं० कील)। गुर्बह् (फा०, बिल्ली)=ख़ैतल (अर०, बिल्ली)=बिल्ली (हिं०)।

शर्म लाज पोशीदन ढाँकना।
कार है काज ख़ास्तन माँगना॥११४॥

शर्म (फा०)=लाज (हि०)। पोशीदन (फा०, ढँकना)=ढाँकना (हि०)। कार (फा० कार्य)=काज (हि०, सं० कार्य)। ख़ास्तन (फा०, माँगना)=माँगना (हिं०)।

कैवाँ जुहल सनीचर आमद।
ऊदैत बफ़ारसी खुर आमद॥११५॥

कैवाँ (फ़ा०, शनि) = ज़ुहल (अर०, शनि) = सनीचर (हिं०, सं० शनिश्चर)। ऊदैत (हिं०, सूर्य, सं० आदित्य) = ख़ुर (फ़ा०, सूर्य)। आमद (फ़ा०) = आया, हुआ। बफ़ारसी (फ़ा०) = फ़ारसी में।

मिर्रीख़ बज़बान-ए-हिंदवी मंगल।
राई बज़बान-ए-फ़ारसी ख़र्दल ॥११६॥

मिर्रीख़ (अर०, मंगल) = मंगल (हिं०)। बज़बान-ए-हिंदवी = हिंदी भाषा में। राई (हिं०) = ख़र्दल (अर०, राई)। बज़बान-ए-फ़ारसी = फ़ारसी भाषा में।

बुध है उतारिद गर तू बेदानी।
ऊ रा तू दबीर-ए-चर्ख़ बेख़ानी ॥११७॥

बुध (हिं०) = उतारिद (अर०, बुध)। गर तू बेदानी (फ़ा०) = अगर तू जाने। ऊ······बेख़ानी = उसे तू (ऊ रा तू) आसमान का लेखक (दबीर-ए-चर्ख़) जान (बेख़ानी)।

बिरजीस मुश्तरी बिरस्पत।
क़ाज़ी-ए-सिपहर दर सआदत ॥११८॥

बिरजीस (अर०, बृहस्पति) = मुश्तरी (अर०, बृहस्पति) = बिरस्पत (हिं०)। क़ाज़ी······सआदत = सौभाग्यप्रद होने से (दर सआदत) आसमान का क़ाज़ी (क़ाज़ी-ए-सिपहर) है।

शुद सुक्र हिंदवी ज़ुहरह् नाम।
ख़ुन्यागर-ए-आस्माँ दिलाराम ॥११९॥

शुद (फ़ा०) = हुआ। सुक्र (हिं०, शुक्र) = ज़ुहरह् (अर०, शुक्र)। ख़ुन्यागर ····दिलाराम = आसमान का प्यारा गायक है। ख़ुन्यागर (फ़ा०) = गायक। दिलाराम (फ़ा०) = प्यारा।

हिंदवी पीपल बुवद फ़िलफ़िल दराज़।
मिर्च फ़िलफ़िल गिर्द रा गोइंद बाज़ ॥१२०॥

पीपल (हिं०, यह पीपल का पेड़ नहीं है, अपितु एक चरपरा फल होता है, पिप्पली भी कहते हैं) = फ़िलफ़िल दराज़ (अर०, लंबी मिर्चें), यह ठीक प्रतीत नहीं है। मिर्च (हिं०) = फ़िलफ़िल गिर्द (अर०, काली गोल मिर्च)। गोइंद (फ़ा०) = फिर कहा।

जौज़बोया जायफल बेशक बेदाँ।
हम करनफुल लौंग रा किकरी बेखाँ॥१२१॥

जौज़बोया (अर०, जायफल)=जायफल (हिं०)। करनफुल (अर०, लौंग, सं० कर्णफुल्ल अरबी में जाकर 'करनफुल' हो गया है। कान का एक गहना)= लौंग (हिं० कर्णफूल, सं० लवंग)=किकरी (हिं०)। बेशक बेदाँ (फ़ा०) निस्संदेह जानो। हम—भी। बेखाँ=तू जान। कीकर के फूल के तरह के कर्णफूल को कीकरी तथा लवंग की तरह के कर्णफूल को लौंग कहते हैं।

हिंदी गोइंद ख़ुर्मा रा खजूर।
दाख रा तू फ़ारसी मी दाँ अंगूर॥१२२॥

खर्मा (फ़ा०, खजूर)=खजूर (हिं०, सं० खर्जुर)। दाख (हिं०, अंगूर, सं० द्राक्षा)=अंगूर (फ़ा०)। गोइंद (फ़ा ०)=कहा। रा (फ़ा०)=को। मी दाँ= जानो।

जंजबीलस्त सिंधी आमद सोंठ नीज़।
छानिये ऐ मीत तू याने बेबीज॥१२३॥

जंजबील (अर०, सोंठ, सं० का शृंगवेर अरबी में जाकर जंजबील हो गया है) =सोंठ (हिं०, सं० शुंठी)। सिंधी आमद=सिंध से आया। नीज़=और। छानिये (हिं०)=बेबीज (फ़ा०, छानिये)।

बीमार मरीज़ दुखिया जान।
बरगीर उठाओ बाज है दान॥१२४॥

बीमार (फ़ा०) मरीज़ (अर०)=दुखिया (हिं०)। बरगीर (फ़ा०, तू उठा, उठाओ)=उठाओ (हिं०)। बाज (फ़ा०, कर, महसूल, आय का चौथा भाग)= दान (हिं०)। 'बाज' तथा 'दान' पर्याय नहीं हैं।

अन्धा नाबीना व बीना देखता।
क़ब्र बाशद ग़ोर गल्ताँ लेटता॥१२५॥

अन्धा (हिं०)=नाबीना (फ़ा०, अंधा)। बीना (फ़ा०, आँखयुक्त)=देखता (हिं०)। क़ब्र (अर०)=ग़ोर (फ़ा०, क़ब्र)। गल्ताँ (फ़ा०, लेटता या लोटता हुआ)=लेटता (हिं०)। बाशद (फ़ा०)=हो।

पैकान ओ ज़िरह बख़्तर अस्त गाँसी।
हम खंदह् क़हक़हह् हस्त हाँसी॥१२६॥

पैकान (फ़ा०, बाण की नोक)=गाँसी (हिं०, बाण का फलक)। बख़्तर

(फा०, कवच) = ज़िरह (फ़ा०, कवच)। हम (फ़ा०) = भी। खंदह् (फ़ा०, हँसी) = क़हक़हह् (फ़ा०, अट्टहास) = हाँसी (हिं०, स० हास्य)। हस्त (फ़ा०) = है।

जिराअ गज मीज़ाँ तराज़ू वज़न तौल।
दम नफ़स दफ़्तर जरीदह् दलो डोल ॥१२७॥

जिराअ (अर०, एक हाथ की नाप) = गज (फ़ा०, दो हाथ की नाप)। मीज़ाँ (अर०) = तराज़ू (फ़ा०)। वजन (अर०) = तौल (हिं०)। दम (फ़ा०, साँस) = नफ़स (अर०, श्वास)। दफ़्तर (फ़ा०, पुस्तक-खड) = जरीदह् (अर०, पुस्तक का खंड)। दलो (अर०, डोल) = डोल (हिं०)।

मशरिक़ जो कहूँ पूरब का नाँव।
मग़रिब दर हिंदवी पछाँव ॥१२८॥

मशरिक (अर०, पूर्व दिशा) = पूरब (हिं०)। मग़रिब (अर०, पश्चिम) = पछाँव (हिं०, पश्चिम)।

है जनूब दक्खिन का ओर।
हम शुमाल उत्तर का छोर ॥१२९॥

जनूब (अर०, दक्षिण) = दक्खिन (हिं०)। शुमाल (अर०, उत्तर) = उत्तर (हिं०)

हम फ़राज़ ओ पेश आगा जानिये।
हम अक़ब पाछे यकीं पहचानिये ॥१३०॥

फ़राज़ (फ़ा०, ऊँचा) = पेश (फा०, सम्मुख, आगे का भाग) = आगा (हिं०)। यहाँ 'फ़राज़' ठीक पर्याय नहीं है। अकब (अर०, पीछा) = पाछे (हिं०, पीछा, सं० पश्च)।

अक़रब बताजी बिच्छू कज़्दुम बुर्जे फ़लक।
बिश्मुर तू सुरोश-ओ-फ़रिश्तह् मलक ॥१३१॥

अकरब (अर०, बिच्छू) = बिच्छू (हिं०, सं० वृश्चिक) = कज़्दुम (फ़ा०, बिच्छू)। यह 'बुर्जे फ़लक' अर्थात् 'आसमान की बुर्ज' अर्थात् राशि है। बिश्मुर (फ़ा०) = तू समझ ले। सुरोश (फ़ा०, देवदूत) = फ़रिश्तह् (फा०, देवदूत) = मलक (अर०, देवदूत)।

हम नमूनह् बानगी अटकल क़ियास।
इत्र खुशबूयो शमीमो बूए बास ॥१३२॥

हम = भी। नमूनह् (फ़ा०, बानगी) = बानगी (हिं०)। अटकल (हिं०, अनुमान) = क़ियास (अर०, अनुमान)। इत्र (अर०, सुगन्ध) = ख़ुशबू (फ़ा०) = शमीम (अर०, सुगन्ध) = बू (फ़ा०, गंध) = बास (हिं०)।

बल्दह् शहरामद नगर कूचह् गली।
ख़ार काँटा फूल गुल गुंचह् कली ॥१३३॥

बल्दह् (अर०, नगर) = शहर(फ़ा०) = नगर (हिं०)। कूचह् (फ़ा०, गली) = गली (हिं०)। ख़ार (फ़ा०, काँटा) = काँटा (हिं०, स० कंटक)। फूल (हिं०) = गुल (फ़ा०, फूल)। गुंचह् (फा०, कली) = कली (हिं०)।

आक़िबत अंजाम आख़िर काम है।
हम पियालह् नामेह साग़र जाम है ॥१३४॥

आक़िबत (अर०, अंत) = अंजाम (फ़ा०, अंत, परिणाम) = आख़िर (अर०, अंत)। हम = भी। पियालह् (फ़ा०, प्याला) = साग़र (फ़ा०, प्याला) = जाम (फ़ा०, प्याला)।

रास्त ओ चप हम यमीनस्त-ओ-यसार।
हिंदवी तू दाहिना बायाँ बिचार ॥१३५॥

रास्त (फ़ा०, दाहिना) = यमीन (अर०, दाहिना) = दाहिना (हिं०, सं० दक्षिण)। चप (फ़ा०, बायाँ) = यसार (अर०, बायाँ) = बायाँ (हिं०, स० वाम)।

कपारस्तो पेशानियो हम जबीं।
चो इक़बाल-ओ-दौलत बुवद लच्छमीं ॥१३६॥

कपार (हिं०, ललाट, भाग्य) = पेशानी (फा०, ललाट, भाग्य) = जबीं(फ़ा०, ललाट, भाग्य)। इक़बाल (अर०, समृद्धि) = दौलत (अर०, संपत्ति) = लच्छमी (हिं०, समृद्धि, सम्पत्ति, सं० लक्ष्मी)।

बेदाँ मर्दुमक पूतली अम्न चैन।
दिगर ऐन हम चश्म हम दीदह् नैन ॥१३७॥

मर्दुमक (फ़ा०, आँख की पुतली) = पूतली (हिं०, पुतली, सं० पुत्तलिका)। अम्न (अर०, चैन) = चैन (हिं०, सं० शयन)। ऐन (अर०, नेत्र) = चश्म (फ़ा०, नेत्र) = दीदह् (फ़ा०, नेत्र) = नैन (हिं०, सं० नयन)। दिगर (फ़ा०) = दूसरा। हम (फ़ा०) = भी।

बुवद होंट लब जानू हम रक्बह् दाँ ।
दिगर नाफ़ रा नामे तूंदी बेख़ाँ ।।१३८।।

होंट (हिं०, होंठ, सं० ओष्ठ) = लब (फ़ा०, होंठ) । जानू (फ़ा०
रक़्बह् (अर०, परिधि, क्षेत्रफल) । यहाँ इसका अर्थ स्पष्ट नहीं है । अरबी का
शब्द 'रक़बत' है जिसका अर्थ गर्दन होता है । शायद वह हो । नाफ़ (फ़ा०, नाभि)
= तूंदी (हिं०, नाभि) । यहाँ 'जानू' तथा 'रक़्बह्' पर्याय नहीं हैं ।

जिगर दाँ कलेजा सुपर्ज़स्त तिल्ली ।
के पहलू बुवद हिंदवी पाँसली ।।१३९।।

जिगर (फ़ा०, यकृत) = कलेजा (हिं०, सं० कालेय) । सुपर्ज़ (फ़ा०, तिल्ली)
= तिल्ली (हिं०) । पहलू (फ़ा०, पँसली) = पाँसली (हिं०) । दाँ = तू जान ।
बुवद = हुआ ।

बैज सेह शब हस्त यक़ीं दाँ जमह् ।
सेज दहुम चार दहुम पाँज दह ।।१४०।।

तीन रात है कहें चाँदनी ।
तेरहीं चौंदहीं पंद्रहीं ।। १४१ ।।

बैज (अर०, चाँदनी) = चाँदनी (हिं०) । सेह (फ़ा०, तीन) = तीन (हिं०)
शब (फ़ा० रात्रि) = रात (हिं०) । सेज दहुम (फ़ा०, तेरहवीं) = तेरहीं (हिं०) ।
चार दहुम (फ़ा०, चौदहवीं) = चौदहीं (हिं०) । पाँच दह (फ़ा०, पंद्रहवीं) = पंद्रहीं
(हिं०) । बैज...पाँज दह = यह निश्चित रूप से जानो कि तीन रातें तेरहवीं,
चौदहवीं, पंद्रहवीं प्रकाशमान हैं ।

हम तरह् साग आमदह् तंबूल पान ।
ज़ाफ़राँ केसर हिना मेंहदी बेदाँ ।। १४२ ।।

तरह् (फ़ा०, साग) = साग (हिं०, सं० शाक) । तंबूल (हिं०, पान, सं०
ताम्बूल) = पान (हिं०, सं० पर्ण) । ज़ाफ़राँ (अर०, केशर) = केसर (हिं०) ।
हिना (फ़ा०, मेंहदी) = मेंहदी (हिं०, सं० मेंधी) । आमदह् = आया । बेदाँ
(फ़ा०) = जान । हम (फ़ा०) = भी ।

अस्लिहह् हथियार बुवद आहर आश्कार ।
रज़्म वग़ा जंग दिगर कारज़ार ।। १४३ ।।

अस्लिहह् (अर०, शस्त्र, 'सिलह' का बहुवचन) = हथियार (हिं०) । आहर
(हिं०) = पानी आदि के संग्रह के लिए बनाया गया स्थान; स्पष्ट । आश्कार

स्पष्ट)। अर्थात् 'आहर' शब्द 'स्पष्ट' का पर्याय है। कदाचित् उस समय यह शब्द बहुत प्रचलित रहा होगा। रज़्म (फ़ा०, युद्ध)=वगा (अर०, युद्ध)=(अर०, युद्ध)=कारज़ार (फ़ा०, युद्ध)। दिगर (फ़ा०)=दूसरा।

जंजबीलो सिंघी आमद सोंठ नाम।
हम करनफ़ुल लौंग आमद रंग फ़ाम॥ १४४॥

जंजबील (अर०, सोंठ)=सोंठ (हिं०)। दे० पीछे १२३। करनफ़ुल (अर० लौंग)=लौंग (हिं०)। दे० पीछे १२१। रंग (हिं०)=फ़ाम (फ़ा०, रंग)।

तूत फ़रसादस्त खीरा बादरंग।
छींका आवंग हिंदवी ढील है दिरंग॥ १४५॥

तूत (फ़ा०, शहतूत का पेड़)=फ़रसाद (फ़ा०, शहतूत)। खीरा (हिं०, सं० क्षीरक)=बादरंग (फ़ा०, खीरा)। छींका (हिं०, सं० शिक्या)=आवंग (फा०, अलगनी, छींका)। ढील (हिं०, स० शिथिल)=दिरंग (फा०, ढील, आलस्य)।

हर्द गोई जर्दचोबामद सख़ुन।
धनिया कशनीज़स्त मजलिस अंजुमन॥ १४६॥

हर्द (हिं०, हल्दी, सं० हरिद्रा)=जर्दचोब (फ़ा०, हल्दी)। धनिया (हिं०, स० धान्यक)=कशनीज़ (फ़ा०, धनिया)। मजलिस (अर०, सभा)=अंजुमन (फा०, सभा)।

दाँ हलैलह् हड़ व हम अंगुजह् हींग।
आज हाथीदाँत बाशद शाख़ सींग॥ १४७॥

हलैलह् (अर०, हड़, हर्रे)=हड़ (हिं०, सं० हरीतकी)। अंगुजह् (फ़ा०, हींग, सं० 'हिंगुज' ही फा० में 'अंगुजह्' हो गया है।)=हींग (हिं०, सं० हिंगु)। आज (अर०, हाथीदाँत)=हाथीदाँत (हिं०)। शाख़ (फ़ा०, सींग)=सींग (हिं०, सं० शृंग)।

नाम-ए-कँवल रा बेदाँ नीलोफ़रस्त।
कौकबह् जैशो हशम दा लश्करस्त॥ १४८॥

कँवल (हिं०, कमल)=नीलोफ़र (फ़ा०, नील कमल)। कौकबह् (अर०, भीड़)=जैश (अर०, सेना)=हशम (अर०, नौकर-चाकर)=लश्कर (फ़ा०, सेना, भीड़)।

कश्तियो ज़ौरक तू बेदाँ नाव है।
ज़ख़्मो जराहत तू बेदाँ घाव है॥ १४९॥

कश्ती (फ़ा०, नाव)=ज़ौरक (अर०, छोटी नाव)=नाव (हिं०)। ज़ख़्म (फ़ा०, घाव)=जराहत (अर०, घाव, चीर-फाड़)=घाव (हिं०, सं० घात)। बेदाँ=जानो।

जीबको सीमाब पारा जानिये।
हिंदवी गूगिर्द गंधक मानिये॥ १५०॥

जीबक (अर०, पारा)=सीमाब (फ़ा०, पारा)=पारा (हिं०, सं० पारद) गूगिर्द (फ़ा०, गंधक)=गंधक (हिं०)।

ज़ारी बुका हिंदवी है रोज।
हम पै असर सुराग़ है खोज॥ १५१॥

ज़ारी (फा०, विलाप)=बुका (अर०, रोना)=रोज (हिं०, रोना, सं० रोदन)। असर (अर०, चिह्न)=सुराग़ (तुर्की, चिह्न, खोज)=खोज (हिं०, सं० खुज्)

रंज चो तश्वीश बुवद दर्द पीर।
कौस कमानस्त दिगर सह्म तीर॥ १५२॥

रंज (फ़ा०, दुःख)=तश्वीश (अर०, चिन्ता, परेशानी)=दर्द (फ़ा०, कष्ट)=पीर (हिं०, पीड़ा)। कौस (अर०, धनुष)=कमान (फ़ा०, धनुष)। सह्म (अर०, तीर)=तीर (फ़ा०)।

रस्मो आईन बिपनो अज़ मन रीत है।
नुस्रतो हम फ़तह नामे जीत है॥ १५३॥

रस्म (अर०, नियम, विधान)=आईन (फ़ा०, नियम, विधान, क़ानून)=रीत (हिं०, विधि, ढंग)। नुस्रत (अर०, विजय)=फ़तह (अर०, जीत)=जीत (हिं०)। *बिपनो अज़ मन (फ़ा०)=मुझसे पूछो। हम (फ़ा०)=भी।*

फ़ारसी सीमुर्ग़ो उन्क़ा हस्त तदर्वह् कब्क हंस।
हम चो यरक़ानस्त काँवरी है ज़रीर ओ नस्ल बंस॥ १५४॥

सीमुर्ग़ (फ़ा०, एक पौराणिक पक्षी)=उन्क़ा (अर०, एक पौराणिक पक्षी)। तदर्वह् (फ़ा०, चकोर)=कब्क (फ़ा०, चकोर)=हंस (हिं०)। 'हंस' ठीक समानार्थी नहीं है। हम चो=और साथ ही। यरक़ान (अर०, पीलिया)=काँवरी (हिं०, पीलिया, कामली, सं० कमल)=ज़रीर (फ़ा०, पीलिया)। नस्ल (अर०, वंस)=बंस (हिं०)।

बुलबुलामद अंदलीबो चिड़िया रा गुंजिश्क दाँ।
हिंदवी टीरी मलख़ जलकुकड़ मुर्ग़ाबी बेख़्वाँ॥ १५५॥

बुलबुल (फ़ा०)=अंदलीब (अर०, बुलबुल)। चिड़िया (हिं०)=गुंजिश्क (फ़ा०, चिड़िया, गौरेया)। टीरी (हि०, टिड्डी)=मलख़ (फ़ा०, टिड्डी)। जलकुकड़ (हिं०, सं० जलकुक्कुट)=मुर्ग़ाबी (फ़ा०, जलकुक्कुट)। बेख़्वाँ (फ़ा०)= पढ़, कह, समझ।

शबचरा रख़शो तगावर ख़िंग तौसन है तुरंग।
बब्र जैगम शेर नाहर यूज़ चीता है पलंग॥ १५६॥

शबचरा (फ़ा०, काला घोड़ा)=रख़्श (फ़ा०, घोड़ा)=तगावर (फ़ा०, तेज़ घोड़ा)=ख़िंग (फ़ा०, सफ़ेद घोड़ा)=तौसन (फ़ा०, घोड़ा)=तुरंग (हिं०, घोड़ा)। बब्र (अर०, शेर, बबर)=जैगम (अर०, शेर, बाघ)=शेर (फ़ा०)= नाहर (हिं०, शेर, सं० नखरायुध)। यूज़ (फ़ा०, चीता)=चीता (हिं०, सं० चित्रक)=पलंग (फ़ा०, भेड़िया)। 'पलंग' ठीक समानार्थी नहीं है।

हिरन आहू जानिये आहू-बचा कहिये ग़ज़ाल।
बूज़िनह् बंदर खिर्स रीछ आमद गीदड़ शिगाल॥ १५७॥

हिरन (हिं०, सं० हरिण)=आहू (फा०, मृग)। आहूबचा (फा० मृगशावक, हिरनौटा)=ग़ज़ाल (अर० मृगशावक)। बूज़िनह् (फा०, बन्दर)=बन्दर (हिं०, सं०, वननर)। ख़िर्स (फा०, रीछ)=रीछ (हिं०, सं० ऋक्ष)। गीदड़ (हिं०, सं० गृध्र)=शिगाल (फ़ा०, गीदड़, तुलनीय सं० शृगाल)।

मेश भेड़ी कूच मेंढा हम ससा ख़रगोश है।
अस्तर आमद खच्चरो भैंसा बेदाँ जामूश है॥ १५८॥

मेश (फ़ा०, भेड़, तुलनीय सं० मेष)=भेडी (हिं०, सं० मेष)।=कूच (अर०, भेड़,)=मेंढ़ा (हि०, भेड़ा)। ससा (हिं०, ख़रगोश, सं० शशक)=ख़रगोश (फ़ा०, 'ख़र' अर्थात् गदहे जैसे 'गोश' अर्थात् कान वाला, खरहा)। अस्तर (फ़ा० ख़च्चर, तुलनीय स० अश्वतर)=ख़च्चर (तुर्की)। भैंसा (हिं०)=जामूश (अर०, भैंसा)।

माह आमद सोम वेशह् जंगलस्त।
हिंदवी मिर्रीख़ रा गो मंगलस्त॥ १५९॥

माह (फ़ा०, चाँद)=सोम (हिं०, चाँद)। बेशह् (फ़ा०, जंगल)=जंगल (हिं०)। मिर्रीख़ (अर०, मंगल)=मंगल (हिं०)। रा गो (फ़ा०) को कह।

हम सुक्र के ज़ुहरह् नाम दारद।
असबाब-ए-तरब मुदाम दारद ॥ १६० ॥

सुक्र (हिं०, शुक्र) = ज़ुहरह् (अर०, शुक्र)। दारद (फ़ा०) = है। असबाब-ए-तरब = आनंद के साधन। मुदाम दारद = स्थायी रूप से रहें।

महबूबो हबीब है पियारा।
हम अंजुम औ अख़्तरस्त तारा ॥ १६१ ॥

महबूब (अर०, प्यारा) = हबीब (अर०, प्यारा) = पियारा (हिं०, सं० प्रिय)। अंजुम (अर०, तारा) = अख़्तर (फ़ा०, तारा) = तारा (हिं०, सं० तारक)।

है चंद्रगहन ख़ुसूफ़ मी दाँ।
हम सूरजगहन कुसूफ़ मी ख़ाँ ॥ १६२ ॥

चंद्रगहन (हिं०, चद्रगहण) = ख़ुसूफ़ (अर०, चन्द्रग्रहण)। मी दाँ = तुम जानो। सूरजगहन (हिं०) = कुसूफ़ (अर०, सूर्यग्रहण)। मी ख़ाँ = तुम समझो।

साअत घड़ी पहर के पास।
शह्‌र आमद माय हिंदवी मास ॥ १६३ ॥

साअत (अर०, ढाई घड़ी का समय, घड़ी) = घड़ी (हिं०, समय, घड़ी)। पहर (हिं०, सं० प्रहर) = पास (फ़ा०, पहर)। शह्‌र (अर०, मास) = माह (फ़ा०, मास) = मास (हिं०)।

दस्त बिरिंजन कंगन कहिये पायल है ख़लख़ाल।
पायबिरिंजन चूड़ा कहिये ख़ूबी हुस्नो जमाल ॥ १६४ ॥

दस्त बिरिंजन (फ़ा०, हाथ का कंगन) = कंगन (हिं०, सं० कंकण)। पायल (हिं०) = खलख़ाल (अर०, पायल)। पायबिरिंजन (फ़ा०, पाँव का कड़ा) = चूड़ा (हिं०)। ये दोनों ठीक पर्याय नहीं हैं। ख़ूबी (फ़ा०, सौन्दर्य) = हुस्न (अर०, सौन्दर्य) = जमाल (अर०, सौन्दर्य)।

गुलूबन्द को तिलड़ी कहिये और हमाइल हार।
बाज़ूबन्द भुजाली कहिये जो पैरायह् सिंगार ॥ १६५ ॥

गुलूबंद (फ़ा०, गले का आभूषण) = तिलड़ी (हिं०, गले का तीन लड़ियों [illegible]न आभूषण) = हमाइल (अर०, गले का हार; भोजपुरी में विशेष प्रकार के गले के आ[illegible]षण को आज भी 'हुमेल' कहते हैं।) = हार (हिं०)। बाज़ूबंद (फ़ा०, बाँह में [illegible]हना जाने वाला एक आभूषण) = भुजाली (हिं०, भुजा में पहना जाने वाला

एक आभूषण। अब एक प्रकार के हथियार को भी भुजाली कहते हैं)। पैरायह् (फ़ा०, शृंगार)=सिंगार (हिं०)।

गोशवारह् दर हिंदवी बरनूं करनफूल दर कान।
गौहर लूलू मोती कहिये मूंगा है मर्जान ॥१६६॥

गोशवारह् (फा०, कान का एक आभूषण, बुंदा)=करनफूल (हिं०, कर्णफूल)। दर (फ़ा०) कान=कान में। गौहर (फा०, मोती)=लूलू (अर०, मोती) =मोती (हिं०, सं० मौक्तिक)। मूंगा (हिं०, सं० मुद्ग)=मर्जान (अर०, मूंगा)।

बदली मेग चो अब्र सहाब।
अहिला सैल चो कीच ख़लाब ॥१६७॥

बदली (हिं०, सं० वारिद)=मेग (फा०, बादल, तुलनीय सं० मेघ)=अब्र (फ़ा०, बादल)=सहाब (अर०, बादल)। अहिला (हिं०, बाढ़, सं० अभिलय ?) =सैल (अर०, बाढ़,=सैलाब)। कीच (हिं०, कीचड़, सं० कच्छ ?) ख़लाब अर०, कीचड़)। चो (फ़ा०)=जो।

अंगुश्तरी अँगूठी कहिये ख़ातिम जान नगीनह्।
है जंगूलह् घुंगरू झुमका बिछुवा मालख़ज़ीनह् ॥१६८॥

अंगुश्तरी (फ़ा०, अंगूठी)=अँगूठी (हिं०, अंगुष्ठिका)=ख़ातिम (अर० अंगूठी)। नगीना (फ़ा०)=अंगूठी में जड़ा जाने वाला नग। जंगूलह् (फ़ा०, घुंघरू)=घुंघरू (हिं०)। झुमका (हिं०)=कान का एक गहना। बिछुवा (हिं०)=पैर के अंगूठे का एक गहना। माल (अर०, धन)=ख़ज़ीनह् (अर०, निधि, धन)। 'नगीना' ठीक पर्याय नहीं है। 'झुमका' तथा 'बिछुवा' को कोश का अंग न बनाकर उन्हें केवल यों ही दे दिया गया है।

शबचिराग़ याक़ूत रतन हीरा है अलमास।
और जुमुर्रुद पन्ना कहिये क़िसबत जान लिबास ॥१६९॥

शबचिराग़ (फा०, एक प्रकार का लाल जो रात में चमकता है)=याक़ूत (फ़ा०, लाल)=रतन (हिं०, रत्न, लाल)। हीरा (हिं०, सं० हीरक)=अलमास (फ़ा०, हीरा)। जुमुर्रुद (फ़ा०, पन्ना)=पन्ना (हिं०)। क़िसबत (अर०, पोशाक)=लिबास (अर०, पोशाक)।

तिला कुंदन सोना कहिये ज़ेवर अबरन गहना।
नाम जड़ाऊ मुकल्लल बाशद और मुरस्सह् कहना ॥१७०॥

तिला (फ़ा०, सोना)=कुदन (हिं०, अ छा सोना, सं० कुद)=सोना (हिं०, स्वर्ण)। ज़ेवर (फा०, आभूषण)=अभरन (हिं०, स० आभरण)=गहना (हिं०)। जड़ाऊ (हिं०)=मुरस्सह् (अर०, जड़ाऊ)। मुकल्लल (अर०, चमकता हुआ)। 'मुकल्लल' 'जड़ाऊ' तथा 'मुरस्सह्' का सटीक पर्याय नहीं है। छंद पूर्ति के लिए ही कदाचित् प्रयुक्त हुआ है।

निया ख़ाल हिंदवी मामूं जान ।
औदिर अम्मू चचा बख़ान ।।१७१

निया (फ़ा०, मामा, नाना)=ख़ाल (अर०, मामा)=मामूं (हिं०)। औदिर (फ़ा०, चाचा, ताऊ)=अम्मू (अर०, चाचा, ताऊ)=चचा (हिं०, पूर्वी क्षेत्र में चचा, ताऊ; पश्चिमी क्षेत्र में चचा, चाचा; सं० तात)।

बिरादरज़ादह् जान भतीजा।
ख़ाहरज़ादह् जो कहिये भांजा ।।१७२।।

बिरादरज़ादह् (फ़ा०, भतीजा)=भतीजा (हि०, सं० भ्रातृजात)। ख़ाहर-ज़ादह् (फ़ा०, भांजा)=भांजा (हिं०, सं० भागिनेय)।

खलफ़ सपूत मुख़ालिफ़ वेरी।
कुर्सी तख़्त ज़ूलान है बेड़ी ।।१७३।।

ख़लफ़ (अर०, सपूत)=सपूत (हिं०, सं० सुपुत्र)। मुख़ालिफ (अर०, शत्रु)=बैरी (हिं०)। कुर्सी (अर०)=तख़्त (फ़ा०)। मूलतः कुर्सी तथा तख़्त बैठने-सोने की अनेक चीज़ों के नाम हैं अब इनके अर्थ काफ़ी सीमित हो गए हैं। ज़ूलान (फ़ा०, बेड़ी)=बेड़ी (हिं०, सं० बटी)।

राद गरज कहिये घनघोर।
बर्क़ बीजली मौज हिलोर ।।१७४।।

राद (अर०, बिजली की कड़क)=घनघोर गरज (हिं०)। बर्क़ (अर०, बिजली)=बीजली (हिं०, सं० विद्युत)। मौज (अर०, लहर)=हिलोर (हिं०, सं० हिल्लोल)।

बिस्तर सेज दोलीचा क़ालीं।
मर्ग़ज़ार कहिए हरियाली ।।१७५।।

बिस्तर (फ़ा०)=सेज (हिं०, सं० शय्या)। दोलीचा (तुर्की, ग़लीचा)=कालीन (तुर्की, ऊनी ग़लीचा)। मर्ग़ज़ार (फ़ा०, हरा मैदान)=हरियाली (हिं०)।

गुलिस्तानो हम बोस्ताँ बाग़ बाड़ी।
चमन क़तअ बाशद ख़ियाबाँ कियारी ॥१७६॥

गुलिस्तान (फा०, उद्यान) = बोस्ताँ (फा० उद्यान) = बाग़ (फा०, उद्यान) = बाड़ी (हिं०, सं० वाटिका) = चमन (फा०, उद्यान)। क़तअ (अर०, खंड) = ख़ियाबाँ (फ़ा०, क्यारी) = कियारी (हिं०, सं० केदारिका)।

कुल्बह् हल है जराअत खेती।
मर्ज़ो बूम है कहिये धरती ॥१७७॥

कुल्बह् (फ़ा०, हल) = हल (हिं०)। जराअत (अर०, खेती) = खेती (हिं०, सं० क्षेत्र = हिं० खेत)। मर्ज (फा०, कृषिभूमि) = बूम (फा० बंजर भूमि, भूमि) = धरती (हिं०, सं० धरित्री)।

ख़र्दल राई अरजन चेना।
दाद सितद है देना लेना ॥१७८॥

खर्दल (अर०, राई) = राई (हिं०, स० राजिका)। अरजन (हिं०, चेन, साँवा की जाति का एक अन्न) = चेना (हिं०, चेन, प्रियंगु)। दाद (फ़ा०, दिया हुआ) = देना (हिं०, सं० दान)। सितद (फा०, लेना) = लेना (हिं०, सं० लभन)।

ख़ुसुरपूरह् साला है जान।
ख़ुसुर ससुर और हान ज़ियान ॥१७९॥

ख़ुसुरपूरह् (फा०, ससुर का पुत्र अर्थात् साला) = साला (हिं०, सं० श्यालक)। ख़ुसुर (फ़ा०, ससुर) = ससुर (हिं०, स० श्वसुर)। हान (हिं०, सं० हानि) = ज़ियान (फ़ा०, हानि)।

चर्ख़ह् रहटा ग़ल्लह् रा पागलह् दाँ।
राँड बेवह् जाल रा बूढ़ी बेदाँ ॥१८०॥

चर्ख़ह् (फ़ा०, चर्ख़ा) = रहटा (हिं०, चर्ख़ा, सं० अरघट्ट)। (देखिए १०२)। ग़ल्लह् (अर०, अन्न) = पागलह् (फ़ा०, अन्न)। राँड (हिं०, विधवा, सं० रंड) = बेवह् (फ़ा०, विधवा)। जाल (फ़ा०, बूढ़ी) = बूढ़ी (हिं०, सं० वृद्ध)। रा = को। दाँ = जानो। बेदाँ = जान।

नीज पेचक माम पूनी जानिये।
हम कलाबह् नाम आँटी मानिये ॥१८१॥

नीज़ (फ़ा०)=और भी। पेचक (फ़ा०, पूनी)=पूनी (हिं०, सं० पिजिका)। कलावह् (फ़ा०, सूत की लच्छी)=आँटी (हिं०, सूत की लच्छी)।

दूक तकला सूत बाशद रेस्माँ।
जान रेसीदन बहिंदी कातना ॥१८२॥

दूक (फ़ा०, तकला)=तकला (हिं०, सं० तर्कु)। सूत (हिं०)=रेस्माँ (फ़ा०, डोरी, सूत)। रेसीदन (फ़ा०, कातना)=कातना (हिं०, सं० कर्तन)।

मूसल अस्त मारूफ़ हावन ओखली।
चोबदस्तह् मूसल अस्त ख़ोशह् फली ॥१८३॥

मूसल (हिं०, सं० मुशल)=चोबदस्तह् (फ़ा० मूसल)। मारूफ़ (अर०)=प्रसिद्ध। हावन (फ़ा०, ओखली)=ओखली (हिं०, सं० उलूखल)। ख़ोशह् (फ़ा०, फली)=फली (हिं०, सं० फलिका)।

वाह् कनीज़क कहिये चेरी।
दाम जाल ज़ूलान है बेड़ी ॥१८४॥

वाह् (फ़ा०,)=धन्य। क़नीज़क (फ़ा०, छोटी दासी)=चेरी (हिं०, दासी)। दाम (फ़ा०, जाल, फंदा)=जाल (हिं०,)। ज़ूलान (फ़ा०, बेड़ी)=बेड़ी (हिं०, सं० बटी)।

शर्म हया दर हिंदवी लाज।
हासिल कहिये बाज ख़राज ॥१८५॥

शर्म (फ़ा०)=हया (अर०, लज्जा)=लाज (हिं०, सं० लज्जा)। हासिल (अर०, राजस्व)=बाज़ (फ़ा०, राजस्व)=ख़राज (अर०, लगान, राजस्व)।

ताले बख़्त जो कहिये भाग।
लहन सुरूदो तरन्नुम राग ॥१८६॥

ताले (अर०, भाग्य)=बख़्त (फ़ा०, भाग्य)=भाग (हिं०, सं० भाग्य)। लहन (अर०, राग, तराना)=सुरूद (फ़ा०, तराना)=तरन्नुम (फ़ा०, राग, गीत)=राग (हिं०)।

तिफ़्ले कोदक ख़ुर्दो बाला मुंडा रा
बैज़ह् बज़बान-ए-हिंदवी दाँ अंडा रा ॥ १८७ ॥

तिफ़्ल (अर०, बच्चा)=कोदक (फ़ा०, बालक)=ख़ुर्द (फ़ा०, शिशु, छोटा)=मुंडा (पंजाबी, लड़का)। बैज़ह् (फ़ा०, अंडा)=अंडा (हिं०, सं० अंड) रा=को। बज़बान-ए-हिंदवी दाँ (फ़ा०)=हिंदी भाषा में जानो।

मुज़दह् नवेद खुशखबर बुशारत।
चश्मक ईमा सैन इशारत ॥ १८८ ॥

मुज़दह् (फ़ा०, खुशख़बरी) = नवेद (फ़ा०, शुभ समाचार) = खुशखबर (फ़ा०) = बुशारत (अर०, शुभ समाचार)। चश्मक (फ़ा०, आँख का इशारा) = ईमा (अर०, इशारा) = इशारह् (अर०, इशारा) = सैन (हिं०, सं० संज्ञपन)।

दस्तक हिंदवी ताली जान।
अंगुश्तक चुटकी पहचान ॥ १८९ ॥

दस्तक (फ़ा० ताली) = ताली (हिं०)। अंगुश्तक (फ़ा०, चुटकी) = चुटकी (हिं०)।

हुकहुक हिचकी फ़ाजह् जमाई।
खमयाजह् कहिये अँगडाई ॥ १९० ॥

हुकहुक (फ़ा०, हिचकी) = हिचकी (हिं०)। फ़ाजह् (फ़ा०, अंगड़ाई, जम्हाई) = जम्हाई (हिं०, जम्हाई)। खमयाजह् (फ़ा०, अँगड़ाई, जम्हाई) = अँगड़ाई (हिं०)।

अत्सह् छींक आरोग़ डकार।
महक कसोटी जान अयार ॥ १९१ ॥

अत्सह् (अर०, छीक) = छींक (हिं०, सं० छिक्का)। आरोग़ (फ़ा० डकार) = डकार (हिं०)। महक (अर० कसोटी) = कसोटी (हिं०) = अयार (अर०, परख, कसोटी पर कसना, कसोटी)।

आखिर अंजाम है नीज़ तमाम।
अंत बात है ख़त्म कलाम ॥ १९२ ॥

आखिर (अर०, अंत) = अंजाम (फ़ा०, परिणाम) = तमाम (अर०, समाप्त)। नीज़ (फ़ा०) और, भी। अंत बात (हिं०) = ख़त्म क़लाम (अर०, अंतिम बात)।

मौलवी साहब सरन पनाह।
गदा भिखारी खुसरो शाह ॥ १९३ ॥

मौलवी (अर०, इस्लाम धर्म का आचार्य) = साहब (अर०, रखवाला)। सरन (हिं०, सं० शरण) = पनाह (फ़ा०, शरण)। गदा (फ़ा० भिक्षुक) = भिखारी (हिं०, सं० भिक्षा > भीख + आरी)। खुसरो (फ़ा०, बादशाह) = शाह (फ़ा०, मालिक, बादशाह)।

ख़ालिकबारी भई तमाम।
दुहूँ जग रहिया खुसरो नाम ॥ १९४ ॥

(२) खालिक़बारी के शब्दों की 'अर्थ तथा स्रोत-सहित' अनुक्रमणी

अरबी शब्द

अंजुम (अर०)—तारा १६१
अंदलीब (अर०)—बुलबुल १५५
अक़ब (अर०)—पीछा १३०
अक़रब (अर०)—बिच्छू १३१
अक़ीमह् (अर०)—बाँझ स्त्री ९८
अक़्द (अर०)—गाँठ ७५
अज़्ब (अर०)—मीठा ६०
अत्सह् (अर०)—छींक १९१
अफ़सर (अर०)—मुकुट ३४
अम्न (अर०)—चैन १३७
अम्मू (अर०)—चाचा, ताऊ १७१
अयार (अर०)—परख, कसौटी १९१
अर्ज़ (अर०)—पृथ्वी २१
अलहम्द (अर०)—(क़ुरान का एक सूरा) ईश्वर प्रशंसनीय है। ३९
अलात (अर०)—निहाई १०५
अल्लाह (अर०)—ख़ुदा ३
असर (अर०)—चिह्न १५१
अस्र (अर०)—चौथा पहर, शाम ९८
अस्लिहह् (अर०)—शस्त्र १४३
आक़िबत (अर०)—अंत १३४
आख़िर (अर०)—अंत १३४, १९२
आज (अर०)—हाथी दाँत १४७

आतिफ़त (अर०)—दया ३७
आदत (अर०) प्रकृति ३७
आलिम (अर०)—विद्वान् ४२
आशिक़ (अर०)—प्रेमी ४१
इंसान (अर०)—मनुष्य ११२
इक़बाल (अर०)—समृद्धि १३६
इत्र (अर०)—सुगन्ध १३२
इन्नीन (अर०)—नपुंसक ५६
इब्नुललैल (अर०)—रात का बेटा, अर्थात् चाँद ८८
इमा (अर०)—इशारा १८८
इशारह् (अर०)—इशारा १८८
इश्क़ (अर०)—मुहब्बत ४१
इस्म (अर०)—नाम ३
उज़्र (अर०)—आपत्ति ४७
उतारिद (अर०)—बुध (ग्रह) ११७
उन्क़ा (अर०)—एक पौराणिक पक्षी १५४
उम्म (अर०)—माँ ८०
उम्मुल किताब (अर०)—किताबों की माँ, अर्थात् क़ुरान ३९
उम्मुल क़ुरा (अर०)—पृथ्वी, अर्थात् जगहों की माँ, यानी मक्का ३९
ऐन। (अर०)—नेत्र १३७

क़ंद (अर०)—शक्कर ३६

क़तअ (अर०)—खंड, क्यारी १७६

क़दम (अर०)—पाँव ७१

क़ब्र (अर०)—जिसमें मुर्दे दफ़नाते हैं। १२५

करनफ़ुल (अर०)—लौंग (कान की)। सं० का कर्णफुल्ल अरबी में जाकर 'करनफ़ुल' हो गया है। १२१, १४४

क़रियह् (अर०)—गाँव, देहात ३९

क़र्ज़ (अर०)—ऋण ९०

क़लम (अर०)—लेखनी ६२

क़सीर (अर०)—बहुत ७७

क़स्र (अर०)—महल ५९

क़हत (अर०)— अकाल ८

क़ासिद (अर०)—दूत, पत्रवाहक १०६

किज़्ब (अर०)—झूठ ६९

क़ियास (अर०)—अनुमान १३२

क़िर्तास (अर०)—काग़ज़ ६२

क़िसवत (अर०)—पोशाक १६९

क़ीमत (अर०)—मूल्य ४६

क़ुफ़्ल (अर०)—ताला ११३

कुर्सी (अर०)—बैठने की एक प्रसिद्ध चीज़ १७३

क़ुव्वत (अर० क़ूवत)—ताक़त ७

कुसूफ़ (अर०)—सूर्यग्रहण १६२

क़ूच (अर०)—भेड़ १५८

कोशक (अर०)—महल ५९

कौकबह् (अर०)—भीड़ १४८

क़ौल (अर०)—वचन ४६

कौस (अर०)—धनुष १५२

ख़ंजर (अर०)—कटार, तलवार १९

ख़ज़ीनह् (अर०)—निधि, धन १६८

ख़तर (अर०)—भय ७०

ख़त्म क़लाम(अर०)—अंतिम बात ११२

ख़द (अर०) गाल ५१

ख़राज (अर०)—लगान, राजस्व १८५

ख़र्दल (अर०)—राई ११६,१७८

ख़लख़ाल (अर०)—पायल १६४

ख़लफ़ (अर०)—सपूत १७३

ख़लाब (अर०)—कीचड़ १६७

ख़ाल¹(अर०)—तिल, शरीरपर काला दाग़ २०

ख़ाल² (अर०)—मामा १७१

ख़ातिम (अर०)—अँगूठी १६८

ख़ातिर (अर०)—हृदय ३८

ख़ालिक़ (अर०)—उत्पत्ति करने वाला १

ख़ियार (अर०)—खीरा ७३

ख़ुब्ज़(अर०)—रोटी ९४

ख़ुसूफ़ (अर०)—चन्द्रग्रहण १६२

ख़ँतल (अर०)—बिल्ली ११३

ख़ौफ़ (अर०)--भय ७०

ग़ज़ब (अर०)—क्रोध ६५

ग़ज़ाल (अर०)—मृगशावक १५७

ग़ल्लह् (अर०)--अन्न १८०

ग़ार (अर०)—गड्ढा ४८

ज़ंजबील (अर०)—सोंठ १२३, १४४

ज़ंब (अर०)—पाप ६५

जद्द (अर०)—दादा ७२

जनूब (अर०)—दक्षिण १२९

जमाल (अर०)—सौन्दर्य १६४

ज़राअत (अर०)—खेती १७७

जराहत (अर०)—घाव, चीर-फाड़ १४९

जरीदह् (अर०)—पुस्तक का खंड १२७

ज़ाफ़रां (अर०)—केशर १४२

जामूस (अर०)—भैंसा १५८
ज़ाहिर (अर०)—प्रकट ४३
ज़िफ़्दे (अर०)—मेंढक ६६
ज़िराअ (अर०)—एक हाथ की नाप १२७
ज़ीबक़ (अर०)— पारा १५०
ज़ुबाब (अर०)—मक्खी ८१
ज़ुहर (अर०)—दोपहर ६८
ज़ुहरह् (अर०)—शुक्र ११६, १६०
ज़ुहल (अर०)—शनि ११५
ज़ैग़म (अर०)—शेर, बाघ १५६
ज़ैफ़ (अर०)—अतिथि ३८
ज़ैश (अर०)—सेना १४८
जौज-ए-ख़ुरासाँ (अर०)—अखरोट ११०
जौज-ए-हिंदी (अर०)—नारियल ११०
जौज़बोया (अर०)—जायफल १२१
ज़ौरक़ (अर०)—छोटी नाव १४६
तआम (अर०)—भोजन ४२
तमाम (अर०)—समाप्त १६२
तबीब (अर०)—वैद्य ८५
तमन्ना (अर०)—कामना ७१
तरीक़ (अर०)—मार्ग ४
तश्वीश (अर०)—चिन्ता, परेशानी १५२
ताऊस (अर०)—मोर ३३
ताम (अर०)—स्वाद ४२
ताले (अर०)—भाग्य १८६
ताहिर (अर०)—पवित्र ४३
तिफ़्ल (अर०)—बच्चा १८७
दलो (अर०)—डोल १२७
दहर (अर०)—संसार ३५
दीक (अर०)—मुर्ग़ा ५८
दुख़ाँ (अर०)—धुआँ ५४
दुनिया (अर०)—संसार ३५
दुर्राज (अर०)—तीतर ३३
देजूर (अर०)—अँधेरी रात ८६
दौलत (अर०)—संपत्ति १३६
नज़र (अर०)—दृष्टि ८४
नफ़स (अर०)—श्वास १२७
नय्यर (अर०)—सूर्य ५
नस्र (अर०)—गिद्ध ६५
नस्ल (अर०)—बंश १५४
नहार (अर०)—दिन ७६
नुसरत (अर०)—विजय १५३
फ़ख़िज़ (अर०)—जंघा ३०
फ़ज्र (अर०)—प्रात:काल ६८
फ़तह (अर०)—जीत १५३
फ़तील (अर०)—दीपक की बत्ती ७२
फ़रस (अर०)—घोड़ा ७४
फ़लक़ (अर०)—आकाश २६
फ़ह्ल (अर०)—नर ५६
फ़ातिहह् (अर०)—कुरान की इसी नाम की पहली सूरत ३६
फ़ानीज (अर०)—शक्कर ३६
फ़ित्तीस (अर०)—बड़ा हथौड़ा १०५
फ़िलफ़िल गिर्द (अर०)—काली गोल मिर्च १२०
फ़िलफ़िल दराज़ (अर०)—लंबी मिर्च १२०
फ़ेल (अर०)—कार्य ६०
बदा (अर०)—प्रारंभ; प्रारंभकर्त्ता, ईश्वर, करतार १
बब्र (अर०)—शेर, बबर १५६
बर्क़ (अर०)—बिजली १७४
बला (अर०)—प्रेतबाधा ६१
बलदह् (अर०)—नगर १३३
बहज (अर०)—खुशी, आनन्द ६७

बहर (अर०)—समुद्र ४८
बारी (अर०)—सृष्टि करने वाला १
बुअद (अर०)—दूर, दूरी ७८
बुका (अर०)—रोना १५१
बुशारत (अर०)—शुभ समाचार १८८
बैज़ (अर०)—चाँदनी १४०
बैत (अर०)—घर ७०
मक्का (अर०)—स्थान विशेष ३६
मग़रिब (अर०)—पश्चिम १२८
मजलिस (अर०)—सभा १४६
मरीज़ (अर०)—बीमार १२४
मर्जान (अर०)—मूंगा १६६
मलक (अर०)—देवदूत १३१
मशरिक (अर०)—पूर्व (दिशा) १२८
महक (अर०)—कसौटी १६१
महबूब (अर०)—प्यारा १६१
महलूज (अर०)—रूई ६४
मामूर (अर०)—आबाद ८७
माल (अर०)—धन १६८
मिजल (अर०)—हँसिया ५२
मिर्रीख़ (अर०)—मंगल ११६, १५६
मिलह (अर०)—नमक ७६
मिश्त (अर०)—कंघी ६२
मीज़ाँ (अर०)—तराज़ू १२७
मुकल्लल (अर०)—चमकता हुआ १७०
मुख़ालिफ़ (अर०)—शत्रु १७३
मुरस्सह् (अर०)—जडाऊ १७०
मुश्तरी (अर०)—बृहस्पति ११८
मुहब्बत (अर०)—प्रेम ४१
मुहासिन (अर०)—दाढ़ी-मूंछ ५०
मौज (अर०)—लहर १७४
मौलवी (अर०)—इस्लाम धर्म का आचार्य १६३
यद (अर०)—हाथ ७१
यमीन (अर०)—दाहिना १३५
यरक़ान (अर०)—पीलिया १५४
यसार (अर०)—बायाँ १३५
योम (अर०)—दिन ७६
रक्बह् (अर०)—परिधि, क्षेत्रफल १३८
रसूल (अर०)—ईश्वर का दूत २
रस्म (अर०)—नियम, विधान १५३
राद (अर०)—बिजली की कड़क १७४
रायत (अर०)—पताका ३२
रौग़न (अर०)—घी १७
लहन (अर०)—राग, तराना १८६
लिबास (अर०)—पोशाक ६६
लिवा (अर०)—ध्वजा ३२
लिसान (अर०)—जीभ ६८
लुक़्मह् (अर०)—ग्रास, कौर ४०
लूलू (अर०)—मोती १६६
लैल (अर०)—रात ३६, अँधेरी रात ८६
वग़ा (अर०)—युद्ध १४३
वज़न (अर०)—तौल १२७
वबा (अर०)—छूत के रोग ८
वाज़ (अर०)—धर्मोपदेश ८६
वालिद (अर०)—पिता १२
वाहिद (अर०)—एक १
बिरजीस (अर०)—बृहस्पति (ग्रह) ११८
शजर (अर०)—पेड़ ६८
शमीम (अर०)—सुगंध १३२
शराब (अर०)—मदिरा ३१
शहम (अर०)—चरबी १६
शह्र (अर०)—मास १६३
शुमाल (अर०)—उत्तर दिशा १२६

सदफ़ (अर०)—सीपी ६३
सबलत (अर०)—मूंछ ५०
सबील (अर०)—मार्ग, रास्ता ४
समसाम (अर०)—तलवार १६
सहबा (अर०)—लाल रंग की मदिरा ३१
सहम (अर०)—तीर १५२
सहाब (अर०)—बादल १६७
साअत (अर०)—ढाई घड़ी का समय, समय, घड़ी १६३
सारिक़ (अर०)—चोर ७
सावह् (अर०)—एक पक्षी, ममोला १३
साहब (अर०)—रखवाला १६३
सुतूर (अर०)—बैल, चौपाया ६४
सुबह (अर०)—प्रातः ६८
सुरूर (अर०)—हर्ष, आनंद १५
सैल (अर०)—बाढ़, सैलाब १६७
सौर (अर०)—बैल ६४
हकीम (अर०)—वैद्य ८५
हबीब (अर०)—प्यारा १६१
हब्बेकुतन (अर०)—बिनौला ५५
हमाइल (अर०)—गले का हार १६
हया (अर०)—लज्जा १८५
हय्यी (अर०)—जीवित ६१
हलैलह् (अर०)—हड़, हर्रे १४७
हल्क़ (अर०)—गला ८४
हशम (अर०)—नौकर-चाकर १४८
हामह् (अर०)—माथा ४५
हासिल (अर०)—राजस्व १८५
हिज़ब्र (अर०)—बाघ १११
हिमार (अर०)—गधा १००
हिसार (अर०)—दुर्ग ५६
हिस्न (अर०)—दुर्ग ५६
हुजरह् (अर०)—कोठरी ५६
हुस्न (अर०)—सौन्दर्य १६४
हौज़ (अर०)—कुंड ३२

तुर्की शब्द

कज़ग़ान (तु०)—कड़ाही २३
क़ालीन (तु०)—ग़लीचा १७५
खच्चर (तु०)—घोड़े और गदहे से जन्मा एक चौपाया, १५८
तुपक (तु०)—तोप १०५
बोलीचा (तु०)—ग़लीचा १७५
सुराग़ (तु०)—चिह्न, खोज १५१

फ़ारसी शब्द

अंगुज़ह् (फ़ा०)—हींग १४७
अंगुश्तक (फ़ा०)—चुटकी १८६
अंगुश्तरी (फ़ा०)—अंगूठी १०१, १६८
अंगूर (फ़ा०)—द्राक्षा १२२
अंजाम (फ़ा०)—अंत, परिणाम १३४, १६२
अंजुमन (फ़ा०)—सभा १४६
अंबर्ज़ (फ़ा०)—सीख ८६

अंदेशह् (फ़ा०)—चिन्ता ३८
अख़्तर (फ़ा०)—तारा १६१
अदस (फ़ा०)—मसूर ४६
अफ़ज़ूं (फ़ा०)—बहुत ७१
अफ़शाँ (फ़ा०)—अनाज पछोरने का एक उपकरण, छाज ५३
अब्र (फ़ा०)—बादल १६७
अबू (फा०)—माँ ५०
अलमास (फ़ा०)—हीरा १६६
असबाब-ए-तरब (फ़ा०)—आनंद के साधन १६०
अस्तर (फ़ा०)—खच्चर १५८
अस्प (फ़ा०, तुलनीय स० अश्व)—घोड़ा १६, २४, ७४
आईन (फ़ा०)—नियम, विधान, कानून १५३
आईनह् (फा०)—दर्पण १०४
आज़र (फ़ा०)—आग ८५
आतशक (फा०)—जुगनू ८३
आतिश (फ़ा०)—आग १४
आफ़त (फा०)—कष्ट, विपत्ति ६१
आब (फ़ा०)—पानी १४
आबाद (फ़ा०)—बसा हुआ ८७
आरज़ू (फा०)—इच्छा ७१
आरोग़ (फ़ा०)—डकार १६१
आवंग (फ़ा०)—अलगनी, छीका १४५
आश्कार (फ़ा०)—स्पष्ट १४३
आसमाँ (फा०)—आकाश २६
आसिया (फ़ा०)—चक्की २६
आसेब (फ़ा०)—प्रेतबाधा ६१
आहन (फा०)—लोहा ४७
आहू (फ़ा०)—मृग १०१, १५७
आहूबचा (फ़ा०)—मृगशावक, हिरनौटा १५७
इमरोज़ (फ़ा०)—आज ५१
इमशब (फ़ा०)—आज की रात ६
इस्म-ए-अल्लाह (फ़ा०)—खुदा का नाम ३
उम्मीद (फ़ा०)—आशा २६
उस्तख़्वाँ (फ़ा०)—हड्डी ३०
उस्तरा (फ़ा०)—छूरा २८
औबिर (फ़ा०)—चाचा, ताऊ १७१
औरंग (फ़ा०)—सिंहासन २७
कंदू (फ़ा०)—कोठी २६
कज़दुम (फ़ा०)—बिच्छू ४०, १३१
क़नीज़क (फा०)—छोटी दासी १ ४
कफ़चह् (फ़ा०)—करछी २३
क़दू (फ़ा०)—लौकी, घिया। खुसरो के ज़माने में इसका अर्थ शायद खरबूजा था ७३
कबूद (फा०)—हलका नीला ६
कब्क (फा०)—चकोर १५४
कमान (फ़ा०)—धनुष १५२
करग (फा०) गैंडा १११
करगस (फा०) गिद्ध ६५
कलंद (फ़ा०)—खुर्पी हल का फाल ६६
कलाँ (फा०)—बड़ा ६६
कलाबह् (फा०)—सूत का लच्छा ११२, १८१
कशनीज़ (फ़ा०)—धनिया १४६
कश्ती (फ़ा०)—नाव १४६
क़हक़हह् (फा०)—अट्टहास १२६
काग़ज़ (फा०)—लेखन के लिए प्रयुक्त एक प्रसिद्ध वस्तु ६२

काबक (फ़ा०)—खोपड़ी ४५
क़ाफ़ूर (फ़ा०; अर० में भी यही शब्द है)—कपूर १५
कार (फ़ा०)—कार्य ११४
कारज़ार (फ़ा०)—युद्ध १४३
काल्बुद (फ़ा०)—शरीर ३७
काह (फ़ा०)—घास २२
किर्म-ए-शबताब (फ़ा०)—जुगनूं ९३
किलीद (फ़ा०)—चाभी, ताली ११३
कुजा (फ़ा०, तुलनीय सं० कुत्र)—कहाँ १०
कुलाग़ (फ़ा०)—कौवा १३
कुलबह् (फ़ा०)—हल १७७
कूचह् (फ़ा०)—गली १३३
कूर (फ़ा०)—अंधा ९९
कैक (फ़ा०)—पिस्सू १०६
कैवाँ (फ़ा०)—शनि ११८
कोदक (फ़ा०)—बालक १८७
कोस (फ़ा०)—नगाड़ा ४१
कोह (फ़ा०)—पहाड़ २१
ख़ंदह् (फ़ा०)—हँसी १२६
ख़मयाज़ह् (फ़ा०)—अँगड़ाई, जम्हाई १९०
ख़र (फ़ा०)—गदहा १००
ख़रगोश (फ़ा०)—खरहा १०१, १५८
ख़रपुज़: (फ़ा०)—खरबूजा ७२
ख़राब (फ़ा०)—निर्जन स्थान ८७
ख़ाक (फ़ा०)—धूल १४
ख़ान (फ़ा०)—आत्मा ३७
ख़ानह् (फ़ा०)—घर ७०
ख़ामह् (फ़ा०)—लेखनी ६२
ख़ार (फ़ा०)—कांटा १३३
ख़ास्तन (फ़ा०)—मांगना ११४
ख़ाहरज़ादह् (फ़ा०)—भांजा १७२
ख़िंग (फ़ा०)—सफ़ेद घोड़ा १५६
ख़ियाबाँ (फ़ा०)—क्यारी १७६
ख़िर्स (फ़ा०)—रीछ १५७
ख़िश्त (फ़ा०)—ईंट २२
ख़िश्म (फ़ा०)—क्रोध ६५
ख़ुदा (फ़ा०)—अल्ला, भगवान ३
ख़ुफ़्तह् (फ़ा०)—सुप्त, सोता है १०७
ख़ुर (फ़ा०)—सूर्य ११५
ख़ुरशीद (फ़ा०)—सूर्य ५
ख़ुरिश (फ़ा०)—भोजन ४२
ख़ुरूस (फ़ा०)—मुर्ग़ा ५८
ख़ुर्द (फ़ा०)—शिशु, छोटा १८७
ख़ुर्मा (फ़ा०)—खजूर १२२
ख़ुशख़बर (फ़ा०)—शुभ समाचार १८८
ख़ुशबू (फ़ा०)—सुगंध १३२
ख़ुसरो (फ़ा०)—बादशाह १९३
ख़ुसुर (फ़ा०)—ससुर १७८
ख़ुसुरपूरह् (फ़ा०)—ससुर का पुत्र अर्थात् साला १७९
ख़ू (फ़ा०)—प्रकृति ३७
ख़ूब (फ़ा०) सुन्दर ३३
ख़ूबी (फ़ा०)—सौन्दर्य १६४
ख़ोशह् (फ़ा०)—फली १८३
गंदुम (फ़ा०)—गेहूँ ४९
गज़ (फ़ा०)—दो हाथ की नाप १२७
गदा (फ़ा०)—भिक्षुक १९३
गर्म (फ़ा०)—ठंडे का विलोम २७
गर्मा (फ़ा०, तुलनीय सं० घर्म)—गर्मी, धूप ३
गल्ताँ (फ़ा०)—लेटता या लोटता हुआ १२५
गल्लह्फ़शाँ (फ़ा०)—छाज (अनाज साफ़ करने के लिए) ५३

गाव (फ़ा०)—बैल ६४
गिल (फ़ा०)—मिट्टी २२
ग़िलेवाज़ (फ़ा०)—चील २०
गिरीह (फ़ा०)—गाँठ ७५
ग़िर्बाल (फ़ा०)—छन्नी, चलनी २६
ग़ुंचह् (फ़ा०)—कली १३३
गुंजिश्क (फ़ा०)—चिड़िया, गौरैया १५५
गुनाह (फ़ा०)—पाप ६५
गुरस्नह् (फ़ा०)—भूखा ६६
गुर्ग (फ़ा०)—भेड़िया १११
गुर्बह् (फ़ा०)—बिल्ली २५, ११३
गुलिस्तान (फ़ा०)—उद्यान १७६
गुल (फ़ा०)—फूल १३३
गुलू (फ़ा०)—गला ८४
गुलूबंद (फ़ा०)—गले का आभूषण १६५
ग़ूक (फ़ा०)—मेंढक ६६
गुगिर्द (फ़ा०)—गंधक १५०
गेती (फ़ा०)—संसार ३५
गेहान (फ़ा०)—संसार ३५
ग़ोर (फ़ा०)—क़ब्र १२५
गोशवारह् (फ़ा०)—कान का एक आभूषण १६६
गौहर (फ़ा०)—मोती १६६
चराग़ (फ़ा०)—दीप ७२
चप (फ़ा०)—बायाँ १३५
चमन (फ़ा०) उद्यान १७६
चर्ख़[1] (फ़ा०)—आकाश २९
चर्ख़[2] (फ़ा०)—चर्खा १०२
चर्म (फ़ा०, तुलनीय सं० चर्म)—चमड़ा १६
चर्ब (फ़ा०)—चिकना ६१
चश्म (फ़ा०)—नेत्र १३७
चश्मक (फ़ा०)—आँख का इशारा १८८
चाकर (फ़ा०)—नौकर ४६
चारदुहुम (फ़ा०)—चौदहवीं १४०, १४१
चाह (फ़ा०)—कुआँ ४८
चीर (फ़ा०)—बलशाली, सख़्त २७
चोबदस्तह् (फ़ा०)—मूसल १८३
जंग (फ़ा०)—युद्ध १४३
जंगूलह् (फ़ा०)—घुँघरू १६८
ज़ख़्म (फ़ा०)—घाव १४६
ज़ग़न (फ़ा०)—चील २०
ज़न (फा०)—औरत ८
ज़फ़्त (फ़ा०)—मोटा ६१
ज़बाँ (फ़ा०)—जीभ ६८
ज़बीं (फ़ा०)—ललाट, भाग्य १३६
ज़मीं (फ़ा०)—ज़मीन २१
ज़र (फ़ा०)—सोना, स्वर्ण १८
ज़रीर (फ़ा०)—पीलिया १५४
ज़र्द (फा०)—पीला ६
ज़र्दचोब (फा०)—हल्दी १४६
जवानी (फ़ा०)—युवावस्था ६७
ज़हर (फ़ा०)—विष ३६
जहाँ (फ़ा०)—संसार ३५
जा (फ़ा०)—जगह ४५
जाईदह् (फ़ा०)—माँ ९८
ज़ाग़ (फ़ा०)—कौवा १३, १४
जान (फ़ा०)—प्राण, आत्मा ३७
जानू (फ़ा०)—घुटना १३८
जाम (फ़ा०)—प्याला १३४
जामह् (फ़ा०)—कपड़ा १८
ज़ारी (फ़ा०)—रोना १५१
जारोब (फ़ा०)—झाड़ू २८
ज़ाल (फ़ा०)—बूढ़ी १८०

जालह् (फ़ा०)—ओला १०६
ज़िंदह् (फा०)—जीवित ६१
जिगर (फा०)—यकृत १३६
ज़ियान(फ़ा०)—हानि १७६
ज़िरह्(फ़ा०)—कवच १२६
ज़िश्त (फ़ा०)—बुरा ३३
ज़ीरक (फ़ा०)—सयाना १०६
जुग़रात (फा०)—दही १७
ज़ुमुर्रुद (फा०)—पन्ना १६६
ज़ुर्रत (फा०)—ज्वार ४६
ज़ूलान (फा०)—बेड़ी १७३
ज़ेवर (फा०)—आभूषण १७०
ज़ोर (फा०)—बल ७
तख़्त (फा०)—सिंहासन, चौकी २७, १७३
तग (फा०)—भागदौड ८४
तगर्ग (फ़ा०)—ओला १०६
तगावर (फ़ा०)—तेज घोडा १५६
तदर्वह् (फा०) चकोर १५४
तन (फा०)—शरीर ३७
तपलर्ज़ह् (फा०) मलेरिया ४८
तबर (फा०)—कुल्हाड़ा ४७
तरन्नुम (फा०)—राग, तराना १८६
तरह् (फा०)—साग १४२
तराज़ू(फा०)—(तौलने के लिए प्रयुक्त) काँटा, तुला १२७
तर्स (फा० तुलनीय सं० त्रास)—भय ७०
तल्ख़ (फा०)—कड़वा ६०
तश्नह् (फ़ा०)—प्यासा ६६
ताज (फा०)—मुकुट ३४
ताबह् (फा०)—तवा २३
तार (फा०)—धागा, तार, ताना (कपड़े आदि के ताने-बाने में) ६
तार-औ-पूद (फा०)—ताना-बाना ६
ताल (फा०)—तालाब ३२
तिला (फ़ा०)—सोना १७०
तीर (फा०)—बाण १५२
तीर-ए-सक़्फ़ (फा०)—छत की कड़ी १०८
तुरा (फा०)—तुझे १०
तुर्श (फा०)—खट्टा ६०
तुर्ब (फा०)—मूली ५२
तूत (फा०)—शहतूत १४५
तेग़(फा०)—खड्ग १६
तेज़ (फ़ा०)—तीक्ष्ण ६१
तेशह् (फा०)—कुदाल ४७
तोसन (फ़ा०)—घोड़ा १५६
दंदाँ (फा०)—दाँत ५०
दफ़्तर (फा०)—पुस्तक-खंड १२६
दब्बह् (फा०)—चमडे का बर्तन १८
दम (फा०)—साँस १२७
दमामह् (फा०)—नगाड़ा ४१
दर (फा०)—दरवाज़ा ५६
दरख़्त (फा०)—पेड़ ६८
दरिया (फ़ा०)—समुद्र ४८
दरोग (फा०)—झूठ ६६
दरोबार (फा०)—द्वार ७४
दर्द (फा०)—पीड़ा १५२
दर्द-ए-सर (फा०)—सिर का दर्द ४४
दस्त (फा० तुलनीय सं० हस्त)—हाथ ७१
दस्तक (फा०)—ताली १८६
दस्तबिरिंजन (फा०)—हाथ का कंगन १६४
दहन (फा०)—मुख, मुँह ८४
दहलीज़(फा०)—देहली (दरवाज़े की) ७४
दाद (फा०)—दिया हुआ ६०, १७८

दामन (फ़ा०)—दैना ९०
दाना (फ़ा०)—बुद्धिमान ४२
दाम (फ़ा०)—जाल, फंदा ९, १८४
दार (ा०)—सूली ५२
दाश्त (फ़ा०)—रखा हुआ ९७
दास (फा०)—हँसिया ५२
दिरंग (फा०)—ढील, आलस्य १४५
दिल (फ़ा०)—हृदय ३८
दीदह् (फा०)—नेत्र १३७
दीवानह् (फा०)—पागल ३०
दुख़्तर (फा०)—बेटी १२
दुज़्द (फ़ा०)—चोर ७
दुर (फ़ा०)—मोती ६३
दुश्मन (फा०)—शत्रु ४१
दुहुल (फा०)—ढोल ८४
दूक (फ़ा०)—तकला, चर्ख़े का एक भाग १०३, १८२
दूद (फा०)—धुआँ ४६
देग (फ़ा०)—खाना पकाने का बर्तन विशेष २३
देगदाँ (फा०)—चूल्हा २६
देव (फा०)—भूत ११२
देह (फा०)—गाँव ३९
देहीम (फा०)—मुकुट ३४
दोग़ (फा०)—मट्ठा १७
दोश (फा० तुलनीय सं० दोषा)—बीती हुई या कल की रात ९
दोस्त (फ़ा०)—मित्र, यार २
नख़ुद (फा०)—चना ४९
नगीनह् (फा०)—अँगूठी आदि मे जड़ा जाने वाला नग १६८
नज़दीक (फ़ा०)—समीप ७८
नमक (फा०)—लवण ७९
नमूनह् (फा०)—बानगी १३२
नर्म (फ़ा०)—कोमल २७
नबीर (फा०)—पौत्र ७२
नवेद (फा०)—शुभ समाचार १८८
नशीं (फा०)—(तू) बैठ ८२
नाउमीद (फा०)—निराश २९
नाज़ (फा०)—गर्व, हाव-भाव ३०। ख़ालिकबारी मे इसे 'लाड़ला' का पर्याय माना गया है, जो ठीक नहीं है।
नादान (फ़ा०)—नासमझ १०९
नान (फा०)—रोटी ६४
नाफ (फा०)—नाभी १३८
नाबीना (फ़ा०)—अंधा १२५
नामह्बर (फ़ा०)—पत्रवाहक १०६
निकोई (फ़ा०)—भलाई ६७
निया (फा०)—मामा, नाना १७१
नीक (फा०)—सुन्दर ३३
नीलोफर (फा०)—नील कमल १४८
नुक़्रह् (फा०)—चाँदी १८
नेश (फा०)—डंक २७
नेज़ह् (फा०)—एक प्रकार की ध्वजा ३२
पंद (फा०)—सीख, उपदेश, १२, ८६
पंब (फा०)—रूई ६४
पंबह् (फा०)—कपास ६५
पंबह्दानह् (फा०)—बिनौला ५५
पनाह (फा०)—शरण १९३
पयामबर (फा०)—संदेशवाहक १०६
पलंग (फा०)—भेड़िया, चीता १११, १५६
पश्शह् (फ़ा०)—मच्छर ८१
पहलू (फा०)—पँसली १३९
पाँजदह् (फ़ा०)—पन्द्रहवाँ १४१
पाक (फ़ा०)—पवित्र ४८
पागलह् (फा०)—अन्य १८०

बीनी (फ़ा०)—नाक ४३
बीम (फ़ा०)—भय ७०
बीमार (फ़ा०)—मरीज १२४
बीरां (फ़ा०)—निर्जन स्थान ८७
बुज़ुर्ग (फा०)—बड़ा ६६
बुज़ुर्गी (फा०)—बडा-बूढ़ा होने का भाव ६७
बुरीदह् (फ़ा०)—कटा हुआ ३४
बुलबुल (फा०)— एक पक्षी १५५
बुवद (फा०)—हुआ २६
बू (फ़ा०)—गंध ६५, १३२
बूजिनह् (फ़ा०)—बन्दर १५७
बूम[1] (फा०)—भूमि, बंजर भूमि, ६५
बूम[2] (फा०)—उल्लू १७७
बेक़स (फा०)—(तू) खींच ८३
बेखुर (फा०)—(तू) खा ८२
बेगुफ़्तम (फा०)—मैंने कहा १०
बेचश (फा०)—(तू) चख ८३
बेज़न (फा०)—(तू) मार ८३
बेदर (फा०)—(तू) फाड़ ८३; (तू) जाग ८३, १०७
बेदह् (फा०)—(तू) दे ८२
बेनशीं (फ़ा०)—(तू) बैठ ११
बेनेह (फा०)—(तू) रख ८३
बेबीं (फ़ा०)—(तू) देख ८२
बेबीज (फा०)—छानिये १२३
बेमांदी (फ़ा)—लेटा, पड़ा रहा १०
बेया (फा०)—(तू) आ ११, ८२
बेरौ (फ़ा०)—(तू) जा ८२
बेवह् (फा०)—विधवा १८०
बेशह् (फा०)—जंगल १५८
बेसा (फा०)—(तू) पीस ८३
बैजह् (फा०)—अंडा १८७
बोस्तां (फा०)—उद्यान १७६
मगस (फा०)—मक्खी ८१
मग़ाक (फा०)—गड्ढा ४८
मय (फ़ा०)—मदिरा ३१
मरवारीद (फा०)—मोती ६२
मर्ग़ज़ार (फा०)—हरा मैदान १७५
मर्द (फा०)—पुरुष ८
मर्ज़ (फ़ा०)—भूमि, खेती की भूमि १७७
मर्दुमक (फा०)—आँख की पुतली १३७
मलख़ (फा०)—टिड्डी १५५
मह (फा०)—चाँद ५
मांदह् (फा०)—अवशिष्ट, शेष ६७
माकियां (फा०)—मुर्गी ५७
मादर (फा० तुलनीय स० मातृ, अ० Mother)—माँ ११, ८०
मार (फा०)—साँप २५
माह (फ़ा०)—चन्द्रमा, मास ८८, १५६, १६३
माही (फा०)—मछली ४०
मिस (फा०)—ताँबा ४७
मुज़्दह् (फा०)—खुशखबरी १८८
मुर्ग़ाबी (फा०)—जलकुक्कुट १५५
मुश्क (फा०)—कस्तूरी १५
मूश (फा० तुलनीय स० मूषक)—चूहा २२
मेग़ (फा०, तुलनीय स० मेघ)—बादल मेघ १६, १६८
मेश (फा०)—भेड़ १५८
मेहमान (फा०)—अतिथि ३८
मोरचह् (फा०)—चींटी १०६
याक़ूत (फा०)—लाल १६६
यार (फा०)—मित्र, दोस्त २
यूज़ (फा०)—चीता १५६

रंज (फा०)—दु ख, कष्ट, विपत्ति, ६१, १५२
रख्श (फा०)—घोडा १५६
रज़्म (फा०)—युद्ध १४३
राज़ (फा०)—रहस्य ६६
रान (फा०)—जघा ३०
रासू (फा०)—नेवला ४०
रास्त (फा०)—दाहिना १३५
रावक (फा०)—शराब ३१
राह (फा०)—मार्ग ४
रिश्तह् (फा०)—तागा २५
रीश (फा०)—दाढ़ी ५०
रुखसार (फ़ा०)—गाल ५१
रुबाह (फा०)—लोमड़ी ५७
रेग (फा०)—बालू ८१
रेसीदन (फा०)—कातना १८२
रेस्माँ (फा०)—डोरी, सूत ११२, १८२
रोई (फा०)—कासा, काँसे का बना हुआ ४७
रोज़ (फा०)—दिन ७६
रोदह् (फा०)—आँत ५०
लब (फा०)—होंठ १३८
लब-ए-आब (फा०)—कुड नदी ३२
लश्कर (फा०)—सेना, भीड़ १४८
शकर (फा०)—शक्कर ३६
शब (फा०)—रात ३६, ८६, १४१
शबगीर (फा०)—रात का पिछला पहर ३६
शबचरा (फा०)—काला घोडा १५६
शबचिराग़ (फा०)—एक प्रकार का लाल जो रात को चमकता है १६६
शमशीर (फा०)—तलवार १६
शर्म (फा०)—लाज ११४, १८५
शहर (फा०)—नगर १३३
शाख़ (फा०)—सींग १४७
शादी (फा०)—हर्ष, खुशी १५, ६७
शान (फा०)—कंघी ६२
शाम (फा०)—साँझ ६८
शाली (फा०; तुलनीय सं० शालि)—धान ४६
शाह (फा०)—बादशाह १६३
शिकम (फ़ा०)—पेट ८४
शिग़ाल (फा०)—गीदड १५७
शीर (फा०; तुलनीय सं० क्षीर)—दूध १७
शीरीन (फा०)—मीठा ६०, ७६
शुतुर (फ़ा०)—ऊँट ७४
शेर (फा०)—सिह १६, १५६
शोए (फा०)—पति ५३
शोर (फा०)—खारा ६१
शौहर (फा०)—पति ५३
संग (फा०)—पत्थर २४
संगचह् (फा०)—ओला १०६
सगरेज़ह (फा०)—ककड़ ८१
सख़ुन (फा०)—बोल ८४
सख़्त (फा०)—कठोर २७
सग (फा०)—कुत्ता ४०
सफ़ीद (फा०)—सफेद ५
सबद (फा०)—टोकरा २८
सब्ज़ (फा०)—हरा ६७
सब्ज़ी (फा०)—साग ६७
समंदर (फा०)—आग का कीड़ा ७८
सरगीं (फा०)—गोबर ६६
सरपोश (फा०)—ढक्कन ५४
सरीचह् (फा०)—एक पक्षी, ममोला १३
सर्द (फा०)—टंडा २७
साग़र (फा०)—प्याला १३४

सायह् (फ़ा०)—छाया ३
सिदा (फ़ा०)—निहाई १०५
सितद (फ़ा०)—लेना १७८
सिनाँ (फा०) —भाला ८०
सिपर (फ़ा०)— ढाल ३२
सिपहर (फा०)—आकाश २६
सीनह् (फा०)—सीना ४३
सीम (फ़ा०)—चाँदी, (चाँदी का सिक्का) १८
सीमाब (फा०)—पारा १५०
सीमुर्ग़ (फा०)—एक पौराणिक पक्षी १५८
सुपर्ज (फ़ा०)—तिल्ली, प्लीहा १३६
सुबू (फा०)—घड़ा १०८
सुबूचह् (फा०)—मटकी १०८
सुरुद (फा०)—तराना १८६
सुरोश (फा०)—देवदूत १३१
सुर्ख़ (फा०)—लाल ६७
सुर्मह् (फा०)—सुर्मा ४६
सेजदहुम (फा०)—तेरहवी १४१
सेर (फ़ा०)—तृप्त ६६
सेह (फा०)—तीन १४०
सोज़न (फा०)—सुई २५
स्याह (फा०)—काला ५
हावन (फा०)—ओखली ५६, १८३
हिन (फा०)—मेहदी १४२
हिर्बा (फ़ा०)—गिरगिट ४०
हीज (फ़ा०)—नपुंसक ५६
हुकहुक (फा०)—हिचकी १६०
हेज़ुम (फ़ा०)—ईधन, लकड़ी २२

हिन्दी शब्द

अँगड़ाई (हिं०)—बदन तोड़ना १६०
अँगूठी (हिं०)—मुदरी १०१, १६८
अंजन (हिं०)—सुर्मा ४६
अंडा (हिं०)—अण्डकोश, अडा १८७
अंतबात (हिं०)—अन्तिम बात १६२
अंधा (हिं०)—बिना आँख का १२५
अँधियारी रात (हिं०)—अंधेरी रात ८६
अकास (हिं०)—आकाश २६
अखरोट (हिं०)—एक मेवा ११०
अघाना (हिं०)—तृप्त ६६
अटकल (हिं०)—अनुमान १३२
अटारी (हिं०)—अट्टालिका ५६
अभरन (हिं०)—गहना १७०
अरजन (हिं०)—चेन (साँवा की जाति का एक अन्न) १७८
अहरन (हिं०)—निहाई १०५
अहिला (हिं०)—बाढ १६७
आँटी (हिं०)—सूत की लच्छी, अटी १८१
आँत (हिं०)—अंतड़ी ५०
आग (हिं०)—अग्नि १८, ८५
आगा (हिं०)—आगे का भाग १३०
आज (हिं०)—अद्य ५१
आजरात (हिं०)—आज की रात ६
आनंद (हिं०)—खुशी, १५
आभरन (हिं०)— आभूषण १०१
आरसी (हिं०)—शीशा १०४

आव (हिं०)—(तू) आ ११, ८२

आस (हिं०)—आशा २९

आहर (हिं०)—पानी आदि के संग्रह के लिए बनाया गया स्थान; (खुसरो में) स्पष्ट १४३

इस्तरी (हिं०)—स्त्री ८

इंट (हिं०)—ईंट (चिनाई की) २२

ईठ (हिं०, सं० इष्ट)—मित्र, दोस्त २

उजड़ा (हिं०)—निजर्न (स्थान) ८७

उजला (हिं०)—सफ़ेद ५

उठाओ (हिं०)—(तुम) उठाओ १२४

उठाव (हिं०)—उठाओ २४

उत्तर (हिं०)—उत्तर (दिशा) १२९

उधार (हिं०)—ऋण ६०

उन्मन (हिं०)—बादल १९

उल्लू (हिं०)—उल्लू (पक्षी) ९५

ऊँट (हिं०)—एक प्रसिद्ध जानवर ७४

ऊवंत (हिं०)—सूर्य ११५

एक (हिं०)—एक संख्या जो दो की आधी होती है। १

ऐंठन (हिं०)—मोटा (?) ६१

ओखली (हिं०)—उलूखल, जिसमे मूसल से कूटते हैं। ५६, १८३

ओला (हिं०)—बर्फ के छोटे टुकड़े जो ऊपर से जमीन पर गिरते है १०८

कंगन (हिं०)—कंकण १६४

कंवल (हिं०)—कमल १४८

कट (हिं०)—कटा हुआ ३४

कड़वा (हिं०)—कटु ६०

कड़ाही (हिं०)—कड़ाही २३

कड़ी (हिं०)—छत की शहतीर १०८

कतरनी (हिं०)—क़ैंची २८

कपार (हिं०)—ललाट, सिर, भाग्य ४५, १३६

कपास (हिं०)—रूई, उसका पौधा ९५

कपूर (हिं०)—कर्पूर १५

कप्पड़ (हिं०)—कपड़ा १८

कया (हिं०)—काया, शरीर ३७

करतार (हिं०)—भगवान, प्रारंभकर्ता

करनफूल (हिं०)—कर्णफूल १६६

कली (हिं०)—फूल का पूर्व रूप, कलिका १३३

कलेजा (हिं०)—शरीर का एक महत्व-पूर्ण भाग १३९

कसौटी (हिं०)—परख, कसने की बटी १६१

कस्तूरी (हिं०)—कस्तूरी, जो मृग की नाभी से निकलती है। १५

कस्सी (हिं०)—कुदाल, फावड़ा ६६

काँकर (हिं०)—कंकड़ ८१

काँच (हिं०)—कंटक १३३

काँवरी (हिं०)—पीलिया १५४

काग (हिं०)—कौवा ३४

कागद (हिं०)—कागज ६२

काज (हिं०)—कार्य ११४

काजल (हिं०)—धुएँ से बनी काली चीज ४६

काठी (हिं०)—काठ, लकड़ी। खालिक़-बारी मे 'काठ' शब्द ही शायद छंद की आवश्यकता के लिए 'काठी' कर दिया गया है। २१

कातना (हिं०)—सूत कातना १८२

काना (हिं०)—एक आँख का ९९

काल (हिं०)—कल ५१

काल (हिं०)—अकाल ८

काला (हिं०)—स्याह ५

काल्हरात (हिं०)—कल की रात ९

कासा (हिं०)—काँसा ४७

किकरी (हिं०)—कीकर के फूल-सा एक गहना, जिसे कान में पहनते हैं। १२१

कित (हिं०)—कहाँ १०

कियारी (हिं०)—क्यारी १७६

किल्ली (हिं०)—ताली, चाबी ११३

कीच (हिं०)—कीचड़ १६७

कुंदन (हिं०)—अच्छा सोना १७०

कुवाँ (हिं०)—कुआँ ४८

कुकड़ी (हिं०)—सूत का लच्छा ११२

कुत्ता (हिं०)—कुक्कुर ४०

कुदाल (हिं०)—कुदाली ६६

कुल्हाड़ा (हिं०)—बड़ी कुल्हाड़ी ४७

कूकड़ा (हिं०)—मुर्गा ५८

कूकड़ी (हिं०)—मुर्गी ५७

कूपा (हिं०)—चमड़े का बर्तन १८

केसर (हिं०)—जाफरान १४२

कोंवल (हिं०)—कोमल २७

कोठा (हिं०)—बड़ी कोठरी, अटारी ५९

कोठिया (हिं०)—कोठी २६

कौल (हिं०)—कौर ६०

कौवा (हिं०)—काक (एक पक्षी) १३

खजूर (हिं०)—खजूर का पेड़ या इसका फल १२२

खट्टा (हिं०)—खट्टे स्वाद का ६०

खरहा (हिं०)—खरगोश १०१

खांडा (हिं०)—खड्ग १९

खा (हिं०)—(तू) खा ८२

खाना (हिं०)—भोजन ४२

खार (हिं०)—खारा ६१

खींच (हिं०)—(तू) खींच ८३

खीरा (हिं०)—एक सब्जी, जिसे प्रायः कच्चे खाते है। ७३, १४५

खुदा का नाम (हिं०)—भगवान का नाम ३

खेती (हिं०)—काश्त १७७

खोज (हिं०)—(खोजने का) चिह्न १५१

खोपड़ी (हिं०)—सिर ४५

गंधक (हिं०)—एक पीला खनिज १५०

गड्ढा (हिं०)—गर्त ४८

गदहा (हिं०)—गधा १००

गली (हिं०)—सँकरी छोटी सड़क १३३

गहना (हिं०)—आभूषण १७०

गाँठ (हिं०)—ग्रंथि ७५

गाँव (हिं०)—ग्राम ३९

गाँसी (हिं०)—बाण का फलक १२६

गाल (हिं०)—कपोल ५१

गाला (हिं०)—धुनी हुई रूई १०३

गिरगिट (हिं०)—जतु विशेष ४०

गीदड़ (हिं०)—सियार १५७

गुड़ (हिं०)—ईख के रस से बनाया जाने वाला पदार्थ विशेष ३६

गेहूँ (हिं०)—गोधूम ४९

गेंडा (हिं०)—एक जानवर १११

गोबर (हिं०)—गोबर (पशु का) ६६

गोश्त (हिं०)—मांस १६

घड़ा (हिं०)—घट १०८

घडी (हिं०)—मटकी, छोटा घड़ा १००

घड़ी (हिं०)—समय, घडी १६३

घनघोर गरज (हिं०)—घनघोर आवाज, कड़क १७४

घर (हिं०)—मकान ७०

घाव (हिं०)—व्रण १४९

घास (हिं०)—दूब २२

घी (हिं०)—घृत १७

घुंघरू (हिं०)—बजने वाला एक जेवर १६८

घोड़ा (हिं०)—अश्व १६, २४, ४७
चंद्रग्रहन (हिं०)—चंद्रग्रहण १६२
चचा (हिं०)—चाचा १३९
चना (हिं०)—एक प्रसिद्ध अन्न ४९
चपनी (हिं०)—(हाँडी का) ढक्कन ५४
चमकना (हिं०)—(कीड़ा) जुगनू ९३
चमड़ा (हिं०)—चाम, चर्म १६
चरपर (हिं०)—चरपरा, तेज ६१
चर्ख़ह् (फा०)—चर्ख़ा १८०
चांदनी (फा०)—चन्द्रिका १४१
चाकरी (फ़ा०)—नौकरी, सेवा १०४
चाकी (हिं०)—चक्की २६
चाख (हिं०)—(तू) चख ८३
चालनी (हिं०)—चलनी, छन्नी २६
चाव (हिं०)—चाह ७१
चिड़िया (हिं०)—पक्षी १५५
चींटी (हिं०)—एक प्रसिद्ध कीड़ा १०६
चीकन (हिं०)—चिकना ६१
चीतमा (हिं०)—चिता ३८
चीतल (हिं०)—चाँदी का एक सिक्का, चाँदी १८
चीता (हिं०)—एक हिंसक जानवर १११, १५६
चीलह (हिं०)—चील २०
चुटकी (हिं०)—(उँगलियों की) चुटकी १८९
चूची (हिं०)—छाती, चूँची ४३
चूड़ा (हिं०)—एक ज़ेवर १६७
चूल्हा (हिं०)—(खाना पकाने की) भट्ठी २६
चूहा (हिं०)—मूस २५
चेना (हिं०)—चेन, प्रियंगु १७८
चेरा (हिं०)—नौकर ४६
चेरी (हिं०)—दासी १८४
चैन (हिं०)—आराम १३७
चोर (हिं०)—चोरी करने वाला ७
चौदही (हिं०)—चौदहवीं १४१
छांव (हिं०)—छाया ३
छाती (हिं०)—सीना ४३
छींक (हिं०)—छीकना १९१
छाज (हिं०)—सूप ५३
छानिये (हिं०)—छान दीजिए १२३
छींका (हिं०)—छीका १४५
छुरा (हिं०)—उस्तरा २८
जंगल (हिं०)—बन १५९
जग (हिं०)—संसार ३५
जड़ाऊ (हिं०)—जड़ा हुआ १७०
जमाई (हिं०)—जम्हाई १९०
जलकुकड़ (हिं०)—जलकुक्कुट १५५
जाँघ (हिं०)—जंघा ३०
जा (हिं०)—(तू) जा ८२
जागता (हिं०)—जगता १०७
जायफल (हिं०)—एक फल जो दवा के काम आता है। १२१
जाल (हिं०)—बड़ी जाली, फंदा ९७, १८४
जीत (हिं०)—विजय १५३
जीभ (हिं०)—जबान ६८
जीव (हिं०)—आत्मा ३७
जीवित (हिं०)—जीता हुआ ६१
जूड़ीताप (हिं०)—मलेरिया ४४
जूनरी (हिं०)—ज्वार ४९
जूलान (फ़ा०)—बेड़ी १८४
झुमका (हिं०)—कान का एक गहना १६८
झूठ (हिं०)—असत्य ६९
टप्पड़ (हिं०)—टाट (की गद्दी) १८

टाट (हिं०)—टाट, बोरा १८
टीरी (हिं०)—टिड्डी १५५
टोकरा (हिं०)—बड़ी टोकरी २८
ठाँव (हिं०)—स्थान ४५, ५३
डंक (हिं०)—(बिच्छू का) डंक २७
डकार (हिं०)—खाने-पीने के बाद संतुष्टिद्योतक ध्वनि १९१
डर (हिं०)—भय ७०
डीठ (हिं०)—दृष्टि ८४
डोई (हिं०)—करछी २३
डोल (हिं०)—पानी रखने का एक बर्तन १२७
ढांकना (हिं०)—ढँकना ११४
ढाकनी (हिं०)—ढक्कन ५४
ढाल (हिं०)—(वार रोकने की) ढाल ३०
ढील (हिं०)—शिथिल १४५
ढोल (हिं०)—एक बाजा ८४
तंबूल (हिं०)—पान १४२
तकला (हिं०)—चर्खे का एक भाग १०३, १८२
तनापा (हिं०)—जवानी ६७
तवा (हिं०)—(रोटी पकाने का) तवा २३
तांबा (हिं०)—ताम्र ४७
ताग (हिं०)—तागा, धागा २५
ताता (हिं०)—गर्म २७
तारा (हिं०)—सितारा १९१
ताना (हिं०)—कपड़े का ताना (ताने-बाने में) ६
ताला (हिं०)—(दरवाजा आदि में लगाने का) ताला ११३
ताली (हिं०)—दोनों हाथों की ताली १८९
तिल (हिं०)—तिल, शरीर पर का काला दाग़ २०
तिलड़ी (हिं०)—गले का तीन लड़ियों का हार १६५
तिल्ली (हिं०)—शरीर के भीतर का भाग विशेष १३९
तीतरा (हिं०)—तीतर। तीतर शब्द छंद के लिए 'तीतरा' कर दिया गया है। ३३
तीन (हिं०)—दो और एक १४१
तुज (हिं०)—तुझे १०
तुरंग (हिं०)—घोड़ा १५६
तूंबी (हिं०)—नाभी १३८
तेरहीं (हिं०)—तेरहवीं १४१
तौल (हिं०)—वजन १२७
दक्खिन (हिं०)—दक्षिण १२९
दरांती (हिं०)—हँसिया ५२
दही (हिं०)—दधि १७
दांत (हिं०)—दंत ५०
दाख (हिं०)—अंगूर १२२
दाढ़ी (हिं०)—गाल तथा ठोढी के बाल ५०
दादा (हिं०)—बाप का बाप ७२
दान (हिं०)—जो दे १२४
दाहिना (हिं०)—दायाँ १३५
दिन (हिं०)—दिवस ७९
दिया (हिं०)—दिया हुआ ९०
दिरोह (हिं०)—द्रोह ४७
दिवस (हिं०)—दिन ७९
दीया (हिं०)—दीपक ७२
दुखिया (हिं०)—बीमार १२४
दुवार (हिं०)—द्वार ५९
दूध (हिं०)—दुग्ध १७
दूर (हिं०)—दूर ७८

दे (हिं०)—(तू) दे ८२
देख (हिं०)—(तू) देख ८२
देखता (हिं०)—आँखवाला १२५
देन (हिं०)—देना, ऋण ९०
देना (हिं०)—दान ९०, १७९
दोस (हिं०)—दोष ६५
धनिया (हिं०)—एक मसाला १४६
धरती (हिं०)—पृथ्वी, जमीन २१, १७७
धरिया (हिं०)—धरा हुआ ९७
धाप (हिं०)—भाग-दौड़ ४४
धान (हिं०)—एक अन्न, जिससे चावल निकलता है ४९
धुआँ (हिं०)—धूम ५४
धूप (हिं०)—सूरज की रोशनी ३
धूल (हिं०)—धूल, गर्द १४
नगर (हिं०)—शहर १३३
नदी (हिं०)—सरिता ३२
नर (हिं०)—आदमी ५६
नाँव (हिं०)—नाम ३
नाक (हिं०)—नासिका ४३
नाग (हिं०)—साँप २५
नाती (हिं०)—पौत्र; बेटी का पुत्र ७२
नारियल (हिं०)—नारियल (फल) ११०
नाव (हिं०)—किश्ती १४९
नाहर (हिं०)—बाघ १११, १५६
निरास (हिं०)—निराशा २९
निस (हिं०)—निशा, रात ३६
नीड़ा (हिं०)—निकट ७८
नीरू (हिं०)—शक्ति, ताकत ७
नीला (हिं०)—गहुरा आसमानी ६
नेह (हिं०)—स्नेह ४१
नैन (हिं०)—नयन १३१
न्यौल (हिं०)—नेवला ४०
पंखा (हिं०)—पंखा (हवा करने का) ९६
पंद्रहीं (हिं०)—पंद्रहवी १४१
पछाँव (हिं०)—पश्चिम १२८
पछोर (हिं०)—(पछोरने के लिए प्रयुक्त) सूप ५३
पन्ना (हिं०)—एक बेशकीमत पत्थर १६९
परगट (हिं०)—प्रकट ४३
पहर (हिं०)—प्रहर १६३
पहाड़ (हिं०)—पर्वत २१
पाँव (हिं०)—पैर ७१
पाँसली (हिं०)—पँसली १३९
पाखर (हिं०)—पशुओं का कवच (युद्ध में घोड़ों-हाथियों के लिए) ८०
पाथर (हिं०)—पत्थर २४
पान (हिं०)—(खाने का) पान ४९, १४२
पानी (हिं०)—जल १४
पायल (हिं०)—पैर का जेवर विशेष १६४
पारा (हिं०)—पारद १५०
पाहुना (हिं०)—अतिथि ३८
पियारा (हिं०)—प्यारा १६१
पियासा (हिं०)—प्यासा ९९
पिस्सू (हिं०)—कीडा १०६
पीछे (हिं०)—पीछे का भाग १३०
पीपल (हिं०)—पिप्पली नामक एक काष्ट औषधि १२०
पीर (हिं०)—पीड़ा १५२
पीला (हिं०)—पीत रंग का ६
पीस (हिं०)—(तू) पीस ८३

भलाई (हिं०)—अच्छाई ६७
भांजा (हिं०)—बहिन का बेटा १७२
भाई (हिं०)—भ्राता ११
भाग (हिं०)—भाग्य १८६
भाला (हिं०)—एक प्रसिद्ध हथियार ८०
भिखारी (हिं०)—भिक्षुक १९३
भुजाली (हिं०)—भुजा में पहना जाने वाला एक आभूषण १६५
भूका (हिं०) भूखा १००
भूत (हिं०)—प्रेत ११२
भेड़ी (हिं०)—भेड़ १५८
भेढ़ा (हिं०)—भेड़िया १११
भेद (हिं०)—रहस्य ९९
भैंसा (हिं०)—भैंसा (पशु) १५८
भोला (हिं०)—सीधा, नासमझ १०९
भौ (हिं०)—भौं ५०
मंगल (हिं०)—मंगल ग्रह ११६, १५९
मछली (हिं०)—मत्स्य ४०
मद (हिं०)—शराब ३०
मनस (हिं०)—पति ५३
मनुष (हिं०)—मनुष्य, आदमी ८
ममोला (हिं०)—एक चिड़िया १३
मया (हिं०)—दया, ममता ३७
मरी (हिं०)—महामारी ८
मसूर (हिं०)—एक प्रसिद्ध दाल, मलका ४९
मही (हिं०)—मट्ठा १७
माँगना (हिं०)—माँगना (कोई वस्तु आदि) ११४
माँछर (हिं०)—मच्छर ८१
माई (हिं०)—माँ ११
माखी (हिं०)—मक्खी ८१
माटी (हिं०)—मिट्टी २२
माथा (हिं०)—मस्तक ४५
मानुस (हिं०)—मनुष्य ११०
मामूं (हिं०)—मामा १७१
मार (हिं०)—(तू) मार ८३
मारग (हिं०)—मार्ग, रास्ता ४
मास (हिं०)—महीना १६३
मिकराज (अर०)—कैंची २८
मित्तर (हिं०)—मित्र ४१
मिर्च (हिं०)—काली मिर्च १२०
मीठा (हिं०)—मिष्ठ ६०, ७९
मुंडा (मूलतः पंजाबी, किंतु यहाँ हिंदी मानकर दिया गया है)—लड़का १८७
मुकुट (हिं०)—ताज ३४
मुख (हिं०)—मुँह ८४
मूँगा (हिं०) एक रत्न १६६
मूँछ (हिं०)—नाक और होंठों के बीच के बाल ५०
मूली (हिं०)—मूली नाम का कंद ५२
मूसल (हिं०)—ओखली के साथ प्रयुक्त डंडा ५६, १८३
मेंहदी (हिं०)—एक पेड़ और उसकी पत्ती, हिना १४२
मेढकी (हिं०) मेढक ९६
मेंढ़ा (हिं०)—भेडा १५८
मेह (हिं०)—वर्षा ४१
मैं कहिया (हिं०)—मैंने कहा १०
मोती (हिं०)—एक रत्न ६३, १६६
मोर (हिं०)—मयूर ३३
मोल (हिं०) मूल्य ४६
रंग (हिं०)—(रंगने का) रंग १४४
रतन (हिं०)—रत्न, लाल १६९
रहटा (हिं०)—चर्खा १०२, १८०
रहिया (हिं०)—रहा, शेष, अवशिष्ट १०, ९७
राँड (हिं०)—विधवा १८०

राई (हिं०)—एक बहुत छोटे दाने का तेलहन ११६, १७८
राख (हिं०)—रख (रखा) ८३
राग (हिं०)— तराना, गीत १८६
रात (हिं०) —रजनी ३६, १४१
रीछ (हिं०)—भालू १५७
रीत (हिं०)—विधि, ढग १५२
रूई (हिं०)—(कपास से निकलने वाली) रूई ६४
रूख (हिं०)—पेड, वृक्ष ६८
रूपा (हिं०)—चाँदी १८
रैन (हिं०) —रात ३६
रोज (हिं०)—रोना १५१
रोटी (हिं०)—चपाती ६४
रोस (हिं०)—रोष, क्रोध ६५
लच्छमी(हिं०)—समृद्धि, सम्पत्ति १३६
लली (हिं०) —लडकी ५६
लाज (हिं०)—लज्जा ११४, १८५
लाड़ला (हिं०)—प्यारा ३०
लाल (हिं०)—लाल (रंग) ६७
लेटता (हिं०)—लेटता हुआ १२५
लेना (हिं०)—किसी से प्राप्त करना १७८
लोखड़ी (हिं०)—लोमडी ५७
लोन (हिं०)— नमक ७६
लोह (हिं०)—लोहा ४७
लौंग (हिं०)—कान में पहना जाने वाला लौंग जैसा एक गहना १२१; लवग १४४
संसार (हिं०)—जग ३५
सनीचर (हिं०)—शनिश्चर ११५
सपूत (हिं०)—सुपुत्र १७३
संमबर (हिं०)—समुद्र ४८
सयाना (हिं०)—चतुर १०६
सरन (हिं०)—शरण १६३
सरवर (हिं०)—सरोवर ३२
सवाद (हिं०)—स्वाद ४२
ससा (हिं०)—खरगोश १५८
ससि (हिं०) – चन्द्रमा ५
ससुर (हिं०)—पत्नी या पति का पिता १७६
सहज (हिं०) —जो जन्मजात हो, प्रकृत ३७
साँज (हिं०)—साँझ ६८
साग (हिं०)—शाक ६७, १४२
साला (हिं०)—पत्नी का भाई १७८
सिगार (हिं०)—शृंगार १६५
सिह'(हिं०)—शेर। यह शब्द खालिकबारी मे मात्रा की दृष्टि से सीह कर दिया गया है। १६
सिर की पीड़ा (हिं०)—सिर का दर्द ४४
सिरजनहार (हिं०)—सिरजनेवाला, विधाता १
सींग (हिं०)—शृंग १४७
सीख (हिं०)—शिक्षा, सलाह ८६
सीठा (हिं०)—नीरस ७६
सीतल (हिं०) ठंडा २७
सीपी (हिं०)—जल में होने वाला एक जीव या उसका खोल ६३
सुई (हिं०)—(सिलने की) सुई २५
सुक (हिं०)—शुक्र (तारा) ११८, १६०
सूत (हिं०)—धागा, डोरी ११२, १८२
सूरजगहन (हिं०)—सूर्यग्रहण १६२
सूली (हिं०)— जान से मारने के लिए जिस पर चढ़ाते हैं। ५२
सूहा (हिं०)—लाल ६७
सेज(हिं०)—शय्या १७५
सेवक (हिं०)—नौकर ४६

सेवा (हिं०)—नौकरी, चाकरी १०४
सैन (हिं०)—इशारा १८८
सोंठ (हिं०)—सूखा अदरक १२३, १४४
सोना (हिं०)—स्वर्ण १८, १७०
सोम (हिं०)—चाँद १५६
सोवता (हिं०)—सोता १०७
सोहनी (हिं०)—झाड़ू २८
स्याना (हिं०) बुद्धिमान् ४२
हंस (हिं०)—मराल १५४
हड़ (हिं०)—हरड़ १४७
हतोड़ (हिं०)—हथौड़ा १०५
हथियार (हिं०)—शस्त्र १४३
हरिया (हिं०)—हरा ६७
हरियाल (हिं०)—हरा-भरा मैदान १७५
हर्द (हिं०)—हल्दी १४६
हल (हिं०)—(जोतने का) हल १७७
हाँड़ी (हिं०)—खाना पकाने का मिट्टी का बर्तन २३
हाँसी (हिं०)—हँसी १२६
हाड़ (हिं०)—हड्डी ३०
हाथ (हिं०)—हस्त ७१
हाथी (हिं०)—हस्ती, करी १६
हाथीदाँत (हिं०)—हाथी का दाँत १४७
हान (हिं०)—हानि १७६
हार (हिं०)—गले का आभूषण १६५
हिचकी (हिं०)—पेट मे वायु के कारण मुंह से आनेवाली हिचकी ६०
हिया (हिं०)—हृदय ३८
हिरन (हिं०)—मृग १०१, १५७
हिलोर (हिं०)—हिल्लोल, लहर १७४
हींग (हिं०)—एक तेज गंध की चीज जो मसाले तथा दवा के रूप मे प्रयुक्त होती है। १४७
हीरा (हिं०)—एक प्रसिद्ध बेशकीमत पत्थर १६६
हेड़ा(हिं०, स० आखेट)—गोश्त, माँस, मूलतः शिकार का गोश्त १६
होंट (हिं०)—होठ १३८

सहायक साहित्

Dr ZAKIR HUSAIN LIBRARY
160009

खुसरो के कई फ़ारसी ग्रन्थों, बयान खुसर तज़किरे अरफ़ात, सीअरुल औलिया, कई पांडुलिपियों, मुफ़ीदए खा... आगरा और सूरजमल कमरुद्दीन खाँ पटना की खालिकबारी तथा, नफ़हातुल उन्स आदि के अतिरिक्त मुख्यतः निम्नांकित से सहायता ली गई है—

अमीर खुसरो	महम्मद वहीद मिर्ज़ा	इलाहाबाद, १९४९
अमीर खुसरो	अर्श मलसियानी	दिल्ली, १९७४
अमीर खुसरो और उनकी हिंदी रचनाएँ	भोलानाथ तिवारी	दिल्ली, १९७६
अमीर खुसरो और हमारा मुश्तरका कल्चर	के० के० खुल्लर	नई दिल्ली, १९८३
अमीर खुसरो देलहवी : हयात और शायरी	मुमताज़ हुसैन	नई दिल्ली, १९८२
आजकल (उर्दू मासिक)	का अमीर खुसरो नंबर	दिल्ली, १९७४
खालिकबारी	महमूद शीरानी	दिल्ली, १९४४
खालिकबारी	श्री राम शर्मा	काशी, सं० २०२१
खुसरो की हिंदी कविता	ब्रजरत्न दास	काशी, सं० १९७८
जवाहरे खुसरवी	'सालम'	अलीगढ़, १९१८
पंजाब में उर्दू	महमूद शीरानी	लखनऊ, १९६०
भाषा-चिंतन	भोलानाथ तिवारी	इलाहाबाद, १९७१
लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया	ग्रियर्सन	दिल्ली, १९७०
सबरस	वजही, सं० श्री राम शर्मा	१९५५
सवाने हयात अमीर खुसरो	मुहम्मद हबीब उर्दू अनुवाद हयातुल्ला अंसारी	इलाहाबाद, १९४८
सूफ़ी काव्य-संग्रह	परशुराम चतुर्वेदी	प्रयाग, सं० २०००
हयाते खुसरो	मारहरवी	आगरा, प्र. सं०
हयाते खुसरो	शिबली	दिल्ली, प्र. संस्करण
हिंदी भाषा	भोलानाथ तिवारी	इलाहाबाद, १९६६

□□